

॥ श्री ॥

महत् मुनि तिलोकरीखजी कृत

सामायिक प्रतिक्रमण.

सूत्रार्थ.

दश पञ्चकाणो तथा सज्झायो विगरे सहित

स्थानकरासी जैन भाडभोने भणवा वाचवा सारु

प्रथम आहृति करता सुधारो वरारो करीने

वपावी प्रसिद्ध करनार,

वालाज्राई वगनलाल शाह.

डे. कीकाभट्टी पोळ मु० अमदावाद

बीजी आहृति. नकल ११००

संवत् १९६८—सन् १९१२

किंमत बार आना

त्रणदरवाजा अमदावाद श्री खदमी प्रिन्टिंग प्रेसमां
शा मणीलाल जगरचंदे ठाप्युं

सूचना.

महारे त्यां जैनधर्मनां तमाम जातना पुस्तको
जेवा के श्रावक ज़ीमर्साह माणैक, श्री जैनधर्म प्रसा-
रक सज्ञा विगैरे प्रमिष्ठ कर्त्ताजनां तथा मारा पो-
ताना ठापेला तथा तमाम स्थळोए मळतां जैन
पुस्तको मोटा जथ्यामा तैयार मळे ठे छापत्रेरी सारु
तथा जैनशाळा सारु मगायनारने सारु कमीशन
आपवामा आवे ठे वधु विगत साथे मोट्टु सूचीपत्र
ठापेल तैयार ठे अर्धा आनानी टीकीट बीनी नीचेना
शीरनामाथी मगावो

ली. बाळाजाइ छगनलाल शाह.

जैन बुकसेलर ठे कीकानटनी पोळ.

मु अमदावाद.

(३)

प्रस्तावना.

आ सामायिक प्रतिक्रमण सूत्रनी अर्थ साथेना पुस्तकनी घणीज जरूर हती ने ते पुस्तक ठापवा वा-
वत घणा जैन धर्मीजाइउनी अमारा उपर उपराउ-
परी मागणी थवाथी, तेनी बे त्रण प्रतो एकठी करीने
तेमां वनतो सुधारो वधारो करीने मारवारु, मेवारु,
दक्षिण, पजाव आदिना स्थलोना दरेक स्थानकवासी
जैन जाइउने जेवी रीते उपयोगी थाय तेवी रीते
करवा अमोए अमाराथी वनती महेनते शुरू करीने
आ पुस्तकनी पहेली आवृत्ति सवत १९६७ नी सा-
लमां १०००) नकल ठपावेली परंतु लखवाने घणो
आनद थाय ठे के आपणा स्वधर्मीजाइउनी मददथी
आ नवीन आवृत्ति खपी गइ ठे ने आ बीजी आ-
वृत्ति ठापवानो शुभ प्रसंग मलेल ठे तो आ बीजी
आवृत्तिने पण सारो आश्रय मळशे तो मारो श्रम
सफल थशे

आ बीजी आवृत्तिमां प्रथम आवृत्ति करतां
सामायिक प्रतिक्रमण विगेरेना अर्थ घणाज विस्ता-
रथी आवेला ठे कारणके आ पुस्तक रतलाम देर्नीग

कोलेज तथा पुनाजी इंदरमल कावकीयाना आग्रहथी
महंतमुनि तिलोकरीजीना प्रतिक्रमण उपरथी तथा
अमारी प्रथम आदृष्टि साथे राखोने ठपावेल ठे

आ पुस्तकनी अदर सामायिक प्रतिक्रमण घ-
णज विस्तारथी अर्थ साथे तथा ते शिवाय दश
पञ्चस्काणो घणा खुलासा साथे, चत्तारीमगळ, चार
शरणा, आवकने चिंतववाना त्रण मनोर्थ, प्रतिक्रम-
णनी सज्जाय, जीवराशीनी सज्जाय, महावीरस्वामीनुं
चोढावीयु विगेरे विषयो आवेला ठे तेथी आ पुस्तक
अति उपयोगी अएल ठे

आ पुस्तक ठपाववा वदल रतलामवाला पु-
नाजी इंदरमलजी कावकीआए तथा जेठ जुहारम-
लजी सेसमलजी वीआवरवालाए बनती मदद करी
ठे तेथी तेमनो आ स्थळे घणोज आजार मानु दु.

ली. बालाजीश उगनलाल शाह.

जेन बुकसेलर ठे कीकान्टनी पोळ

मु अमदावाद.

१. १ अनुक्रमणिका.

| विषयनु नाम | पृष्ठ |
|---------------------------------|-------|
| नवकार मंत्र | १ |
| तिरुवुतारी पाटी | ३ |
| इरियावहीनी पाटी | ४ |
| तस्सउत्तरीनी पाटी | ८ |
| लोगस्सकी पाटी | १२ |
| सामायिक लेवानी पाटी | १६ |
| नमुथ्युणनी पाटी | १८ |
| सामायिक पारवानी पाटी | २२ |
| सामायिक विधि | २५ |
| प्रतिक्रमण अर्थ विधि सहित | २७ |
| इच्छामिणत्तेनी पाटी | २७ |
| उच्छामि ठामिनी पाटी | २८ |
| स्वमासमणारी पाटी | ३९ |
| तस्स सव्वसनी पाटी | ४४ |
| चत्तारी मगलकी पाटी | ४५ |
| आगमे तिविहे पन्नत्तेकी पाटी | ४८ |
| दसण समकित्तनी पाटी | ५० |
| पहेला वृत्तधी वारप्रत सूधी | ५२-८८ |
| अपल्लिम मरणांतिय सत्तेहणानो पाठ | ८९ |
| तस्स धम्मस्सनी पाटी | १०१ |
| पहेली वाटणा | १०२ |

| | |
|---|-----|
| चीजी वांङणा | १०४ |
| चीजी वांङणा | १०५ |
| चोथी वांङणा | १०६ |
| पांचमी वांङणा | १०८ |
| आयरिये चवउझाए | ११० |
| अडाइ द्वीपनो पाठ | ११२ |
| चोराशी लाख जीयायोनी | ११३ |
| नवामेमि सव्वजीव्वेनो पाठ | ११४ |
| मतिक्रमणनी बीधी | ११६ |
| गठीसहि मठीसहिनी पाठी | ११८ |
| प्रथम नम्भुकार सहिअनु पच्चल्लवाण | १२० |
| चीजु पोरिसि साट्ठुपोरिसिनु पच्चल्लवाण | १२४ |
| तीजु पूरिमइनु पच्चल्लवाण | १२७ |
| चोथु विगइ निविगइनु पच्चल्लवाण | १२९ |
| चोथु निविगइनु एकासण सहित पच्चल्लवाण | १३१ |
| पांचमु एकासणां त्रिआसणानु पच्चल्लवाण | १३२ |
| छट्ठु एउल्लठाणनु पच्चल्लवाण | १३५ |
| सातमु आविल्लनु पच्चल्लवाण | १३५ |
| आठमु चउविहार उपवासनु पच्चल्लवाण | १३८ |
| नवमु तिविहार उपवासनु पच्चल्लवाण | १३९ |
| दशमु रात्रे चउविहार तथा भवचरिमनु पच्चल्लवाण | १४१ |
| गहसहियं मुहसहियादी अभिग्रहनु पच्चल्लवाण | १४२ |
| अउद् नियम धारनारने देसावगासिरुनु पच्चल्लवाण | १४२ |

| | |
|-----------------------------|-----|
| श्री चत्तारी मंगलं | १४४ |
| चार श्ररणां | १४५ |
| श्रावकने चिंतववाना ऋण मनोरथ | १४७ |
| प्रतिक्रमणनी सज्ञाय | १५१ |
| जीवराशीनी सज्ञाय | १५२ |
| उपदेशक पद | १५७ |
| उपदेशी पद बीजु | १५८ |
| महावीरस्वामीर्तु चोदालीयु | १५९ |
| गौतमस्वामीनी सज्ञाय | १६७ |
| महावीरस्वामीनो छद | १६८ |



नीचेनां पुस्तको अवश्य खरीद करने लायकहै.
देवनागरी लिपिमां उपेक्षा पुस्तको.

| नाम | रु. आ. | नाम | रु. आ. |
|-------------------------------|--------|------------------------------|--------|
| उत्तराभ्ययन सूत्र पाकुपुठ ६-८ | | जबुदीपनो नकशो | ० ६ |
| ” पाटलीवालु ६-० | | ज्ञानवाजी | ०-६ |
| आचारग सूत्र मुळ साये | | श्री सिद्धान्तसार | ३-० |
| भाषांतर ४-० | | श्री सघपट्टरु | २ ८ |
| उत्तराभ्ययन सूत्र मुळ १-४ | | श्री वर्धमानदेशनाभाषांतर २-८ | |
| दशवैकालीरु सूत्र २-४ | | श्री सामायिक मतीक्रमणसू ०-८ | |
| आवृत्ती त्रीजी | | श्री महावीर स्तुति ०-४ | |
| जैन स्तुति आवृत्तीत्रीजी ० ३॥ | | श्री ब्रह्मदालोयणा ०-२॥ | |
| नीत्यनीयमरी पोथी ० २ | | श्री सामायिक मतिक्रमण ०-२ | |
| नारकीना चीत्रनी मोट्टीयुक्त ० | | रात्रीभोजन परिहाररुस ० ३ | |
| ” नानी बुक ० ८ | | अजनासतीना रास ० २ | |
| दर्शन चोवीशी रगीन ०-५ | | देरकीनाग्वटत्रपूत्रनोरास ० २ | |
| वैराग्योपदेश पोथी ०-२॥ | | श्री रुपजमभा ० ५ | |
| पचपदानु पूर्वि ०-१ | | वारप्रतनी टीप ०-२ | |
| सामायिक सूत्रनेआनुपूर्वि ० ०॥ | | चदराजानोरासचीत्र सहित ४-० | |
| १०० ना रु. २) | | अदीदीपनो नकशो ०-६ | |

उपरनां पुस्तको शिवाय तमाम जातनां जैन पुस्तको मोटा जग्यामां
नीचेना शीरनामे मलशे अर्धोभ्रानानी टीकी वीडो ६४ पानानुं
मोट्ट सूचीपन मंगावो.

ली- वालाजाइ उगनलाल शाह.

जैन बुकसेलर ठे कीकामदनी पोळ—अमदावाद.

॥ श्री ॥

॥ श्री गौतमाय नमः ॥

॥ अथ श्री नवकारमंत्र प्रारम्भ ॥

॥ एमो अरिहंताणं, एमो सिद्धाणं, एमो आ
यरियाणं, एमो उवद्यायाण, एमो लोए सब
साहूणं ॥ एसो पंच एमुक्कारो; सब पावप्पणा
सणो ॥ मंगलाणं च सब्बेसिं, पढमं हवइ मंग
लं ॥ इति नमस्कार ॥ १ ॥

अर्थ -(अरिहंताण के०) अरि एटले कर्मरूप
शत्रु तेने हंताण एटले हणनार, अर्थात् जेणे चार
घनघाती कर्मरूप शत्रुनो नाश करथो अने जे चो
प्रीश अतिशयोयें करी शोन्नित तथा वाणीना पांत्रीश
गुणोयें करी विराजमान एहवा विहरमान श्रीअरि
हंतने महारो (एमो के०) नमस्कार हो (सिद्धाणं
के०) जेणें सकल कार्य साध्यां, अने जे आव

(२)

खपात्री, मोक्ष नगरे पढोता अने एकत्रीश गुणोंये
 करी सहित एवा श्रीसिद्ध जगज्जानने महारो (एमो
 के०) नमस्कार हो (आयरियाण के०) जे पोने पां
 च आचार पाले अने बीजाने पखाने ठत्रीश गुणें करी
 सहित एहवा श्रीआचार्यजीने महारो (एमो के०)
 नमस्कार हो (उग्रजायाण के०) जे शुद्ध मूत्राक्षर
 पोते जणें, अने बीजाने जणाने तथा पञ्चिंश गुणें क
 री सहित एहवा श्री उपाध्यायजीने महारो (एमो
 के०) नमस्कार हो (लोए के०) अढीछीपरूप म
 नुष्य लोकने त्रिपे, (सबसाहूण के०) थिविर कटपा
 दिक जेदोगाला सर्व साधु जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र
 अने तपना साधनार तथा जे सत्तात्रीश गुणें करीने
 सहित ठे तेमने महारो (एमो के०) नमस्कार हो
 (एसो के०) ए जे अरिहतादिक सधधी, (पचण
 मुक्कारो के०) पाच प्रकारनो नमस्कार ठे ते केहवो
 ठे ? तो के (सबपाव के०) ज्ञानावरणादिक सर्व
 पाप तेहनो, (प्पणासणो के०) प्रकर्षे करी विनाश
 नो करणहार ठे वली ते केहवो ठे ? तो के (मग

(३)

लाएंच सबेसिं के०) सर्वमंगलमांहे (पढमं के०) प्रथम
एटले मुख्य, (मंगल के०) मंगल (हवइ के०) ठे ॥१॥

॥ अथ तिखुत्तारी पाटी प्रारंभ ॥

॥ तिखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेमि वंदा
मि णमंसामि सकारेमि सम्माणेमि कद्धाणं मं
गलं देवयं चेइयं पज्जवासामि मत्थएण वंदामि
॥ १ ॥ इति ॥ १ ॥

अर्थ -(तिखुत्तो के०) त्रण वार (आया-
हिण के०) आदक्षिणत एटले जिमणापासा थकी
प्रारंभीने, (पयाहिणं करेमि के०) प्रदक्षिणा प्रत्ये
करुं तुं, (वंदामि के०) वाडु तुं पगे लागुं तुं,
(नमसामि के०) मस्तक नमामीने नमस्कार करुं
तुं, (सकारेमि के०) सत्कार दउं तुं, (सम्माणेमि
के०) सन्मान दउं तुं, (कद्धाणं के०) कध्याणकारी,
(मंगल के०) मंगलकारी, (देवय के०) धर्मदेव
समान, (चेइय के०) ठकायका जीवने सुखदायक
एवा ज्ञानवंत प्रत्ये (पज्जवासामि के०) पर्युपासु

(४)

हुं एटले मन वचन कायायें करीने सेवा करुं तुं.
(मन्त्रण वदामि के०) मन्त्रकें करी याहुं तुं ॥१॥
इति तिरुक्कतारो अर्थ ॥ २ ॥

॥ अथ इरियावहीनी पाटी प्रारब्ध ॥

॥ इष्ठाकारेण संदिसह जगवन् इरियावहियं
पन्निक्कमामि, इत्त इत्तामि, पन्निक्कमिउं इरियाव
हियाए, विरादण्णाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे,
वीयक्कमणे, हरियक्कमणे, उसा उत्तिंग, पणग
दग, मट्टीमक्कमा, संताणा सकमणे, जे मे जीवा
विराहिया, एगिंदिया, वेइंदिया, तेइंदिया, चउ
रिंदिया, पंचिंदिया, अन्निहया, वत्तिया, छेसि
या, संघाइया, सघट्टिया, परिया विया, किल्ला
मिया, उदविया, ठाणाउं छाणं संकामिया, जी
वियाउं विवराविया, तस्स मिन्नामि उक्कमं ॥१॥
इति ॥ ३ ॥

अर्थ -(इष्ठाकारेण के०) तुमारी इष्ठापूर्वक,
(संदिसह के०) आज्ञा करो तो, (जगवन् के०)

हे महाभाग्य ज्ञानवंत ! (इरियावहियं के०) चाल-
 वानो जे मार्ग तेमांहे थइ एवी जे जीववाधादिक
 सपापक्रिया तेथकी हुं (पम्किमामि के०) पम्किमुं
 निवर्त्तु ? इहां गुरु कहे, (पम्किमह के०) पम्किमो
 निवर्त्तो पाप टालो. तेवारें शिष्य कहे, (इमं के०)
 प्रमाण ठे, हुं पण (इमामि के०) इतुं तुं. जे (इरि-
 यावहियाए के०) गमन ठे प्रधान मुख्य जेसां एवो
 जे मार्ग तेने विपे थती एवी जे (विराहणाए के०)
 जतुठनी विराधना तेथकी (पम्किमिउं के०) प्रति-
 क्रमवाने निवर्त्तवाने बांनु तु. इवे जीवविराधना
 शाथकी थाय ? ते कहे ठे. (गमणागमणे के०)
 जाता ने आवतां, (पाण के०) प्राणीने (क्रमणे के०)
 पगे करी चांप्याथकी (वीय के०) बीजने (क्रमणे
 के०) पगे करी चाप्याथकी, (हरिय के०) नील
 र्णवाली वनस्पति तेने, (क्रमणे के०) पगे करी
 पवाथकी (उंसा के०) वार पंखे सूक्ष्म
 आकाशथकी पगे ते, (उत्तिंग के०) कीर्ण
 गरां, (पणग के०) पांच वर्गी नील

के०) पाणी, (मट्टी के०) काची साटी, (मक्कना के०) मर्कट एटले कोलियावमाना (संताणा के०) सतान, ए सर्वने (संकमणे के०) पगे करी पीड्याथकी अथवा मसदयाथकी, घणु शु कहुं ?) जे के० (जे कोइ, (मे के०) में) जीया के० (जीवो,) विराहिया के०) विराध्या होय दु.खमाहे पाट्या होय. ते कया जीवोने मे विराध्या दुखी कीधा होय ? तेना नाम कहे ठे. (एगिंदिया के०) जेहने शरीर रूप एकज इन्द्रिय होय ते पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायु, वनस्पतिना जीव, (वेइदिया के०) शरीर तथा मुख ए दोय इन्द्रियवाला जे शख, जीप, गंमोला, अलसीया, एहवा जेहने पग न होय ते, (तेइन्द्रिया के०) तीन इन्द्रियवाला ते जेने शरीर, मुख नाक होय ते, कुथुवा, जू, लीख, मांकर, कीनी प्रमुख जेहना मुख उपरे शिग होय ते (चउरिंदिया के०) चार इन्द्रियवाला ते जेने शरीर, मुख, नाक ने आस होय ते, माखी, मछर, मांस, बर्गिठी, जमरी, टीर, जे उरुनारा जीव जेने आठ पग, तथा मस्तकें शिग

होय ते, (पंचिन्द्रिया के०) पांच इंद्रियवाला जेने शरीर मुख, नाक, आंख्य अने कान होय, ते जल-चर, खेचर, ए सर्वतिर्यच जाणवा तथा मनुष्य, देव, नारकी, ए सर्व पंचेन्द्रिय जीव कहिये हवे ए सर्व जीवोने केवी रीते विराध्या होय ? तेना प्रकार कहे ठे. (अग्निहया के०) सामा आवतां हण्या, (व-त्तिया के०) एक ढगले करया तथा धूलें करी ढाम्या, (लेसिया के०) चूमिये घश्या तथा लगारेक मस ह्या (सघाश्या के०) माहोमांहे शरीरने मेलववे करी एकठा कीधा, (सघट्टिया के०) थोमो स्पर्श करवे करी दुहव्या. (परियाविया के०) समस्त प्रकारे परिताप पमाक्या, पीक्या, (किलामिया के०) गाढी किलामणा उपजावीने मारया नही, पण मृत प्राय कीधा, (उट्टविया के०) त्रास पमाकीने हाखी चाली शके नही एहवा कीधा, (ठाणाउ के०) एक स्थानकथकी उपामीने (छाणं के०) बीजे ठेकाणे (संक्रामिया के०) संक्रमाव्या मूक्या, (जीवियाउ के०) जीवित थकी, (विवरोविया के०) चूकाव्या मारया

नाश कीधा. (तस्स के०) ते सवधी जे अतिचार ला
ग्या ते (दुक्कमं के०) पाप पड़ीये ते दुष्कृत (मिच्छामि
के०) मद्दाहं मिच्छा एट्खे निष्फल घाउं ॥३॥

॥ अथ तस्स उत्तरीनी पाटी प्राग्ग्नः ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेण, पायच्चित्तकरणेण,
विसोद्विकरणेण, विसङ्खीकरणेण, पावाणं कम्मा
णं, निग्वायणछाए, ठामि काउस्सग्गं, अन्नत्त
उससिएणं, निससिएण, खासिएणं, वीएणं,
जंजाइएणं, उहुएण, वायनिसग्गेणं, जमलिए,
पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं
खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं, एवमा
इएहि, आगारंहिं, अजग्गो, अविरादिउ, हुज्जा
मेकाउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, जगवंताणं,
नद्धकारेण, न पारेमि, तावकायं, ठाणेणं, मोणे
णं, जाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥ इति॥४॥

अर्थ — (तस्स के०) ते पापनीज बली विशेष

(९)

शुद्धिने अर्थे जे कांइ आगल करवुं तेने उत्तरीकरण
 कह्यो एटले तेनेज (उत्तरीकरणे के०) विशेषे
 करी वली उपर शुद्ध करवुं अर्थात् जे अतिचारोनुं
 आलोचना प्रमुख पूर्वे कीधुं ठे, तेनी वली विशेष
 शुद्धिने अर्थे कार्योत्सर्ग करुं तुं ते कार्योत्सर्गतो
 (पायश्चित्तकरणे के०) शुद्ध प्रायश्चित्त ते पापनी
 आलोचना करवायकी होय ते प्रायश्चित्त पण (वि-
 सोदिकरणे के०) विशुद्धि, निर्मलता करवे करीने
 होय, वली ते विशुद्धि पण विशदय होय, तो थाय
 माटे (विसह्यकरणे के०) मायाशदय नियाणा-
 शदय मिथ्यात्वशदय, ए तीन शदय टालवा थकी
 थाय, ए उत्तरीकरणादिक चार हेतुये करीने शु क-
 रवुं ठे? ते कहे ठे (पावाणंकम्माण के०) संसारहे-
 तुरूप जे पाप कर्म तेने (निग्घायणछाए के०) नि-
 र्घातन एटले उठेदन करवाने अर्थे (ठामि के०)
 कायाने एक ठामे करुं तु, (काउस्सग्ग के०) कायाने
 हलाववी नही ते रूप काउस्सग्गप्रत्ये कहं तुं हवे
 इहा काया हलाववी नही एवी प्रतिज्ञा करी ठे

भाटे शरीरनु काइ पण हालवु थवाथी प्रतिज्ञानो
 जंग थाय तेथी काउस्सगमा वार आगार मोकला
 राख्या ठे (अन्नव के०) उघासादिक जे आगारो
 कहेशे, ते आगारो वर्जीने बीजे स्थानके कायाने
 हलाववानो नियम कहं तु. तेनां नाम कहे ठे (उ-
 ससिएण के०) उंचो श्वास लेवाथी, (निससिएणके०)
 नीचो श्वास मूकवाथी (खासिएण के०) खासी
 आवे एटले खोखलो आव्या थकी, (ठीएण के०)
 ठोंक आया थकी, (जन्नाइएण के०) जांजली ते व-
 गासू लेवाथकी, (उमुएण के०) उरुकार आयाथ-
 कां, (वायनिसगोण के०) वायु निकलता थकां,
 (जमलिए के०) ब्रमरी चकी आववाथी,
 (पित्तमुघाए के०) पित्तरा कोपसू मूर्छा आया थकां,
 (सुहुमेहि के०) सूक्ष्म थोमोक, (अगसचालेहि के०)
 शरीर हलाववाथी, (सुहुमेहि के०) थोमो, (खेलस)
 चालेहि के०) श्लेष्म तथा मूखना थुकनु चालववुं
 करवाथकी, कफ गलवाथकी (सुहुमेहि के०) सूक्ष्म
 थोडी, (दिष्ठिसचालेहि के०) चक्षुर्दृष्टिनो सचार थ

वाथी एटले चहु इलाववा थकी, (एवमाइएहिं के०)
 ए आदि करीने इहा आदि पदे बीजा पण (आ-
 गारेहिं के०) आगार लेवा पने, ते लेता थकां महारो
 काउस्सग (अजगो के०) जांगे नही, खमि
 हुवे नही, (अविराहिउं के०) अविरावित अखमि
 हानी पहुँचे नही एवो (हुज के०) होजो, (मे के०)
 महारो, (काउस्सगो के०) कायस्थिर राखवी ते रूप
 व्यापार ते (जाव के०) ज्यासुधि, (अरिहंताण जग-
 वंताणके०) श्रीअरिहत जगवतने, (नमुवारेण के०)
 नमस्कार सहित (नपारेमि के०) पारू नही, ध्यान
 संपूर्ण न करू, (ताव के०) त्यां सुधी (कायं के०)
 महारी कायाने, शरीरने, (ठाणेण के०) एक ठि-
 काणे स्थिरपणे राखीने, (मोणेण के०) अचोलो
 रहीने, (जाणेण के०) एकाग्र जे ध्यान तेणे करीने,
 (अप्पाण के०) महारी जे काया ते प्रत्ये, [वोसिरा
 मि के०] हु वोसिराबुहुं तजु तु आ पाटी कहीने
 काउस्सग करवो इरियावहीनी पाटी मनमांहे
 कहेवी. पठी नवकार कहीने काउस्सग पारियें ॥४॥

॥ अथ लोगस्सकी पाटी लिख्यते ॥

॥ लोगस्स उज्जोयगरे, धम्म तिष्ठयरे जिणे ॥
 अरिहंते कित्तस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥
 उसन्न मजियं च वंदे, संजव मज्झिणदणं च सुम
 इं च ॥ पउमप्पहं सुपासं, जिण च चंदप्पहं वंदे
 ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस
 वासुपुज्जं च ॥ विमल मणंतं च जिण, धम्मं
 सतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुथु अरं च मल्लिं, वंदे
 मुणिसुव्वय नमिजिणं च ॥ वदामि रिठ्ठनेमिं,
 पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अज्झिथु
 आ, विहुय रयमला पहीण जरमरणा ॥ चउ
 वीसपि जिणवरा, तिष्ठयरा मे पसीयतु ॥ ५ ॥
 कित्तिय वदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा
 सिद्धा ॥ आरुग्ग वोहिलाज्जं, समाहिवर मुत्तमं
 दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अ

हियं पयासयरा ॥ सागरवर गंजोरा, सिद्धा
सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ इति ॥ ५ ॥

अर्थ.—(लोगस्स के०) पचास्तिकायात्मक लोकने
(उज्जोयगरे के०) उद्योतना करणहार, (धम्मतिष्ठ
यरे के०) धर्मरूप तीर्थना करनार एवा, (जिण्णके०)
राग छेपना जितनार जे (अरिहंत के०) श्री अरि
हंत तेनु, (कित्तउस्स के०) कीर्त्तन करीश तेमां (च
उवीसपि के०) रूपजादिक चोवीस परमेश्वरनु तो
नामांच्चारण पूर्वक कीर्त्तन करीश अने अपिशब्दयकी
अन्ये जिनोनु पण कीर्त्तन करीश ते कहेवा ठे ? तो
के (केवली के०) केवलज्ञानी ठे. ते तार्थकरनुं हुं
कीर्त्तन करीश ॥१॥ हवे ते चोवीस जिननां नाम कहे
ठे (उत्तन्न के०) श्री रूपन्नदेवस्वामी प्रत्ये (च के०)
वली (मजियं के०) श्रीअजितनाथप्रत्ये, (वदे के०)
वांदुलु, (सन्नव के०) श्रीसंज्ञवनाथ प्रत्ये, (मज्झिणद
णं के०) श्रीअग्निनंदननाथ प्रत्ये (च के०) वली (सु
मई के०) श्रीसुमतिनाथने (च के०) वली (पउमप्पहं
के०) श्री पद्मप्रन्नस्वामी प्रत्ये, (सुपास के०) श्री

(१४)

सुपार्श्वनाथजीने (जिण के०) रागछेपना जितनार,
 (च के०) वली (चदप्पह के०) श्रीचङ्गप्रज्ञजीने,
 (वंदे के०) वांदु तु ॥ २ ॥ (सुविहि के०) श्रीसुवि
 धिनाथजीने (च के०) वली एमनु वाजु नाम (-पुप्फ
 दत्त के०) श्री पुप्फदत्तजी ठे, ते प्रत्ये, (सीयल के०)
 श्रीशीतलनाथजीने, (सिजस के०) श्रीश्रेयासनाथजीने,
 (वासुपुज के०) श्रीवासुपुज्यस्वामि प्रत्ये, (च के०)
 वली, (विमल के०) श्रीविमलनाथजीने, (मणंतके०)
 श्रीअनतनाथजीने, (च के० वली, (जिण के०) राग
 छेपना जीतणार, एह्वा(धम्म के०) श्रीधर्मनाथजीने,
 (सति के०) श्रीसातिनाथजीने(च के०) वली, (वंदामि
 के०) वांदु तु ॥ ३ ॥ (कुथु के०) श्रीकुथुनाथजीने, (अरं
 के०) श्रीअरनाथजीने, (च के०) वली, (महि के०)
 श्रीमहिनाथजीने, (वदे के०) वांदु तु, (मुणिसुवयं
 के०) श्री मुनिसुवत्तस्वामी प्रत्ये, (नमिजिण के०)
 श्रीनमिजिनने, (च के०) वली, (वदामि के०)
 वांदु तु (रिष्टनेमि के०) श्री अरिष्टनेमिजी
 प्रत्ये, (पास के०) श्री पार्श्वनाथ स्वामी

प्रत्ये, (तद् के०) तथा, (वद्धमाणं के०)
 श्रीवर्द्धमानस्वामी प्रत्ये, हु वाडु तु, चकार पादपू
 र्णार्थ ठे ॥ ४ ॥ (एव के०) ए प्रकारे (मए के०)
 महारे जीवे जे, (अज्जिथुआ के०) नाम पूर्वक स्त
 वया, ते चौवीशे परमेश्वर केहवा ठे ? तो के (विहुय
 के०) टाट्या ठे, (रयमला के०) कर्मरूपी रज तथा
 मल जेणे एवा ठे वली (पहीण के०) अतिराये क
 रीने क्षय करया ठे, (जरमरणा के०) जरा तथा म
 रण जेणे एवा जे (चउवीसपि के०) चौवीश तीर्थ
 कर तथा अपि शब्दथकी बीजा पण तीर्थकर पूर्ववत्
 लेवा ते सर्व (जिणवरा के०) जिनवर, (तिष्ठयरा
 के०) तीर्थकर ते, (मे के०) सहारा उपर (पसोयं
 तु के०) प्रसन्न हो ॥ ५ ॥ (कित्तिथ के०) कीर्त्तित
 ठे (वंढिय के०) वदित ठे (महिया के०) पूज्य ठे
 एहवा, (जे के०) जे तीर्थकर, (ए के०) ए प्रत्यक्ष
 (लोगस्त के०) लोकने विषे (उत्तमा के०) उत्तम
 एहवा, (सिद्धा के०) सिद्ध थया एटले सिद्धि पा
 स्या निमित्तार्थ थया एवा ठे सिद्धजगत तमे मात

ने, (आरुग्ग के०) रोग रहित निर्मल एवो सिद्धपणुं
जाणवुं ते सिद्धपणु तो (बोहिस्साल के०) बोधवीज
जे श्रीजिनधर्मनी प्राप्ति थाय तेवारे प्राप्त थाय ठे
माटे श्रीजिनधर्मनी प्राप्तिनो लाल यवाने अर्थे (उ
त्तम के०) उत्कृष्ट ते उंची एहवी (समाहिस्वर के०)
प्रधान समाधि ते प्रत्ये (दिंतु के०) दिउं आपो ॥
६ ॥ (चदेसु के०) चडमात्री (निम्मलयर के०)
अत्यंत निर्मल, (आइवेसु के०) सूर्य समुदायथकी
पण, (अहिय के०) अधिक, (पयासयरा के०) प्र
काशना करणहार (सागरवर के०) प्रधान, ठेहो
स्वयञ्जुरमण नामा समुद्र तेनी पेर, (गज्जीरा के०)
गुणे करी गज्जीर, एहवा जे (सिद्धा के०) सिद्धो ते,
(सिद्धि के०) मुक्ति जे तेने, (मम के०) मुक्त प्र
त्ये, (दिसंतु के०) दिउं आपो ॥ ७ ॥ इति लोगस्स
पाठ समाप्त ॥ ५ ॥

॥ अथ सामाधिक खेवानी पाटी लिख्यते ॥

करेमि जंते सामाइय, सावज्जं जोगं पच्चस्का
मि, जाव नियमं, पज्जुवासामि, उविहं तिवि

हेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा,
कायसा, तस्स जंते, पम्भिकमामि, निंदामि, ग-
रिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥ इति ॥६॥

अर्थः—(जन्ते के०) हे पूज्य ! (सामाश्रयं के०)
समता परिणामरूप सामायिकने, (करेमि के०)
हुं करूं तु (सावज्ज के०) अवश्य जे पाप, तेणें करी
सहित एवा (जोग के०) मन वचन कायाना
योग, ते प्रत्ये (पच्चस्कामि के०) तु निषेध करूं तुं,
(जाव के०) ज्या सुधी, (नियमं के०) सामायिक
व्रतना नियमने (पङ्कगसामि के०) हुं सेवु, रहूं,
त्या सुधी, (पुविहं के०) दोषकरणसुं एटले क-
रणो, करावणो ए दोषप्रकारका जो सावध व्यापार
ते प्रत्ये (मणसा के०) मनें करी, (वयसा के०)
वचने करी, (कायसा के०) काययें करी ए, (ति-
विहेणं के०) तीन जोगसु (नकरेमि के०) तु करूं
नहि, (नकारवेमि के०) हुं 'जुजा' पासैं न करावूं,
(तस्स के०) ते सावधव्यापाररूप पापने, (जंते

के०) हे जगवत ! आपनी समीप हु (पक्कमामि
 के०) पक्कमु तुं, (निंदामि के०) हु आत्मानी
 साखें निदु तु, (गरिहामि के०) गुरुनी साखें हुं
 गर्हुं तु, एटखे विशेषें निंदु तुं, (अप्पाणं के०) मा-
 हरा आत्माने, ते दुष्ट क्रियाथकी (वोसिरामि के०)
 वोसिरावु तु, एटखे विशेषे करीने तजु तुं ॥१॥६॥

॥ अथ श्री नमुत्थुणनी पाटी लिख्यते ॥

नमुत्थुण, अरिहंताणं, जगवंताणं, आङ्ग-
 राणं, तिन्त्रयराणं, सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं
 पुरिससीहाण, पुरिसवरपुंफरीयाणं, पुरिसव-
 गंधहत्थीण, लोगुत्तमाणं, लोगनादाणं, लोग
 हियाणं, लोगपईयाण, लोगपज्जोयगराणं, अ-
 जयदयाणं, चक्रुदयाण, मग्गदयाणं, सरणद-
 याण, जीवदयाण, बोहिदयाण, धम्मदयाणं
 धम्मदेसियाण, धम्मनायगाण, धम्मसारहीणं
 धम्मवरचाउरंतचक्कवट्ठीणं, दिवोत्ताण, सरण
 गइपइठाण, अप्पमिहय वरणाण दंसणधरा

णं, विअट्ठउमाणं, जिणाणं, जियजयाणं, जि-
 न्नाण, तारयाणं, बुद्धाणं, वेदियणं, सुत्ताणं,
 मोयगाणं, सवन्नूण, सवदग्गिणं, सिद्धिगइ
 मरुअ मणंत मरुकय मवावाइ मरुअगिणि,
 सिद्धिगइ नामधेयं ठाण संघाणं, नमो जि-
 णाणं, जियजयाणं ॥१॥ इति ॥३॥

अर्थ - (नमुहुण के०)

नमस्कार हो अने एकार जे तेने नमस्कार हो
 माटे ठे, कोने नमस्कार हो, तो के (श्री देवान के०)
 श्री अरिहत देवने, (जगन्नाथ के०) जगन्नाथने,
 (आइगराण के०) धर्मना यात्रिणा (नि-
 न्नायराण के०) तीर्थना स्थापना (नि-
 श्रावक अने श्राविका, ए वां, वज्रिना तीर्थना
 स्थापनारने, (सयसबुद्धाण के०) गौतमी मेखे स
 म्यक्प्रकारें तत्त्वना जाण यथा (पुरिससंघाण के०)
 पुरुषमाहे उत्तम (पुरिससंघाण के०) पुट्ट
 सिद्धसमान, (पुरिसवरपुंजीया के०) पुट्ट

(२०)

(वर के०) प्रधान, (गंधद्वीप के०) गंधद्वीप
समान ठे, (लोयुत्तमाण के०) लोकमाहे उत्तम ठे,
(लोगनाहाण के०) लोकना नाथ ठे, (लोगहिया
ण के०) लोकना हितकारी ठे, (लोगपईवाण के०)
लोकने विषे प्रदीप समान ठे, (लोगपज्जोगराण
के०) लोकमाहे प्रकपे करी उद्योतना करणारठे. (अज्ज
यदयाणके०) अज्जयदाननादेणारठे, (चकुदयाण के०)
ज्ञानरूप चक्षुना देणारठे, (मग्गदयाण के०) मोक्षमा-
र्गना देणारठे, (सरणदयाणके०) शरणना देणारठे, (जी
वदयाणके०)सयमरूप जीवतरना देणारठे, (बोहिदया-
ण के०) समकित रूप बोधना देणार ठे, (वम्मदयाण
के०) धर्मना देणार ठे, (धम्मदेसियाण के०) ध-
र्मना उपदेशना देणार ठे, (धम्मनायगाण के०)
धर्मना नायक ठे, (धम्मसारहीण के०) धर्मरूप
रथना मारथि ठे, (धम्म के०) धर्मने विषे, (वर
के०) प्रधान (चाउरंत के०) चार गतिनो अत
करवा माटे, (चक्रवर्ती के०) चक्रवर्ती समान ठे,
(दिवोत्ताण के०) संसारसमुद्रमा द्वीप समान, दु खना

निवारण करणारहे, (सरणगश्पश्छाण के०) सरणग-
तिना स्थानक भूत शरणागत वत्सल ठे. (अप्प
किइय के०) नही इणाय एवुं, (वर के०) प्रधान,
(नाण के०) ज्ञान (दंसण के०) दर्शन तेने (ध-
राण के०) धरणार, (विअट्ट के०) गयु ठे, (उज-
साण के०) उजस्थपणुं एटले कर्मरूपी आवरण जने
एवा, (जिणाय के०) रागद्वेषने जीत्या ठे जणे,
(जावयाण के०) बीजाने राग द्वेषकी मूकावे ठे
(तिन्नाण के०) संसाररूपी समुद्र पोते तरया ठे
अन (तारयाण के०) बीजाने संसारसमुद्रयो-तार-
नार ठे (बुद्धाण के०) पोते तत्त्वज्ञानने समज्या ठे
(बोहियाण के०) बीजाने तत्त्वज्ञान समजावणार,
(मुत्ताण के०) पोतें चातुर्गतिक विपाकविचित्र कर्म
थकी मूकाणा ठे, तथा (सोयगाण के०) बीजा
जव्य प्राणीने कर्मथकी मूकावणार ठे, (सव्वन्तूण के०)
सर्वज्ञ ठे, (सव्वदरिसिण के०) सर्व पदार्थता देख-
णार ठे, (सिव के०) सर्व उपद्रव रहित एवा (म-
यल के०) अचल (मरुय के०) अहज रोग रहित

(मणंत के०) अनतज्ञानादि चतुष्टयें करी युक्त ठे
 माटे अनत ठे (मस्कय के०) सर्वकाल निश्चल
 (मवावाह के०) आवावाध एटले वाधा पीना र-
 हित (मपुणरावित्ति के०) जे गतिथकी फरी स-
 सारने विपे अवतार लेवो नथी एह्वी (सिद्धिगश्
 के०) सिद्धिगति एवु ठे (नामधेय के०) नाम जेनुं
 एवा (छाण के०) स्थानकने (सपत्ताण के०) पाम्या
 ठे. अर्थात् मोक्ष नगर प्रत्ये पाम्या ठे, एहवा अरि-
 हंत जणी (नमां के०) महारो नमस्कार हो ते जिन
 जगवान् केहवा ठे ? तो के (जिणाणं के०) कर्मरूपी
 शत्रुनें जीतणार, तथा (जियजयाण के०) इहलोका-
 दिक सात जयप्रत्ये जीतणार ठे ॥ ७ ॥

॥ अथ सामायिक पारवानी पाटी लिख्यते ॥

नवमा सामायिक व्रतना, पंच अइयारा, जा
 णियवा, न समायरियवा, तं जहा ते आलोउं,
 मण डप्पणिहाणे, वय डप्पणिहाणे, कायडु
 प्पाणिहाणे, सामाइयस्स अकरणयाए, सामा

इयस्स अणवुठ्ठियस्स करणयाइ, तस्स मि
 ञ्चामि डक्कमं. सामायिकने विषे दस मनना, द
 स वचनना, वार कायाना, ए वत्तीश दोष मां
 हेत्तो कोई दोष लाग्यो होय तो मिञ्चामि ड
 क्कमं. आहारसंज्ञा, जयसज्ञा, मिहुणसंज्ञा, प
 रिग्गहसंज्ञा, ए चार संज्ञामाहेत्तो कोई संज्ञा
 करी होय तो मिञ्चामि डक्कमं स्त्रीकथा, राज
 कथा, जत्तकथा, देगकथा, ए मांहेत्ती कोई
 कथा करी होय तो मिञ्चामि डक्कमं. सामायि
 क समकाएणं, फासियं, पात्तियं, सोहिय ति
 रियं, कित्तियं, आराहिय, आणाए अणुपात्ति
 यं, न जवइ तस्स मिञ्चामि डक्कमं॥१॥ इति॥७॥

अर्थ -नवमा सामायिक व्रतना (पच अश्या-
 रा के०) पाच अतिचार (जाणियव्वा के०) जाणवा
 योग्य, (नसमायरियव्वा के०) समाचरवा योग्य नहीं
 (तंजहा के०) ते हवे कहे ठे तेने (आलोउ के०)

आलोचुं वुं, (मण्डुप्पणिदाणे के०) मन मातुं वर्त्ता
 वुं होय, (वयडुप्पणिदाणे के०) वचन मातुं वर्त्ता
 वुं होय, (कायदुप्पणिदाणे के०) काया माठी प्रव
 र्त्तायी होय, (सामाडयस्स के०) सामायिकने (अ
 करणयाए के०) कीधुं के नही कीधु तेनी वरावर
 खवर न रही होय, (सामाडयस्स के०) सामा-
 यिकने (अणवुद्धियस्सकरणयाए के०) पूरी थया
 विना पारी होय, तो (तस्स के०) तेनु (दुक्क के०)
 पाप ते (मिथामि के०) मारु निष्कल थाउं (आ
 दारसंज्ञा के०) खावानी इहा थइ होय, (जयसंज्ञा
 के०) जयनी संज्ञा थइ होय (मिहणसंज्ञा के०)
 मैथुननी इहा करी होय, (परिग्गहमज्ञा के०) धन
 डवपनी इहा करी होय, ए चार संज्ञा माहेली कोइ
 संज्ञा करी होय तो ते दुष्कृत पाप (मिथामि के०)
 मारु निष्कल थाउं (सामायिकसमकाएण के०)
 सामायिक कायायें वरावर रीते (फासियं के०) स्पर्श
 करयुं फरस्यु, अगीकार करयुं (पाजिय के०) तेवुंज
 पाव्यु, (सोहिय के०) शोध्यु शुद्ध करयु (तिरियं

(१५)

के०) पार उतारियुं. (कित्तिय के०) कीर्त्युं (आरा-
हियं के०) आराध्युं (आणाए के०) वीतराग देवनी
आज्ञायें करी (अणुपालिय के०) पाळेखुं (नन्नवइ
के०) न होय (तस्स मिठामिदुक्कम के०) तेनुं दु-
ष्कृत जे मने लागेलु होय ते मारु मिथ्या हो ॥
इति सामायिक पारवानी पाटीनो अर्थ सपूर्ण ॥७॥

॥ अथ सामायिकविधि प्रारंभः ॥

॥ प्रथम श्री सोमंधर स्वामीजीनी आज्ञा
लेइने एक नवकार गुणीने “ इरियावहिनी ”
पाटी जणवी, पढी तस्स उत्तरीनी पाटी जणी
ने कानुस्मग्ग करवो, कानुस्मग्गमांहि “इरि-
यावहियाएथी” मांणीने “जीवियाजं ववरोविया
तस्स मिठामि दुक्कमं” सुधीनो पाठ मनमां
वोलीने एक नवकार मनमा कहोने कानुस्स
ग्ग पारवो पढी प्रगट “लोगस्सको” पाटी क
हीने सामायिकनी आज्ञा लेइने “करेमि जते
नी” पाटी “मं” सुधी कहोने आगल

मुहूर्त (घालणो हुवे तिके) घालणो, पठी
 “पञ्जुवासामि” थकी “अप्पाणं वोसिरामि”
 सुधी पाठ कहीने सामायिक पच्चरुवो. पठी
 मावो गोमो उजो करीने दोयवार “नमुत्थुणं”
 नी पाटी केहवी डजा नमुत्थुणंने चेहरे “ठा
 णं संपाविञ्च कामे नमो जिणाण” एस केहवुं.
 अने सामायिक पारती वेला “इरियावही, त
 स्स उत्तरी’ नी पाटी जणीने काउस्सग्ग कर
 वो, पठी काउस्सग्गमाहि इरियावहिनी पाटी
 कहीने एक नवकार गणीने काउस्सग्ग पार
 वो. पठी “लोगस्स जणी “नमुत्थुणं” दोय
 वार उपर लिख्या मुजव कहीने नवमा सामा
 यिकवनतो पाटी “अणुपालियं न जवइ तस्स
 मिहामि डक्कं” सुधी कहीने तीन नवकार ग
 णीने सामायिक पारवुं

॥ इति श्री सामायिक अर्थ विधि संपूर्ण. ॥

॥ अथ श्रीप्रतिक्रमण अर्थ विधिसहित प्रारजः ॥

प्रथम “चोविस स्तव ” कीजे उजो रहिने
 “तिरुक्तो” गुणीजें देव, गुरु तथा ब्रह्मा साधर्मिजा-
 इनी पन्तिक्रमण ठायवानी आझा लेइने “इष्टामिणं
 जंते” नी पाटी कहीजे ते लखीयें ठैयें

॥ अथ इष्टामिणजतेनी पाटी प्रारजः ॥

इष्टामिणं जंते, तुप्प्रेहि अजणुं नायसमाणे,
 देवसि पन्तिक्रमणं ठाएमि, देवसि नाण, दस
 ण, चारित्त, तप अतिचार चितवणार्थ करेमि
 काउस्सग्ग ॥ १ ॥ इति ॥

अर्थ—(इष्टामिणं के०) हु इष्टुं, (जंते के०)
 हे जगवन् ! (तुप्प्रेहि के०) तुमारी (अजणुनायस-
 माणे के०) आझा मार्गिने, (देवसि के०) दिवस स-
 वंधी, (पन्तिक्रमण के०) पापनु निवारण करवुं ते
 प्रत्ये, (ठाएमि के) ठाउठु (देवसि के०) दिवस
 संवधि, (नाण के०) ज्ञान, (दसण के०) दर्शन
 समकित, (चारित्त के०) कर्मरूपि शत्रुको नाशक-

रणार, ते रूप चारित्र तथा (तप के०) तपस्या ते
 संबंधि जे (अतिचार के०) व्रत ज्ञागवाने तैयार थवुं,
 ते रूप अतिचार द्वाग्यो होवे तेनी (चिंतवणार्थके०)
 चिंतवणा करवाने अर्थे, (काउस्सग के०) कायो
 रसर्ग प्रत्ये (करेमि के०) हु करु तु ॥ १ ॥

पठी "नवकार" कहीजें "तिरकुत्तारा" पाठसू
 पहिला थावश्यकनी आझा मागोने "करेमि जते,"
 की पाटी कहीजें पठी "इत्तामि ठामि" नी पाटी
 जणीजे ते लखीयें ठेयें.

अथ इत्तामि ठामिनी पाटी प्रारब्ध

इत्तामि ठामि काउस्सगं, जो मे देवसिउ,
 अइयारो कउ, काइउ, वाइउ, माणसिउ, उ
 स्सुत्तो, उम्मगो, अकप्पो, अकरणिज्जो, उ
 ज्जाउ, दुव्विचिंतिउ, अणायारो, अणिच्चियव्वो,
 असावग पाउग्गो, नाणे तद्द दंसणे, चरित्ता
 चरित्ते, सुए सामाइए, तिन्हं गुत्तीणं, चउन्हं
 कसायाणं, पंचन्हमणुवयाणं, तिन्हं गुणवया

एणं, चउन्हं सिखावयाणं, वारसविहस्स साव
ग धम्मस्स, जं खंमियं, जं विराहियं, तस्स
मिच्छामि दुक्कमं ॥ १ ॥

अर्थ - (ठामि के०) एक ठेकाणे रहिने, जे
(काउस्सगं के०) कायानी स्थिरता करवी तेने (इ
ठामि के०) हुं इह्हु लु (जो के०) जे, (मे के०)
महारा जीवे, (देवसिउ के०) दिवस संबधि, (अ
इयारो के०) अतिचार, (कउ के०) कीधो होय,
(काइउ के०) काया संबधी, (वाइउ के०) वचन
संबधि, (माणसिउ के०) मन.संबधि, (उस्सुत्तो के०)
सूत्र विरुद्ध परूपणा कीधा थकी उपनो जे (उम
ग्गो के०) उन्मार्ग एटले जिनमार्ग उल्लंघीने दुजो
मार्ग ते थकी नीपनो जे (अकप्पो के०) अकट्य
नीय एटले चरण करण व्यापारथकी रहितपणु तेना
थी उत्पन्न थया जे (अकरणिज्जो के०) करवायोग्य
नही एवा कार्य तेने करवे करी ए सर्व अतिचारनुं
स्वरूप कह्यु हवे मन संबधि अतिचारनुं स्वरूप कहे
वे. (दुज्जाउ के०) दुध्यान ते आर्त्त, रौद्र ध्यान ध्या

वबु ते माटेज (दुषिचितिठ के०) दुष्ट अशुभ कार्यनु
 मनमा चितवबु ते माटेज (अणायारो के०) अनाचार
 कहीये एटले जे थकी व्रतादिकनो सर्वथा जग था
 य जे माटे अनाचार आचरवा योग्य नही ते माटे
 ज (अणिष्ठियहो के०) इष्टवा योग्य नही, ते माटेज
 (असावगपाजगो के०) श्रावकने उचित नथी, ह्वे
 ए सर्व अतिचार शेने विषे लगाड्या होय ? ते कहे
 ठे. (नाणे के०) ज्ञानने विषे, (सह के०) तेमज, (दं
 सणे के०) समकित दर्शनने विषे, (चरित्ताचरित्ते के०)
 कांडएक चारित्रने कांडएक नहि चारित्र एह्वुं जे
 श्रावकनु चारित्र तेने विषे, (सुए के०) सूत्र सिद्धां-
 तने विषे, (सामाझए के०) समतारूप सामायिकने
 विषे, (तिन्हं गुत्तीणं के०) मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, का-
 यगुप्ति, ए तीन गुप्ति न पालवे करी (चलन्ह कसा-
 याण के०) क्रोध, मान, माया ने छोड, ए चार कषा-
 यने करवे करी (पचन्हमणुव्वयाणं के०) (१) प्राणा-
 तिपात, (२) मृयावाद, (३) अदत्तादान, (४) मैथुन,
 (५) परिग्रह, ए पांच प्रकारना अणुव्रतने विषे, (ति-

न्हं गुणव्याण के०) ठट्टो, सातमो ने आठमो, ए तीन प्रकारका गुणव्रत मांहेथी, (चउन्ह सिस्काव्याणके०) चार प्रकारका शिक्काव्रत, नवमो, दसमो, इग्यारमो, ने बारमो ए मांहेथी घणुं शुं कहियें परंतु (बारस-विहस्त के०) ए वारे प्रकारका व्रतरूप, (सावगधम्मस्त के०) श्रावक सवधि जे धर्म. तिणमांहेसू महारा जीवें, (जंखंमिय के०) जे देशथकी जग कीधुं. (जविराहियं के०) जे सर्वथकी जग कीधुं (तस्त के०) तेहनं (छुक्करु के०) पाप (मिठामि के०) महारु निप्फल थाउं ॥ २ ॥

पठी “तस्त उत्तरो” नी पाटी कहीने उन्नो रहिने काउस्तगग ठाईजें काउस्तगगमांहे, १४ ग्यानका, ५ समकितका, ६० वारा व्रतका, १५ कर्मादानका, ५ संखेहणाका, एवं “ एए अतिचार ” नी चितवणा कीजें ते अतिचार आ प्रमाणें -तपस्या, अशक्तपणा वगेरे कारणसू उन्नो रहिने काउस्तगग करणकी शक्ति न होय तो नीचें वेसीने काउस्तगग ठाईजें.

(३१)

१४ ग्यानका आगम तिविहे पन्नत्ते त जहा,
सुत्तागमे, अन्नागमे, तदुज्जयागमे, एहवा श्री ज्ञानने
विपे जे कोई अतिचार लाग्ना होय, ते आलाउ, जं
वाइछ वच्चाभेलिय, हीणस्कर, अच्चस्कर, पयहीणं,
विनयहीण, जोगहीण, घोसहीण, सुहुदिन्नं, दुहुपनि
द्विय, अकाले कउं सज्जाउं, काले न कउं सज्जाउं,
असज्जाए सज्जाय, सज्जाए न सज्जायं, जणतां,
गुणता, चितवता, अने विचारतां, ग्यान अने ग्या-
नवंतोनी आगातना कीनी होय ॥

(५ समकितना अतिचार) दंसण समकित ॥
परमच्च सथवो वा, सुदिट्ठ परमच्च सेवणावावि ॥ वा-
वन कुदसण व, ज्ञणा समत्त सद्वहणा ॥ १ ॥ एहवा
समकितना समणोवासयाण सम्मत्तस्स पंच अइ-
यारा पेयात्ता जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा
ते आलाउ, संका, कखा, वित्तिगिच्छा, परपासंभी पर-
संसा, परपासंभी सथुवो ॥

(६० व्रताका अतिचार) पहिला थूल प्राणा-
तिपात विरमण व्रतना पच अइयारा पेयात्ता जाणि-

यत्वा न समायस्यत्वा त जहा ते आलोउ बंधे
वहे ठविष्ठेए, अइजारे जत्तपाणबुष्ठेए ॥

बीजा थूल मृपावादविरमण व्रतना पंच अइ-
यारा जाणियवा न समायस्यत्वा तं जहा ते आलोउं,
सहस्साज्जकाणे, रहस्साज्जकाणे, सदारमतजेए,
मोसोवएसे, कूरुलेहकरणे ॥

त्रीजा थूलअदत्तादान विरमणव्रतना पंच अ-
इयारा जाणियवा न समायस्यत्वा त जहा ते
आलोउ, तेनाहमे, तक्करप्पजंगे, विरुद्धरज्जाइकमे, कू-
रुतोले, कूरुमाणे, तप्पभिरुवगववहारे ॥

चोथा थूल मेहुण विरमण व्रतना पंच अइ-
यारा जाणियवा न समायस्यत्वा तं जहा ते आलोउं,
इत्तरपरिग्गहियागमणे, अपरिग्गहियागमणे, अनग
कीना, परविवाहकरणे, कामजोगेसु तिवाज्जिलासे ॥

पांचमा थूल परिग्रह परिमाण विरमण व्रतना
पंच अइयारा जाणियवा न समायस्यत्वा त जहा ते
आलोउ खित्तवत्तुपमाणाइकमे, हिरण सुवणपमा-
णाइकमे धण धन्नप्पमाणाइकमे, डुपद चउपद पमा

णाश्कमे, कुत्रियपमाणाश्कमे ॥

उष्ठा दिशि विरमण व्रतना पंच थड्यारा जाणियवा न समायरियवा त जहा ते थालोउ, उद्ध-
दिसिपमाणाश्कमे, थहोदिसि पमाणाश्कमे, तिरिय
दिसि पमाणाश्कमे, गित्तबुद्धी, सयतरद्धा ॥

सातमा उवज्जोग परिज्जोग डुव्विहे पणत्ते तं
जहा, ज्ञोयणाउय, कम्मउय, ज्ञोयणाय समणोवा-
सयाण पच थड्यारा जाणियवा न समायरियवा तं
जहा ते थालोउं, सचित्ताहारे सचित्तपन्निवद्धाहारे,
थप्पोलसहिज्जस्कणया दुप्पोलसहिज्जस्कणया, तुष्णे-
सहिज्जस्कणया, कम्मउण समणोवासयाण पन्नरस
कम्मदाणाई, जाणियवा न समायरियवा त जहा ते
थालोउ

(१५ कर्मादानका) इगालकम्मे, वणकम्मे,
सामीकम्मे, ज्ञामीकम्मे, फामीकम्मे, दतवाणिजे,
केसवाणिजे, रसवाणिजे, लसकवाणिजे, मिसवाणिजे,
जनपिह्वणकम्मे, निह्वणकम्मे, दवग्गिदा वणया,
सरहहतलायपरिसोसणया, थसईजणपोसणया ॥

(३५)

आठमा अनर्थदरुविरमणव्रतना पच अश्यारा जाणियवा न समायरियवा त जहा ते आलोउं, कंदप्पे, कुकुइए, मोहरिए, सजुताहिगरणे, उवन्नोगपरिन्नोग अइरत्ते ॥

नवमा सामायिक व्रतना पच अश्यारा जाणियवा न समायरियवा त जहा ते आलोउं, मण्डुप्पणिहाणे, वयडुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे, सामाइयस्स अकरणियाए, सामाइयस्स अणवुठियस्स करणयाए ॥

दशमा देसावगासिक व्रतना पच अश्यारा जाणियवा न समायरियवा त जहा ते आलोउं, आणवणप्पउंगे, पेसवणप्पउंगे, सहाणुवाइ, रुवाणुवाइ, वहियापुग्गलपरकेवे ॥

अग्यारमा परिपूर्ण पोपध व्रतना पच अश्यारा जाणियवा न समायरियवा त जहा ते आलोउं, अप्पमिलेहिय दुप्पमिलेहिय सक्कासथारए, अप्पमज्जिय दुप्पमज्जिय सक्कासंथारए, अप्पमिलेहिय दुप्पमिलेहिय उच्चारपासवणजूमि, अप्पमज्जिय दुप्पमज्जिय

उच्चारपासवणजूमि, पोसहस्स, सम्म अणणुपालण्या

वारमा अतिथिसविजाग व्रतना पंच अइयारा
जाणियवा न समायरियवा त जहा ते आलोउं, स-
चित्त निस्केणिया, सचित्त पिहणिया, कालाडकम्मे.
परोवणसे मठरियाए ॥

५ सलेहणारा ॥ अपद्धिम मरणातिक सले-
हणा कुसणा आराहणाना पच अइयारा जाणियवा
न समायरिवा त जहा ते आलोउं, इहलोगाससप्प-
उंगे, परलोगाससप्पउंगे, जीवियाससप्पउंगे, मरणा-
संसप्पउंगे, कामजोगाससप्पउंगे, ॥

१० पापस्थानक १ प्राणातिपात, २ मृपावाद.
३ अदत्तादान, ४ मेथुन, ५ परिग्रह, ६ क्रोध, ७ मान,
८ माया, ९ लोभ, १० राग, ११ द्वेष, १२ कलह, १३
अज्जवारयान, १४ पैशुन्य, १५ परपरिवाद, १६ रति
अरति, १७ मायामोसो, १८ मिथ्यात्वदसणशत्य. एव
१० पापस्थानकमाहेलु जे कोइ पापस्थानक माहारे
जीवे, मने, वचने, कायाये करी, सेव्यु होय, सेवरा-
व्यु होय, सेवताप्रत्ये जलं जाण्यु होय.

(३७)

एम् “एए अतिचार, १७ पापस्थानक” काउ-
स्तगमां चितवी ॥ पठो “इष्टामिठामि”नी पाटी
‘जं विराहिय’ सुधी चितवी ‘नवकार’ जणीने का-
उस्तग पारीयें ॥ इति प्रथम ‘समायिक आव-
उयक’ सपूर्ण

विधि.-पठो ‘तिखुत्ता’नो पाठ कही दूजा
आवउयकनी आझा लेशने प्रगट एक ‘लोगस्त’नी
पाटी कहीजें ॥ इति छुजु ‘चउत्रिसठो’ आव-
उयक सपूर्ण

पठो तिखुत्तो गुणी त्रीजा आवउयकनी आझा
लेशने दोय वार “इष्टामिखमासमणा”नी पाटी क-
हीजें पाटीमाहे प्रथम जिहा ‘निसीहियाए’ शब्द
आवे तिहा उजा गोमा करी, हाथ जोमीने वेसीजे-
तथा ठ आवर्त्त करियें ते आ प्रमाणे.-प्रथम “अ-
होकायं काय ए शब्द उच्चारतां तोन आवर्त्त हुवे
वे, ते कहे वे.-दोनु हाथ लावा करो हाथनी दश
आंगुली जूमी-उपर लगावतां मुखसु “अ” अकार
कहेवो,

दश आंगुली आपणा

लगावतां “हो” अक्षर कहेवो, ए दोनुं अक्षर क-
 हेता १ पहेलो आवर्त्त हुवो, इणहीज रीतिसूं “का’
 ने “य” ए वे अक्षर उच्चारतां २ दुजो आवर्त्त हुवो
 तथा “का’ ने “य” ए वे अक्षर उच्चारतां ३ त्रीजो
 आवर्त्त हुवो पठी “जत्ता’ जे, जवणि ऊ, च, जे”
 ए शब्द उच्चारता ३ आवर्त्त हुवे ठे, ते कहे ठे -
 प्रथम “ज’ अक्षर मंदस्वरसू “त्ता’ अक्षर मध्य-
 मस्वरसूं, ने “जे’ अक्षर उच्चा स्वरसू उपरली री-
 तिसूं, मस्तकें हाथ लगावतां कहेवो एम तीन,
 अक्षर कहेता प्रथम आवर्त्त, तथा (ज) (व) (णि)
 ए तीन अक्षर त्रिविध स्वरसू उपर मुजब उच्चारता
 दुजो आवर्त्त तथा (ऊ) (च) (जे) ए पण, तीन अ-
 क्षर पूर्वली रीतें कहेता त्रीजो आवर्त्त होय, एव ठ
 आवर्त्त एक पाटी माहे थाय एवी वे पाटी कहीजे
 तेवारे चार आवर्त्त थाय तथा “ तित्तीसन्नयराए ”
 ए पाठ आवे तिहां पाठा उच्चारहीजें एव ए दोय
 वार “खमासमणा” री पाटी सपूर्ण कहीजें, ते पाटी
 दखीयें ठेयें

(३९)

अथ खमासमणारी पाटी प्रारम्भ.

इत्थामि, खमासमणो, वंदिजं, जाव णिजाए,
 निसीहियाए, अणु जाणह, मे, मिजग्गहं, नि-
 सीही, अद्दो, कायं, काय सफासं, खमणिज्जो,
 जे, किज्जामो, अप्प किलंताणं, बहु सुजेण, जे,
 दिवसो, वइकंतो, ज ता, जे, ज व णि ज्ञं, च,
 जे, खामेमि, खमासमणो, देवसियं, वइकमं,
 आवसियाए, पम्भिमामि, खमासमणाण,
 देवसियाए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं
 किचि मिच्चाए, मण्डुकमाए, वयदुक्कमाए, का-
 यडुक्कमाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोहाए,
 सब्बकालियाए, सब्बमिच्चोवयाराए, सब्बधम्मा
 इक्कमणाए, आसायणाए, जो, मे, देवसिजे अ-
 इयारो कउं, तरुस खमासमणो पम्भिमामि, नि-
 दामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि॥इति॥३॥

अर्थ -(खमासमणो के०) हे क्षमाश्रमण !

(जावणिकाए के०) जेणें करी कालक्षेप करीयें तेवी शक्तियें करी सहित एवी (निसीहियाए के०) प्राणातिपातादिकथी निवृत्तिरूप प्रयोजन ठे जेमां तेने नैपेधिकी तनु एटले शरीर कहीयें तेवा शरीरें करी तुमने (वट्टिउ के०) वादवाने (इमामि के०) हुं इतुं तु, वांतुं तु माटे (मिउगहं के०) मित अवग्रह एटले प्रमाण करेला मानात्रण हाथना अवग्रह माहे प्रवेश करवानी (मे के०) मुजने (अणुजाणह के०) अनुज्ञा आपो एटले आज्ञा आपो

पठी गिण्य (निसीहि के०) एक गुरुवदन रिना अन्य क्रिया रूप व्यापारने निपेधो ठे जेणे एवो उतो मर्यादा करेला अवग्रहमांहे पेसीने गुरु प्रत्यें कहे के तुमारा (अहोकाय के०) अध.प्रदेशनो वेहलो जाग जे चरण ते प्रत्यें (कायसफास के०) महारी काया संवधि हाथ अने मस्तकें करीने स्पशुं? एवी आज्ञा पामीने गुरुना चरणने स्पर्शी पठी उचो यइ मस्तके वेहाथ चनावी 'समणिको जे' इत्यादि पाठ कहे तेनो अर्थ लखीयें ठेयें


हे पूज्य ! तुमारा चरण स्पर्शतां जे कांइ (मे के०) महारे जीवें तुमने (किलामो के०) ग्लानि एटले पीमा उपजावी होय खेद उपजाव्यो होय ते (जे के०) तमोयें (खमणिज्जो के०) खमवा योग्य ठे एटलुं कहिने वली पण शिष्य, दिवससंवधि हेम कुशलनु स्वरूप पूज्यने पूठे, ते आवी रीतें.—

(बहुसुजेण के०) बहु शुजें करीने हेमकुशल समाधिजावें करीने (जे के०) तमारो (दिवसो के०) दिवस (वइकृतो के०) व्यतिक्रान्त थयो एटले वी-
त्यो ? तमे कहेवा ठो ? तो के (अल्पकिलंताण के०)
अल्पकिलामणावाला ठो एम शरीरसंवधि सुखशाता
पूठीने वली तप नियमादिक सबधी वार्त्ता पूठे, ते
आवी रीते.—

हे पूज्य ! (जत्ता के०) तप सयम रूप यात्रा
ते (जे के०) तमारे अव्यावाध पणे वर्त्ते ठे ? (ज-
वणिज्ज के०) इन्द्रियोयें करी पीणित नही एवुं नि-
रावाध शरीर (च के०) वली (जे के०) तमारु ठे ?

(खमासमणो के०) हे दमावत साधु ! (जे

वसियं के०) दिवस सवंधि, (वक्ष्म के०) व्यतिक्रम एटले अवड्य करणीय विराधनारूप माहारो अपराध, ते प्रत्ये (ग्यामेमि के०) हुं खमावुं तु इवे वली आ प्रमाणे कहे. (आवसियाए के०) अवड्य करणी करतां जे अतिचार लाग्यो होय, ते थकी (पम्किमामि के०) हु निवृत्तुं, (स्वगासमणाणं के०) क्षमावत साधुनी, (देवसियाए के०) दिवसने विपे थइ एवी जे, (आसायणाए के०) आशातना, खमना, ते आशातनायें करीने, ते केवी आशातनाये करीने ? तो के (तित्तीसन्नयराए के०) तेत्रीश आशातना माहेली थनेरी कोइ एक पण आशातनाये करीने, (जं किंचि मिछाए के०) जे कांड कूनुं आलवन लइने मिथ्याजाव वर्त्ताव्यो होय (मणदुक्कमाए के०) मन सवंधी दुष्कृत जे पाप तेणें करी, (वयदुक्कमाए के०) वचनसंवंधी दुष्कृत जे पाप तेणें करी, (कायदुक्कमाए के०) काया सवंधी दुष्कृत जे पाप तेणें करी, (कोहाए के०) क्रोध जाव रूप आशातनायें करी, (माणाए के०) मानरूप

आशातनाये करी, (मायाए के०) कपटरूप आ-
 शातनायें करी, (लोहाए के०) लोत्तरूप आशात-
 नायें करी, (सबकाखियाए के०) अतीत, अनागत
 अने वर्तमान एवं सर्व कालने विषे, (सबमिछोव-
 याराए के०) सर्व, कूरुकपट क्रियारूप जे मिथ्या
 उपचार ते रूप आशातनाये करीने, (सबवधम्मा-
 श्रमणाए के०) सर्व धर्मनी जे करणी, तेने उल्ल-
 घवारूप आशातनायें करीने, ए पूर्वोक्त सर्व प्रकारनी
 (आसायणाए के०) आशातनायें करी, (जो के०)
 जे, (मे के०) महारे जीवे, (देवसिउ के०) दिवस
 सवंधी (अश्यारो के०) अतिचार दोष, जे (कउं
 के०) कयों होय, सेव्यो होय, (तस्स के०) ते
 अतिचारने (ग्वमासमणो के०) हे क्षमाश्रमण !
 तमारी समीपे, (पस्सिक्कमामि के०) हु प्रतिक्रमु
 तुं, मिळामि दुक्कम दउ तु, (निदामि के०) ते दु-
 ष्टकर्मकारी आत्माने हुं निद तु, (गरिहामि के०)
 गुरुनी साखें हु विशेषे निद तुं (अप्पाण के०) दुष्ट
 पापिष्ट अ  पे, (वोसिरामि के०) हु

चोसिरावुं तुं ॥ ३ ॥ इति त्रीजुं वदनावश्यकसंपूर्ण ॥

पठी 'तिस्कुत्तारा' पाठसू चोथा आवश्यकनी
आज्ञा मागी जें, प्रथम काउस्तगमांहि एए अति-
चार कह्या ते "आगमे तिविहे" नी पाटी थकी "इ-
छामिछामि" नी पाटी सुधी प्रगटपणे केहवा, जिण
माहि प्रत्येक पाटी तथा थूलने ठेहमे "तस्स
मिछामि दुप्पम" कहेवु पठी "तस्स सब्वस्स" नी
पाटी कहोजे ते कहे ठे -

॥ अथ तस्स सब्वस्सकी पाटी प्रारंज ॥

तस्स सब्वस्स देवसियस्स अइयारस्स दुप्पा
सियं दुच्चितियं आलोयते पम्किमामि ॥ ४ ॥

अर्थ - (तस्स के०) ते पूर्वे चितव्या जे, (स
ब्वस्स के०) सर्व पण (देवसियस्स के०) दिवस
सवधी, (अइयारस्स के०) अतिचार, तेने तथा
(दुप्पासिय के०) उपयोग रहित अनिष्ट ज्ञापा
चोलवा थका जे थयो, वलो (दुच्चितिय के०) दुष्ट-
कार्य मनमा चितववा थकी जे, थयो तेने (आलोयंते
के०) आलोचवा माटें, प्रगटपणें कहोने, ते थकी

(पश्चिमकमामि के०) हुं निवृत्तु बु ॥ ४ ॥

विधि-पंथी नीचे बेसीने जिमणो गोमो उज्जो करीने “ नवकार, तथा करेमि जंते ’ नी पाटी कही-जें तथा ‘ चत्तारि मंगल ” नी पाटी कहीजे ते पाटी खखीयें ठेयें

॥ अथ चत्तारि मंगलकी पाटी प्रारब्ध ॥

चत्तारि मंगल, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साधू मंगलं, केवलपुत्तो धम्मो मंगलं. चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साधू लोगुत्तमा, केवलपुत्तो धम्मो लोगुत्तमो. चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंता सरणं पवज्जामि, सिद्धा सरणं पवज्जामि, साधु सरणं पवज्जामि, केवलपुत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि. अरिहंताजीको सरणो, सिद्धाजीको सरणो, साधुजीको सरणो, केवलपुत्तं दयाधर्मको सरणो ॥ इहो ॥ चार सरणं

हु खहरणा, उर न बीजो कोय॥ जो जविप्राणी
आदरे, तो अखय अचल गति होय ॥ ५ ॥

अर्थ -(चत्तारि के०) चार, (मंगल के०)
मांगलिक ठे, ते माहि एक तो, (अरिहंता के०)
जेणें रागादिक अतरंग बैरीने हएया ते श्री अरिहंत
(मंगल के०) मांगलिक ठे, दूजा (सिद्धा के०) अष्ट
कर्मने दाय करीने जे सिद्ध पदने पासया ठे एवा
जे श्री सिद्ध, ते (मंगल के०) मांगलिक ठे, त्रीजा
(साधू के०) सम्यक् ज्ञानें करी शिवमुखना साधक
जे साधु ते (मंगल के०) मांगलिक ठे चौथो
(केवली के०) श्री केवलि जगवंतनो, (पणत्तो
के०) प्रहृष्यो एवो जे श्रुतचारित्ररूप, (धम्मो के०)
धर्म, ते (मंगल के०) मांगलिक ठे (चत्तारि के०)
चार, (लोयुत्तमा के०) लोकमांहे उत्तम ठे, एक
(अरिहंतो के०) श्री अरिहंतजी ठे, ते (लोयुत्तमा
के०) लोकमांहे उत्तम ठे, बीजा (सिद्धा के०) सिद्ध
जे ठे, ते (लोयुत्तमा के०) लोकमांहे उत्तम ठे त्रीजा
(साधू के०) साधु जे ठे, ते (लोयुत्तमा के०) लोक

मांहे उत्तम ठे, चोथो (केवलपण्णतो के०) केवली
 जगवानें प्ररूप्यो एवो, (धम्मो के०) धर्म जे ठे,
 ते (लोयुत्तमो के०) लोरुमांहि उत्तम ठे, हवे (च-
 त्तारि के०) चारे, (सरणं के०) शरणे (पवज्जा-
 मि के०) अंगीकार करूं तुं, एक (अरिहतासरणं
 के०) श्री अरिहत्तजीना शरणे, (पवज्जामि के०)
 अंगीकार करूं तु, बीजो (सिद्धा सरण के०) श्री
 सिद्धना शरणे, (पवज्जामि के०) अंगीकार करूं तुं,
 बीजो (साधु सरणं के०) साधुशरण प्रत्ये, (पवज्जा-
 मि० के०) अंगीकार करूं तुं, चोथो (केवलजि के०)
 श्री केवलिये (पणत्त के०) ज्ञाख्यो एवो जे (धम्मं
 के०) धर्म तेना, (सरण के०) शरण प्रत्ये, (पवज्जा-
 मि के०) अंगीकार करूं तु आगलनो पाठ तथा
 दुहाको अर्थ सुखज ठे जिणसू इहां जिरयो नहिंहे

विधि -पठी “ इष्ठांमि ठामि” तथा “ इरिया-
 वहि ” नी पाटी कहीने ‘ तिक्कुत्तारा’ पाठसू “ व्रत,
 अतिचार” जेला केहवानी आझा भागीजें तिहां
 “आगमे पाटी कहीजे, ते आ प्रमाणे:-

॥ अथ आगमे तिविहे पणत्तेकी प्राटी प्रारत्त. ॥

आगमे तिविहे पणत्ते तं जहा, सुत्तागमे, अन्तागमे, तदुजयागमे, एहवा श्री ज्ञानने विपे जे कोई अतिचार लागो होय, ते आलोउं, जं वाइ-इं, वचामेलियं, हीणस्करं अच्चस्करं, पय-दीणं, विणयदीणं, जोगहीणं, घोसहीणं, सु-शुपिनिष्ठिय, अकाले कउं सइजानं काले न कउं सइजानं, असइजाए सइझाय, सइजाए न स-इझाय, जणता, गुणता चितवता, ने विचार-तां, ज्ञान अने ज्ञानवतनी आशातना किनी होय तो तस्स मिठामि डक्क ॥ ६ ॥ इति ॥

अर्थ—(आगमे के०) सूत्र सिद्धांत. (तिविहे के०) तीन प्रकारका (पणत्ते के०) कहेला ठे. (तंजहा के०) ते कहे ठे एक (सुत्तागमे के०) सूत्र आगम बीजो (अन्तागमे के०) अर्थ आ गम ते सूत्रना अर्थ समजवा बीजो (तदुजयागमे के०)

(४९)

सूत्र तथा तेहनो अर्थ, ए दोय आगम जिहां होय
 ते व्रीजो तहुजय आगम एहवा श्री ज्ञानने विषे
 जे कोइ अतिचार लागो होय ते (आलोउ के०)
 आलोउं तु ते अतिचार कहे छे (जंवाइछ के०)
 सूत्र आधां पाठां जमालीनी परें जण्यां होय, (व-
 चामेलिय के०) अनेरां शास्त्रनां वचन मेढ्या होय
 जेम कोपलादिकनी खीर तेम पदसू मेले (हीणस्कर
 के०) हीन अक्षर बोढ्यो होय, (अच्चस्कर के०)
 अधिक अक्षर बोढ्यो होय, (पयहीण के०) पद
 उठुं जण्यु होय, (विणयहीण के०) विनय रहित
 जण्युं होय, (जोगहिण के०) मन वचन कायाना
 जोग ठाम राख्या विना जण्या होय, (घोसहीण
 के०) जारी अक्षरने हलको करी जण्यो होय, (सु-
 हुदिन्न के०) सिद्धांतादिकनु ज्ञान अविनीतनें तथा
 मूर्ख मिथ्यात्वीने दीधुं होय, (दुहुपनिष्ठियं के०)
 अज्ञानपणे साचो ठतां पण मागो पाग्वो जण्यो
 होय, (अकाले कर्ज सज्जाउ के०) चार सध्याकाल,
 चार महोत्सव, चार माहापाग्विवा एव १२ अकाल

(५०)

ते कालमां सज्जाय कीरो होय, (कालेनकउं सज्जाउं के०) काल वेलायें सज्जाय न कीधो होय, (असज्जाए सज्जायं के०) दश औदारिक शरीरना अने दश आकाशना एव २० असज्जायमांहि सज्जाय करयो होय, (सज्जाए न सज्जायं के०) सज्जाय करवा योग्य वेलायें सज्जाय न कीधो होय, (तस्स मिठामिडुक्कं के०) तेनु दुष्कृत जे पाप ते मारु निष्फल थारु ॥ ६ ॥

पठि “दसण समकित्त” नी पाटी कहीजें, ते कहे ठे—

दसण समकित्त ॥ परमत्त संथवो वा, सुदिठ
परमत्त सेवणावावि ॥ वावणं कुदंसण वज्जा-
णाय एवी सम्मत्त सद्वहणा ॥ एहवा समकित्त-
ना समणोवासयाणं सम्मत्तस्स पंच अइयारा,
पयात्ता, जाणियवा, न समायरियवा, त जहा
ते आलोउ, संका कखा, वित्तिगिह्वा, परपासं-
नी परसंसा, परपासमोसंथवो, एवं पांच अति-
चार मध्ये जे कोइ अतिचार लागो होय तस्स

मित्रामि दुक्कमं ॥ ७ ॥ इति ॥

अर्थ—(दंसण समकित के०) समकित दर्शन तेनु स्वरूप कहियें ठैयें (परमव के०) परम अर्थ ते जीवादिक नव पदार्थनो (सव्वोवां के०) संस्तव ते परिचय करवो, तेनो समागम करवो तथा (सु के०) जला (दिठ के०) दीगा ठे (परमव के०) सूत्रना अर्थ जेणें एवां गुरुनी (सेवणावावि के०) सेवना करवी अपि शब्द निश्चय वाचक ठे (वावणं के०) समकित पामीने पठी तेने वमी नाखे ते तथा (कुदंसण के०) कूरुं दर्शन जेनु एटले मूलथी समकित जेने नज होय तेने, (वज्झणा के०) वर्जवो, एटले तेनो त्याग करवो (सम्मत्त के०) ए समकितनी (सद्वहणा के०) सद्वहणा, श्रद्धा, (एहवा समकितनासमणोवासयाणं के०) एहवा समकितना धारक श्रावकने, (सम्मत्तस्स के०) समकित संबंधि, (पच के०) पांच, (अश्रयारा के०) अतिचार, (पयाला के०) महोटा ठे ते (जाणियवा के०) जाणवा पण, (न समाय

रियञ्जा के०) आदरवा नहीं, (तं जहा के०) ते
 जेम ते तेम आगल कहीने (ते आखोउं के०) आ-
 खोउं ठु, १ (सका के०) जिन वचन तणो सदेह
 कीधां होय २ (करा के०) मिथ्यात्व मतनी इछा
 कीधी होय, सहुना मार्ग जला जाण्या होय, ३
 (व्रितिगछा के०) धर्म करणीना फलमांहि सदेह
 आण्यो होय, धर्मक्रियानु फल होशे के नही ? ए-
 हवो सदेह धर्यो होय साधु, साधवीना मल मलीन
 वस्त्र देखी दुगठा कीनी होय, ४ (परपासनीपरस-
 सा के०) मिथ्यात्वीनी प्रज्ञावना देखी प्रशसा किनी
 होय, (परपासमिसथवो के०) मिथ्यात्वना प्ररूप-
 कनो सस्तव परिचय कीधो होय, एव पांच अति-
 चार माहेलो जे कोइ अतिचार लागो होय, (तस्स
 के०) ते सबधी, (दुक्कम के०) दुष्कृत जे पाप ते
 मित्रामि के०) मुजने निष्फल थाउं ॥ ६ ॥ इति ॥
 पठी १२ वारे "व्रत अतिचार" कहीजें, ते कहे ठे -

(१) पहेलुं अणुव्रत थूलानं पाणाश्वायानं
 वेरमाणं त्रसजीव वेइंदिय, तेइंदिय चउरिदिय

पचिंदिय, जाणी प्रीढी विण अपराधी आ-
 कुटी संकटपी सलेसी हणवानिमित्तें हणवानां
 पञ्चखाण, जावजीवाए डविह, तिविहेण, न
 करेमि, न कारवेमि, मणसा वयसा, कायसा,
 एहवा पहिला थूलप्राणातिपात विरमण व्रतना
 पंच अइयारा, पयाला जाणियबा, न समाय-
 खिवा, तं जहा ते आलोउ ॥ वंधे वहे ठवि-
 न्हेए, अइजारे जत्त पाणबुढेए ॥ तस्स मि-
 णामि डक्कनं ॥ ८ ॥

अर्थ—(पहिलु के०) पहिलु (अणुव्रत के०)

साधुना पंचमहाव्रतनी अपेक्षाये ठोटो व्रत, ठे जंमां
 केटलुं एक अविरति पणु मोरुलु रहे माटे एने
 (थूलार्ठ के०) थूल कहियें एवा, (पाणाइ वायार्ठ
 के०) प्राणीयोना प्राणनी अतिपात एटले हिसा
 करवी ते थकी (वेरमण के०) निवत्तु लुं. (व्रस-
 जीव के०) व्रस जीव, ते हालता चालता एवा,
 (वेइंदिय के०) दोय इइयवाला, (तेइंदिय के०)

तीन इंद्रियवाला, (चतुर्दिग्य के०) चार इंद्रिय-
 वाला, (पचिदिग्य के०) पांच इंद्रिय वाला जीव;
 तेने (जाणी के०) जाणीने, (ग्रीष्ठी के०) ओल-
 रपायका, (त्रिण अपराधी के०) निरपराधी जीवने
 (आकुटी के०) उदेरी (सकलपी के०) सकलप करीने,
 (सलेसी के०) लेउयासहित, (हणवानिमित्ते के०) हण-
 वानी बुद्धियें करीने, हणवानां पचस्काण कीधां ठे ते
 आ प्रमाणें के (जावजीवाए के०) ज्या सुधी जीवु त्या
 सुधी (दुविहं के०) दोय करण, अने (तिविहेण
 के०) तीन जोगसू (न करेमि के०) हु करु नहीं,
 (नकारवेमि के०) दुजा पासें हु करावु नहीं,
 (मणसा के०) मने करी, (वयसा के०) वचने
 करी, (कायसा के०) कायार्थें करी हिंसा करु नहीं
 एहवा पहिला थूल एटले म्होटा, (प्राणातिपात
 के०) जीवनी हिंसा करवा थकी (विरमणव्रतना
 के०) निवृत्तया रूप व्रतना (पच अइयारा के०)
 पाच अतिचार, (पयाला के०) म्होटा ठे ते,
 (जाणियवा के०) जाणवा, पण (न समायरियवा

के०) आदरवा नही, (तं जहा ते आलोउं के०)
 ते०) ते जिम ठे तिम तेनां नाम कहीने आलोउं
 लुं, (वंधे के०) जीवने गाढे वधणे बांध्यो होय,
 (वहे के०) गाढा घाव घाट्या होय, (ठविछेए
 के०) शरीरना अवयवो ठेव्या होय, (अइजारे के०)
 अति जार जरयो होय, (जत्तपाणबुछेए के०) अन्न
 पाणीनो व्युछेद कीधो होय (तस्स मिछामि डुकमं
 के०) ते अतिचार रूप दुष्कृत जे पाप ते महारुं
 निष्फल थारुं ॥ ७ ॥ इति ॥

(१) बीजु अणुव्रत थूलान मोसावायउ
 वेरमण कन्नालिए गोवालिए, जोमालिए, था-
 पण मोसो, मोटकी कूनी साख, इत्यादिक मो-
 टकूं झूठ बोलवा पच्चस्काण जावजीवाए, डविहं,
 तिविहेणं न करेमि न कारवेमि, मणसा, वयसा,
 कायसा, एहवा बीजा थूल मृपावादविरमण
 व्रतना पंच अइयारा, जाणियवा, न समायरिवा
 तं जहा ते आलोउं, सहसाजस्काणे, रहस्सा-

जस्काणै, सदारा मंतजेए, मोसोवएमे, कून् छे-
हकरणे, तस्स मिठामि डक्कन ॥ ए ॥

अर्थ.-बीजुं अणुवत्, (थूलार्थ के०) महोटा.
(मोसावायर्त्थ के०) मृपावादथकी एटले जूतुं वोल्वा-
थो (वेरमण के०) हुं निवर्त्तुं तु (कन्नालिये के०) कन्या
तथा वर संवधि जूठ, (गोवालिए के०) गाय, जेप आदि
ढोर संवधि जूठ, (ज्ञोमालिए के०) जमीन संवधि
जूठ, (थापणमोसो के०) कोईनी स्थापण लंलववी.
[मोटकी कूनी साख के०] मोटी खोटी साक्षी ज-
ररी, (इत्यादिक के०) ए आदि करीनें, (मोटकूं
जूठ के०) महोदु जूठ, (वोल्वा के०) वोल्वानु
(पच्चस्काण के०) पच्चस्काण, (जावजीवाए के०)
जावजीव लगे, (दुविह तिबिहेण के०) इत्यादिक
नो अर्थ आगल लखाइ गयो ठे, (सहसाजस्काणै
के०) सह सात्कारें कोई प्रत्ये कूमुं आल दीधुं होय
(रहस्साजस्काणै के०) कोईनी रहस्य ते ठानी
वात प्रगट कीनी होय, (सदारामतजेए के०) पो-
तानी खीना मर्म प्रकाश्या होय, (मोसोवएसे के०)

मृषा ते खोटो उपदेश दीधो होय, (कूमलेहकरणे के०) कूमलेखनुं करवुं एटले खोटा लेख लिख्या होय, (तस्स मिठामि दुक्कमं के०) ते पाप महारुं निष्फल थाजो ॥ ए ॥ इति ॥

(३) त्रीजुं अणुव्रत थूलाउं अदिन्नादाणाउं, वेरमाणं, खातर खणो, गांठमी गेडी, ताखुं परकुंचियें करी, पमी पस्तु धणीयाती जाणी लेवी, इत्वादिक मोटकूं अदत्तादान लेवानां पच्चस्काण, सगा संबधो, व्यापारसंबधो तथा निन्नमी वस्तु उपरांत अदत्तादान लेवाना पच्चस्काण जावजीवाए दुविहं तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, ए हवा त्रीजा थूला अदत्तादान विरमण व्रतना पंच अश्यारा जाणियवा, न समायरियवा, त जहा ते आलोउं तेनाहमे, तकरप्पउंगे, विरुद्धरज्जाइकमे, कूमतोले कूडमाणे, तप्पफिरुवगव वहारे, तस्स मिठामि दुक्कमं ॥ १० ॥

(५०)

अर्थ -(त्रीजुं अणुवत के०) त्रीजुं अणुवत
 (थूलाउ के०) मोहोदु, (अदिन्नादाणाउ के०) अण
 दीधेलु लेवाथकी, एटले चोरी करवाथकी, (वेरमाण
 के०) निवर्तु तु (खातरखणी के०) कोइना घरमां
 खातर पानी चोरी कीधी होय, (गांठमी ठोमी के०)
 कोइनी गांठमी ठोमी होय, (तालुपरकुचियेंकरी के०)
 कोइनु तालु बीजीकुचीथी उघामी होय, (पनी वस्तु
 धणीयाती जाणी लेवी के०) कोइनी पमेली वस्तुनो,
 कोई धणी ठे एम जाण्या ठतां ते लेवी, (इत्यादिक
 मोटक के०) ए आदि मोटका, (अदत्तादान के०)
 धणीना दीधा विनानी वस्तुने (लेवाना पञ्चस्काण
 के०) लेवानो त्याग, अने पोताना सगां वाहालां
 संबधी कोइ चीज होय अथवा व्यापार सबधी कोइ
 चीज नमुना दाखल तथा सोपारीनो कटको प्रमुख
 जे उपानुवाथकी तेना मालेकने कोइ द्रम उपजे
 नही तेनो जयणा उपरांत पञ्चस्काण (जावजीवाए के०)
 जावजीव सुधी, डुविहं तिबिहेण, इत्यादिनो अर्थ
 सुलज्ज ठे एना पांच अतिचार कहे ठे (तेनाहमे

के०) चोरीनी वस्तु लीनी होय, (तक्करप्पठगे के०) चोरने ड्रव्य, उपगरण वगेरे कोइ सहाय दीनी होय, (विरुद्धरज्जाइकमे के०) राज्य विरुद्ध कार्य कीधुं होय, राजानु दाण जाग्यु होय, तथा राजाये मना करेला गुन्हा करया होय, (कूमतोले के०) खोटां तोला कीनां होय, (कूममाणे के०) खोटां मापां कीनां होय, (तप्पमिरुवगववहारे के०) एक वस्तु मांहे ते वस्तु जेवीज बीजी वस्तुनी जेल सजेल कीनी होय, सरसी वस्तु देखानीने नरसी वस्तु आपी होय, तो (तस्स मिठामिदुक्कमं के०) तेनु पाप महारे निष्फल याजो ॥ १० ॥ इति ॥

(४) चोथुं अणुव्रत थूलाजं मेहुणाजं वेर-
मण, सदारा संतोसिए, अवसेस, मेहुणविहं
पच्चस्काण, ए पुरुषने, अने स्त्रीने सज्जर्तारसं-
तोसिए, अवसेसं मेहुणनु पच्चस्काण, अने
जे स्त्री पुरुषने मूलथकाज कायाएं करी मेहुण
सेववानुं पच्चस्काण होय, तेहने देवता मनुष्य

तिर्येच संबंधी मेहुणनुं पच्चस्काण, जावजीवाए
 देवता संबंधी दुविहेणं तिविहेणं, न करेमि, न
 कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, मनुष्य ति-
 र्येच संबंधी एगविहं एगविहेणं न केरमि, का-
 यसा, एहवा चोथा थूलमेहुण विरमणव्रतना
 पच अइयारा, जाणियवा, न समायरियवा, तं
 जहा ते आलोउ, इत्तरिय परिग्गहियागमणे,
 अपरिग्गहियागमणे, अनगकीमा, परविवाह-
 करणे, कामजोगेसु तिवाज्जिवासा, तस्स मि-
 ण्णामि दुक्कमं ॥ ११ ॥

अर्थ.—(चोथु अणुव्रत के०) चोथु अणुव्रत
 (थूलाउ के०) महेटा (मेहुणाउ के०) मैथुन यकी
 (वेरमण के०) निवर्तुं दु, (सदारा के०) पोतानी
 स्त्रीयोज (सतोसिए के०) संतोष राखवो, (अवसेस
 के०) ते शिवाय बीजा कोइनी साथें (मेहुणविहं
 के०) मैथुन सेववाना (पच्चस्काण के०) त्याग बंधी
 वे, ए पुरुष आश्रयी कछु अने स्त्रीने (सन्नर्तार के०)

पोताना जर्तारथी (संतोसिए के०) सतोष राखवो.
 (अवसेसं के०) ते शिवाय वीजा कोइनी साथे (मे-
 ह्नुणनुं के०) मैथुन सेववानी (पच्चरकाण के०) वंधी,
 अने जे स्त्री पुरुषने मूलथकीज कायाये करी मेहुण
 सेववानु पच्चरकाण होय एटले मैथुन सेववानी वंधी
 होय, तेहने देवता मनुष्य तिर्यच सवंधी (मेहुणनुं
 के०) मैथुन सेववानु (पच्चरकाण के०) त्याग, (जा-
 वजीवाए के०) ज्यांसुधी जीधुं, त्यां सुधी (देवतास-
 वंधि के०) देवतानी साथें दुविहं तिविहेण न करेमि
 न कारवेमि मणसा वयसा कायसा अने (मनुष्य
 तिर्यच सवधि के०) माणस, तथा पशु वगेरेनी साथे
 (एगविहं के०) एक करण (एगविहेणं के०) एक
 जोगे (नकरेमि के०) हुं करू नही, (कायसा के०)
 कायायें कसी, एहवा चोथा (थूल मेहुणविरमणव-
 तना के०) सहोटां मैथुन त्याग करवा संवधिव्रतना
 (पंचअश्रयारी के०) पांच अतिचार, जाणियव्वा न
 समायरिव्वा जहा ते (तंलोउ के०) आलोचु तुं,
 (इत्तरिय परिंगेहिया गमणे के०) इत्वरते स्वल्प-

तिर्येच संवंधी मेहुणनुं पच्चस्काण, जावजीवाए
 देवता संवंधी दुविहेणं तिविहेणं, न करेमि, न
 कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, मनुष्य ति-
 र्येच संवंधी एगविहं एगविहेणं न केरमि, का-
 यसा, एहवा चोथा थूलमेहुण विरमणव्रतना
 पच अइयारा, जाणियवा, न समायरियवा, तं
 जहा ते आलोउं, इत्तरिय परिग्गहियागमणे,
 अपरिग्गहियागमणे, अनगकीमा, परविवाह-
 करणे, कामजोगेसु तिवाज्जिवासा, तस्स मि-
 त्तामि दुक्कं ॥ ११ ॥

अर्थ--(चोथु अणुव्रत के०) चोथु अणुव्रत
 (थूलाउं के०) महोटा (मेहुणाउं के०) मैथुन थकी
 (वेरमण के०) निवर्तु दु, (सदारा के०) पोतानी
 खोथोज (सतोसिए के०) संतोष राखवो, (अवसेसं
 के०) ते शिवाय बीजा कोइनी साथें (मेहुणविह
 के०) मैथुन सेववानी (पच्चस्काण के०) त्याग बंधी
 ठे, ए पुरुष आश्रयी कछु अने स्त्रीने (सज्जर्तार के०)

पोताना ज्ञतारथी (संतोसिए के०) संतोष राखवो
 (अवसेसं के०) ते शिवाय बीजा कोइनी साथे (मे-
 ह्नुणनुं के०) मैथुन सेववानी (पञ्चस्काण के०) वंधी,
 अने जे स्त्री पुरुषने मूलथकीज कायाये करी मेहुण
 सेववानु पञ्चस्काण होय एटले मैथुन सेववानी वंधी
 होय, तेहने देवता मनुष्य तिर्यंच सवंधी (मेहुणनुं
 के०) मैथुन सेववानु (पञ्चस्काण के०) त्याग, (जा-
 वजीवाए के०) ज्यांसुधी जीधु, त्यां सुधी (देवतास-
 वधि के०) देवतानी साथे दुविह् तिविहेण न करेमि
 न कारवेमि मणसा वयसा कायसा अने (मनुष्य
 तिर्यंच संवधि के०) माणस, तथा पशु वगैरेनी साथें
 (एगविह्-के०) एक करण (एगविहेण के०) एक
 जोगें (नकरेमि के०) हु करू नही, (कायसा के०)
 कायायें कसी, एहवा चोथा (थूल मेहुणविरमणव-
 तना के०) सहोटा मैथुन त्याग करवा संवधिव्रतना
 (पंचथइयारा के०) पांच अतिचार, जाणियव्वा न
 समायरिव्वा जहा ते (तंलोउ के०) आलोचु ठुं,
 (इत्तरिय परिगहिया गमणे के०) इत्वरते स्वल्प-

તિર્યંચ સંવંધી મેહુણનું પચ્ચક્ષાણ, જાવજીવાણ
 દેવતા સંવંધી દુવિદેણં તિવિદેણં, ન કરેમિ, ન
 કારવેમિ, મણસા, વયસા, કાયસા, મનુષ્ય તિ-
 ર્યંચ સંવંધી એગવિહં એગવિદેણં ન કેરમિ, કા-
 યસા, એહવા ચોથા થૂલમેહુણ વિરમણવ્રતના
 પંચ અશ્યારા, જાણિયવા, ન સમાયરિયવા, તં
 જહા તે આલોડં, ઇત્તરિય પરિગ્ગહિયાગમણે,
 અપરિગ્ગહિયાગમણે, અનગકીના, પરવિવાહ-
 કરણે, કામજોગેસુ તિદ્વાજિલાસા, તસ્સ મિ-
 ત્તામિ દુક્કમં ॥ ૧૧ ॥

અર્થ - (ચોથું અણુવ્રત કે) ચોથું અણુવ્રત
 (થૂલાડં કે) મહોટા (મેહુણડં કે) મૈથુન થકી
 (વેરમણં કે) નિવર્તુ લું, (સદારા કે) પોતાની
 સ્ત્રીયોજ (સતોસિણ કે) સતોપ રાખવો, (અવસેસ
 કે) તે શિવાય વીજા કોઈની સાર્થે (મેહુણવિદે
 કે) મૈથુન સેવવાનાં (પચ્ચક્ષાણ કે) ત્યાગ વંધી
 ઠે, એ પુરુષ આશ્રયી કહ્યું અને સ્ત્રીને (સન્નર્તાર કે)

(६३)

पोताना जतरिथी (संतोसिए के०) संतोष राखवो
(अथसेसं के०) ते शिवाय वीजा कोइनी साथे (मे-
हुणनुं के०) मैथुन सेववानी (पच्चस्काण के०) वंधी,
अने जे स्त्री पुरुषने मूलथकीज कायाये करी मेहुण
सेववानु पच्चस्काण होय एटले मैथुन सेववानी वंधी
होय, तेहने देवता मनुष्य तिर्यच सवंधी (मेहुणनुं
के०) मैथुन सेववानु (पच्चस्काण के०) त्याग, (जा-
वजीवाए के०) ज्यांसुधी जीवु, त्यां सुधी (देवतासं-
वधि के०) देवतानी साथे दुविह तिविहेण न करेमि
न कारवेमि मणसा वयसा कायसा अने (मनुष्य
तिर्यच सवधि के०) माणस, तथा पशु वगेरेनी साथे
(एगविह के०) एक करण (एगविहेण के०) एक
जोगें (नकरेमि के०) हुं करू नही, (कायसा के०)
कायायें कसी, एहवा चोथा (थूल मेहुणविरमणव-
तना के०) सहोटां मैथुन त्याग करवा संवधिव्रतना
(पंचथ्यश्यारा के०) पांच अतिचार, जाणियठवा न
समायारिठवा जहा ते (तंलोउ के०) आलोचुं तुं,
(... माहिया गमणे के०) इत्वरते स्वल्प-

काल मास ठ मास पर्यंत कोइ वेइया प्रमुखने राखी तेनी साथे, गमन कीधु होय, (अपरिगृहियागमणे के०) जे परणेली न होय, एवी कुमारिका अथवा विधवा जेनो कोइ धणी न होय जेनु कोइये परिग्रहण कछु नथी तेने अपरिग्रहीता कह्ये तेनी साथें गमन कीधु होय, (अनंग कीमा के०) अत्यासक्तियें स्वदेह परदेह अनग जे काम तेनी चेष्टा कीधी होय हास्य, कुतूहल कीधां होय, (परविवाहकरणे के०) पोताना ठोरुं टालीने परना ठोरुं सबधि विवाह नात्रु मेलव्यु होय, (कामजोगेसु के०) काम जोगने विषे, (तिब्बान्जिलास्ता के०) तीव्र परिणामे अत्यंत अजिलापा राखी होय, (तस्स मिठामि दुक्कमं के०) ते सबधि कीधेलु पाप महारु निष्फल थाजो ॥११॥

(५) पाचसुं अणुव्रत थूलान् परिगृहान्, वेरमाण, खित्तवत्तुनुं यथापरिमाण, हिरस्सोवस्सनु यथापरिमाण, धनधान्यनुं यथापरिमाण, दुपदचणप्पदनुं यथापरिमाण, कुविय धातुनुं

(६३)

यथापरिमाण, ए यथापरिमाण कीधुं ठे, ते उ-
परांत पोतानुं करी परिग्रह राखवानां पच्चस्काण,
जावजोवाए, एगविहंतिविहेणं, न करेमि, म-
णसा, वयसा, कायसा एहवा पांचमा मूलप-
रिग्रहपरिमाण व्रतना, पंच अइयारा, जाणि-
यवा, न समायरियवा, तं जहा ते आलोउ,
खित्तवहुप्पमाणाइकमे, हिरणसोवस्सप्पमाणाइ-
कमे, धनधास्सप्पमाणाइकमे, दुपदचप्पदप्प-
माणाइकमे, कुवियप्पमाणाइकमे, तस्स मिच्छा
मि दुक्कमं ॥ १२ ॥ इति ॥

अर्थः—पांचसु अणुव्रत थूलान् के०) मोहोदुं
परिग्रह जे दोलतने वगैरे ते (वेरमण के०) तजवा
विपेनु ते कहे ठे (खित्त के०) खेत्रादिक ते उघामी
जमीन, (वहुनु के०) घरादिक ढांको जमीननी
(यथापरिमाण के०) जेटली मर्यादा कीधी ठे, (हि-
रण के०) रूपु (सोवणणु के०) सोनानी (य-

કે૦) મોરવંધનાણુ, (ધાણનુ કે૦) શાલ્યાદિક
 ધાન્યની (યથાપરિમાણ કે૦) જે પ્રમાણે મર્યાદા કીધી
 ઠે (દુપદ કે૦) વે પગા મનુષ્યાદિક (ચતુષ્પદનું કે૦)
 ચોપગાં ઢોરાદિકની (યથાપરિમાણ કે૦) જે પ્રમાણે
 મર્યાદા કીધી ઠે. (કુવિય ધાતુનુ કે૦) સર્વ ઘરની વસ્તુ
 તે ઘરવસ્ત્રી વગેરેની, (યથા પરિમાણ કે૦) જે પ્રમાણે
 મર્યાદા કીધી ઠે, એ યથાપરિમાણ કીધું ઠે તે ઉપ-
 રાંત પોતાનુ કરી પરિગ્રહ રાખવાનાં પચ્ચસ્કાણ (જા
 વજીવાણ કે૦) જ્યાં સુધી જીવુ ત્યા સુધી, એગવિહં
 શ્ત્યાદિનો અર્થ સુગમ ઠે તેથી લરયો નથી એના
 પાંચ અતિચાર કહે ઠે. (સ્વિત્તવત્તુષ્પમાણાશ્કમે કે૦)
 ઝઘાની જમીન તથા ઢાકી જમીનનુ પ્રમાણ, અતિ
 કસ્યુ હોય, (હિરણસોવણપ્પમાણાશ્કમે કે૦)
 રૂપા તથા સોનાની મર્યાદા ઝલ્લધી હોય, (ધણધા-
 ણપ્પમાણાશ્કમે કે૦) રોકનુ નાણુ તથા ઢાણાની મર્યા
 દા ઝલ્લધી હોય, (દુપદચતુષ્પદપ્પમાણાશ્કમે કે૦)
 વેપગાં, ચોપગાંની મર્યાદા ઝલ્લધી હોય, (કુવિયપ્પ
 માણાશ્કમે૦) ઘરવસ્ત્રીની મર્યાદા ઝલ્લધી હોય,

(६५)

(तस्स मिच्छामि दुक्कमं के०) तेनु पाप महारो निष्फल
याजो ॥ १२ ॥ इति ॥

(६) ठुं दिशिन्नत, ऊर्ध्वदिशिनु यथापरि-
माण, अधोदिशिनुं यथापरिमाण, तिरियदि-
शिनुं यथापरिमाण, ए यथापरिमाण कीधु ठे,
ते उपरात सइत्तायें, कायायें जइने पच आ-
श्रव सेववानां पच्चस्काण जावजीवाए, डुविहं,
तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, व-
यसा, कायसा, एहवा ठठादिशिन्नतना पच
अइयारा, जाणियवा न समायरियवा त जहा
ते आलोउं, उह्वदिसिप्पमाणाइक्कमे, अहोदि-
सिप्पमाणाइक्कमे, तिरियदिसिप्पमाणाइक्कमे,
खित्तुवुद्धि सयंतराए, तस्स मिच्छामि दुक्कमं ३।

अर्थ.—(ठु दिशिन्नत के०) ठु, दिशाना मान
बांधवानु व्रत, ते (ऊर्ध्वदिशानु के०) उचीदिशानु
(यथापरिमाण के०) जेस प्रमाण कीधु ठे, (अधोदि

शिनु के०) नीची दिशानु (यथापरिमाण के०) जेम
 प्रमाण कीधु ठे, (तिरिय दिशानु के०) तीर्धी जमीन,
 एटले उत्तर, दक्षिण, पूर्व अने पश्चिम ए चारे दि-
 शानु (यथापरिमाण के०) जेम प्रमाण कीधुं ठे, ए
 यथापरिमाण कोधुं ठे ते उपरांतनी जूमिमां स्वेछाये
 कायाये जडने पंच आश्रवसेववानां पाप जोगववानां,
 पञ्चस्काण जावजीयाए दुविहं तिविहेण न करेमि
 न कारवेमि मणसा वयसा कायसा, एवी रीतें कीधां
 ठे, एह्मा ठछा (दिशि व्रतना के०) करेला मा-
 नथी उपगत दिशाने तजी देवाना व्रतना पंच अ-
 ड्यारा जाणियवा, न समायरियवा, त जहा ते आ-
 लोउं, (उर्द्ध्वदिसिप्पमाणाश्कमे के०) उंची दिशानुं
 प्रमाण अति कम्यु होय, मर्यादा उल्लघी होय (अ-
 होदिसिप्पमाणाश्कमे के०) नीची दिशानी मर्यादा
 उल्लघी होय, (तिरियदिसिप्पमाणाश्कमे के०) तीर्धी
 दिशानी मर्यादा उल्लघी होय, (खित्तबुद्धि के०) क्षेत्र
 जमीननी वृद्धि, एटले एक दिशा घटानीने बीजी
 दिशा वधारी होय (संयंतरद्धाए के०) संदेह पड्यां ठतां

(६७)

आगल चाट्यो होय. (तस्स विष्णामि दुक्कमं के०)
तेनुं पाप कीधेसु महारो निष्कल थाजो ॥१३॥इति॥

७ सातमुं व्रत उवजोग परिजोगविहं पच्च-
स्कायमाणे उल्लणियाविहं, १ दंतणविहं, २
फलविहं, ३ अन्नंगणविहं, ४ उवट्टणविहं, ५
मज्जाणविहं, ६ वण्णविहं, ७ विलेवणविहं, ८
युप्फविहं, ९ आजरणविहं, १० धूपविहं, ११
पेजविहं, १२ चस्काणविहं, १३ उदनविहं, १४
सूपविहं, १५ विगयविहं, १६ सागविहं, १७
माहुरविहं, १८ जिमणविहं, १९ पाणीविहं,
२० मुखवासविहं, २१ वाहनिविहं, २२ सय-
णविहं, २४ सचित्तविहं, २५ दव्वविहं, २६
इत्यादिकनु, यथापरिमाण कीधुं वे, ते उप-
रात उवजोग परिजोग जोगनिमित्तं जोगववानां
पच्चस्काण, जावजीवाए, एगविहं तिविहेणं न
करेमि मणसा वयसा कायसा एहवा सातमा

(६७)

उवज्जोग परिज्जोग डुविहे पन्नत्ते त जहा, जो-
यणाउय, कम्मउय, जोयणाउ समणोवासया-
णं पेच अइयारा, जोणियवा, न समायरियवा,
तं जहा ते आलोउं, सचित्ताहारे, सच्चित्तपप्पि-
वधाहारे, अप्पोलिउंसहिज्जस्सणया, डुप्पोलि-
उंसहिज्जस्सणया, तुत्थोसहिज्जस्सणया, कम्मउण
समणोवासयाणं, पनरस कम्मादाणाइ, जा-
णियवा, न समायरियवा, तं जहा ते आलोउं,
इंगाल्लकम्मे, वणकम्मे, सामीकम्मे, ज्ञामीकम्मे,
फोमीकम्मे, दत्तवाणिज्ज, लस्सवाणिज्ज केस-
वाणिज्ज, रसवाणिज्ज, विसवाणिज्ज, जंतपि-
ह्वणकम्मे, निलत्तणकम्मे, दवग्गिदावणया,
सरदहनलायपरिसोसणया, असईजण पोस-
णया, तस्स मिन्नामि दुक्कमं ॥ १४ ॥ इति ॥

अर्थ - सातमु व्रत (उवज्जोग के०) जे वस्तु
एकज बार जोगवाय एवा जे अन्नादिक तेनो विधि

(६९)

प्रमुख (परिजोगविहं के०) उपजोग वस्तु जे वा-
 वारंवार जोगववामां आवे एवां वस्त्र आज़रण प्रमुख
 तेनुं पञ्चस्त्रायमाणे के०) पञ्चस्त्राण करवुं ते कहे ठे
 (उल्लणियाविहं के०) दातणना प्रकारनु, (फल-
 विहं के०) वृक्षनाफल प्रमुखना प्रकारनु (अङ्ग-
 णविहं के०) तेल प्रमुख शरीरे चोपम्बाना प्रका-
 रनु, (उवट्टणविहं के०) मर्दन करवानी वस्तु प्र-
 मुखना प्रकारनु, (मङ्गणविहं के०) न्हावाना पाणी
 प्रमुखना प्रकारनु (वट्टविहं के०) वस्त्रना प्रकारनु
 (विलेखणविहं के०) चदनादिक विलेपन करवाना
 तथा तिलक प्रमुख करवाना प्रकारनु (पुष्पविहं
 के०) चंपादिकना फूल प्रमुखना प्रकारनु, (आज़-
 रणविहं के०) घरेणाना प्रकारनु (धूपविहं के०)
 धूप करवाना प्रकारनु (पेजविहं के०) पीवानी
 वस्तु प्रमुखना प्रकारनु, (नस्त्रविहं के०) सुखनी
 प्रमुख जोजन करवा योग्य वस्तुना प्रकारनु, (उ-
 दनविहं के०) चावल प्रमुखनी धानसात्र प्रकारनु
 (के०) मन्त्र पत्र चावलना (नि

गयविह के०) घृत, तेल, दूध, दही, गोल आदि
 विगयना प्रकारनु (सागविह के०) नीलां पत्र.
 शाक, प्रमुखना प्रकारनु, (माहुरविह के०) मधुर
 पदार्थना प्रकारनु, (जिमणविह के०) जिमवानो
 विधि जे अमूक आहार जमवो तेना प्रकारनु (पा-
 णीविह के०) पाणी प्रमुख पीवाना प्रकारनु, (सु-
 खवासविह के०) सोपारी, लविंगाटिक मुखवास
 वस्तुना प्रकारनु, (वाहनिविहं के०) पगेपहेरवाना
 पगरखा प्रमुखना प्रकारनु, (वाहनविह के०)
 वाहनना प्रकारनु, (सयणविह के०) शय्या पलंग
 आदि सुवानी वस्तुना प्रकारनु (सचित्तविह के०)
 सचित्त वस्तु तेने खावाना प्रकारनु, (दधविहं के०)
 आज महारे अमूक अमूक आटलाज ड्रव्य खावा
 उपरात न खावां तेहना प्रकारनु, (इत्यादिकनु
 यथापरिमाण कीधु ठे के०) इत्यादि वस्तुनु जेम
 प्रमाण कीधु ठ, एटले फलाणी वस्तु मारे
 आज आटली खावी, के पीवी तथा फला-
 णी वस्तु आज एटली भोगववी इत्यादि,

(ते उपरांत के०) जे हृद कीधी ठे ते उपरांत,
 (उवजोग के०) जे वस्तु एक वार जोगववामां
 आवे ते, (परिजोग के०) जे वस्तु बारवार जोग
 ववामा आवे ते, (जोगनिमित्ते के०) जोगने कारणे,
 (जोगववापच्चक्राण के०) जोगववानी वधी, (जा-
 वजीगाए के०) ज्यां सुधी जीवु त्या सुधी, एगविहं
 तिविहेण न करेमि मणसा वयसा कायसा एहवा
 सातमा उवजोग परिजोग, (पुविहे के०) दोय प्रकारे,
 (पणत्ते के०) प्ररूप्या ठे, (तजहा के०) ते कहेठे,
 (जोगणाउय के०) एक जोजन सबधि, (कम्मउय
 के०) बीजु कर्म ते व्यापार सबधी जाणवु, तेमाथी
 (जोगणाउसमणोवासयाण के०) जोजन व्रत संबं-
 धिना श्रावकने (पंचअश्रयारा के०) पाच अतिचार
 छे, ते जाणियवा न समायरियवा (तजहा ते आ-
 लोउ के० ते जिम ठे तिम कहे ठे (सचित्ताहरे के०)
 सचित्त वस्तु खावी एटले वनस्पति आदिक काचुं
 फल खाय, (सचित्तपन्निवद्धाहारे के०) सचित्तनी
 साथे लागेली प्रतिवद्धित वस्तु एटले लीवमानो गुं-

(७२)

दर इत्यादिक सचित्त सहित वस्तु होय तेने अर्चित
जाणीने खाय, (अप्पोलिउसहि नरकणया के०)
अपमवैपधि ते जे वस्तुमां जीवना प्रदेश रहि गया
होय, एवी तत्कालनी वाटेली अथवा पीशेली वस्तु
प्रमुख, (दुप्पोलिउसहि नरकणिया के०) दु.पकोपधि
ते कांश्क काचीने कांश्क पाकी रही होय, जेने पूरुं
अग्नि प्रमुख शस्त्र नथी प्रणम्यु एवी वस्तुनो जोग
करे, (तुठोसहि नरकणया के०) ते खावुं थोरु अने
नाखी देवु घणु पने, एवी वस्तु जे सीताफल, शेलमी
प्रमुख ए पांच प्रकारनी वस्तु खाधी होय तो अति
चार लागे, ए जोजनथी पाच अतिचार कह्यो, हवे
(कम्मजण के०) व्यापारना, (समणोवासयाणं के०)
अमणोपासरु एटले श्रावकने (पनरसकम्मादाणाइ
के०) पन्नर प्रकारें कर्म श्राववाना स्थानकरूप पन्नर
अतिचार ठे, ते जाणियवानसमायरियवा (तजहा
ते आलोउ के० ते जेम ठे तेम आलोचु तु, (इगाल
कम्मे के०) अग्नितो व्यापार लोहकारादिकनु कर्म
कीधु होय, (वणकम्मे के०) वनना जाम वृद्ध क-

(७३)

पात्री व्यापार कीधो होय, (सामिकम्मे के०) गा-
मादिक करावीने वेच्या होय, धरी, उध प्रमुखनो
व्यापार कीधो होय (जामिकम्मे के०) गामां, घ-
रादिक, जंट, घोमा, वेळ प्रमुखना जामानो व्यापार
कीधो होय, (फोमिकम्मे के०) खाण खणाववी प-
छरा फोमाववा कर्पण करवु, इत्यादि पृथ्वीना पेट
फोमाववां, कूवा, वाव आदि कराववा सवधि कर्म
करयां होय, ए पांच कुकर्म, श्रावकने अत्यतपणे
वर्जवां, (दतवाणिज्ज के०) आगारमां जड हाथी-
दांत, नखला, कस्तूरी मृगचर्म, इत्यादि वस्तु लेवी,
ते दांतनु वाणिज्य एटले व्यापार कीधो होय, (लस्क
वाणिज्ज के०) लाखनो व्यापार करवो, (रसवाणिज्ज
के० द्विपद चउप्पदजीवोनो व्यापार करवो, (विस-
वाणिज्ज के०) विष जे जेर, लोह, हथीयार, प्रमुख
जीवघातक वस्तुनो व्यापार कीधो होय, ए पांच
कुवाणिज्य श्रावकने वर्जवां, (जंतपित्तणकम्मे के०)
घाणी, उखल, मुशल, घटो प्रमुखनो व्यापार, (नि-
ठणकम्मे के०) बलदादिकने शंकाववा, मां

(१४)

राववा, खांसी कराववी (दवग्गिदावणया के०) दव
 देवा, देवराववा, (सर के०) सरोवर, (दह के०)
 डह, कुरु (तलाय के०) तलावना पाणीने, परिसो-
 सणया के०) समस्त प्रकारे शोपाव्यु होय (अस
 झण पोसणया के०) कुर्कुट, श्वान, माजारादिक
 हिसक जीवने पोण्या होय तथा डुराचारी दासदा
 सी प्रमुखनु पोषण करयुं होय, ते असती जन पोषण
 कहिये, ए पांच सामान्य कर्म निश्चे वर्जवां, (तस्स
 मिहामि दुक्कम के०) तेनु दुष्कृत एटले पाप महारु
 निष्फल थारु ॥ १४ ॥

८ आठमुं अनर्थदम विरमण व्रत. ते चउ-
 विहे, अण्ठादंमे, पसुत्ते, त जहा, अवद्याणा-
 यरिए, पमायायरिए, हिंसप्पयाणे, पावकम्मो-
 वएसे, एहवा अनर्थदड सेववा पच्चस्काण,
 तेमां आठ आगार आयेवा रायवा नायवा
 परीवारैवा देवेवा नागेवा जपेवा जुयेवा जाव-
 जीवाए, दुविह, तिविहेण, न करेमि, न

कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवा
 आठमा अनर्थदंरु विरमण व्रतना पंच अश्-
 यारा, जाणियवा, न समायरियवा, तं जहा ते
 आलोउं, कदप्पे, कुकुइए, मोहरिए, संजुत्ता-
 हिगरणे, उवजोगपरिजोग अइरत्ते, तस्स मि-
 ङ्गामि डक्करु ॥ १५ ॥ इति ॥

अर्थ - आठमु (अनर्थदंरु के०) जे अर्थ वि-
 ना कर्मबंधना कारण सेववा, कारण विना आत्माने
 दंभाववो ते अनर्थदंरु कह्यीये तेथकि (वीरमण के०)
 निवर्त्तवु ते अनर्थदंरु, विरमण व्रत कह्यीये ते (अ-
 णठादंरु के०) अनर्थ दंरु, (चउविहे के०) चार
 प्रकारे (पण्णते के०) प्ररूप्यो, कह्यो (त जहा के०)
 ते जिम ठे तिम कहे ठे, (अवज्जाणायरिए के०)
 अपध्यानाचरित ते खोडु ध्यान धरवु. माठी चितव-
 णा करवी, (पमायायरिए के०) होरु करवी, वि-
 कथा करवी, खेल कराववा, सर्व रात्रिये सुइ रहेवु,
 धी तैलादिकनां ठाम उघामा राखवा ते प्रमादाच-
 रित, (हिसप्पयाणे के०) जे थकी हिंसा थाय

हवा कोश कोदाल प्रमुख शस्त्र आपवा, ते हिंसप्रदान, (पावकम्मोएसे के०) वल्लद समराववो, खेतर खेमो, गामी जेमो, इत्यादि पाप कर्मनो उपदेश अर्थ विना करवो, ते हिंसप्रदान एहवा अनर्थ दंरु सेरवा पञ्चस्काण, जावजीवाए, छुविह, तिक्किहेण, न करेमि, न कारवमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवा, आठमा अनर्थदंरुपरिमणनतना पच अइयारा, जाणियवा न समायरियवा, तं जहा, ते आलोउ (कदप्पे के०) जे थकी काम वृद्धि थाय एहवी वात कीधी होय, (कुक्कुइए के०) ज्ञामनी पेरें कुचेष्टा कीधी होय, (मोहरिए के०) मोखर्य ने वाचालपणे जेम तेम घोड्यो होय, पारकी तात कीरी होय, (सजुत्ताहिगरणे के०) उखल, मुशलादिक अधिकरण एकठां करी मूम्या होय, (उवज्जोगपरिजोग अइरत्ते के०) उपजोग परिजोगमा अतिरक्त रहे, एटले जोगविलासमां बहु मची रह्या होश्यें, (तस्स मिठामि दुक्कम के०) तेनु पाप मने निष्फल थाजो ॥ १५ ॥ इति ॥

नवमुं सामायिक व्रत, सावज्ज जोगनुं, वेरमणं,
जावनियमं, पज्जुवासामि, ड्विहं तिविहेणं न
करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा,
करंतं नाणु, जाणइ, वयसा, कायसा, एहवी
सद्दहणा, परूपणा, करिये तिवारे फरसनाये
करी शुद्ध, एहवा नवमा सामायिक व्रतना पंच
अइयारा, जाणियवा, न समायरियवा, तं जहा,
ते आलोउं, मणदुप्पणिहाणे, वयडप्पणिहाणे
कायदुप्पणिहाणे, सामाइयस्स सइविद्वणेअक
रण्याए, सामाइयस्स, अणवुठियस्स करण-
याए, तस्स मिच्चामि दुक्कमं ॥ १६ ॥ इति ॥

अर्थ - नवमुं (सामायिक व्रत के०) समतारूप
सामायिकनुं व्रत, (सावज्ज जोगनुं के०) सावध्य जे
पाप तेणे करी सहित एवा मनादि योग तेनु (वेर-
मणं के०) निवर्त्तवु, (जावनियम के०) ज्या सुधी
सामायिकनी नियम एटले मर्यादा कीधीठे त्यां सुधी,

(पङ्गुवातामि के०) शुभ्र जोगने पर्युपासुं एटखे
 सेबु, (दुग्धि तिबिह्णेण न करेमि न कारवेमि मण-
 सा वयसा कायसा करत नाणुजाणाड, वयसा
 कायसा, एह्वी (सद्वहणा के०) श्रद्धा, रुचि,
 प्ररूपणा, करिये त्थारें फरसनायें करी शुद्ध, एहवा
 नवमा सामायिक व्रतना, पच अद्यारा, जाणियवा,
 न समायरियवा, त जहा, ते आलोउ (मणदुप्प-
 णिहाणे के०) सामायिक कीधु ठे तेमा मन मातुं
 वर्त्ताव्यु होय, (वयदुप्पणिहाणे के०) वचन मातुं
 वर्त्ताव्यु होय, (कायदुप्पणिहाणे के०) काया माठी
 प्रवर्त्तावी होय, (सामाश्यस्ससड्विहुणे अकरणि-
 याए के०) सामायिकने वरावर कीधु के नही?
 तेनी खवर न रही, ते सड्विहुणे एटखे स्मृतिहीन
 अतिचार, (सामाश्यस्स के०) सामायिकने (अ-
 णवुत्थियस्स करणयाए के०) पुरु थया विना पाखुं
 होय, ते अनवस्था दोष नामे पाचमो अतिचार
 जाणवो (तस्स मित्रामि डुक्कम के०) तेनु पाप मने
 निष्फल थाजो ॥ १६ ॥

૧૦ દશમું દેસાવગાસિક વ્રત, દિનપ્રત્તે પ્રજાતથકી પ્રારંજીને પૂર્વાદિકઠદિશે જેટલી જૂમિકા મોકલી રાખી છે, તે ઉપરાંત, સફ્તાયે, કાયાયે, જફ્ને, પાંચ આશ્રવ સેવવા પચ્ચસ્કા-
 ણ, જાવ અહોરત્તં, હવિહં, તિવિદેણં, ન કરે-
 મિ, ન કારવેમિ, મણસા, વયસા, કાયસા ક-
 રંતં નાણુજાણિજ્ઞા, વયસા, કાયસા, જેટલી
 જૂમિકા મોકલી રાખી છે, તેમાંહિજ જે ક્વ્યા-
 દિકની મર્યાદા કીધી છે, તેજોગવવી તે ઉપ-
 રાંત, ઉવજોગ, પરિજોગ, જોગનિમિત્તે, જોગ-
 વવા પચ્ચસ્કાણ, જાવઅહોરત્તં, એગવિહં, તિવિ-
 દેણં, ન કરેમિ, નકારવેમિ, મણસા, વયસા,
 કાયસા, એહવા દશમા દેશાવકાશિક વ્રતના,
 પંચ અફ્યારા જાણિયદ્વા, ન સમાયરિયદ્વા, તં
 જહા, તે આલોઝં, આણવણપ્પત્તંગે, પેસવણ
 પ્પત્તંગે, સદાણુવાફ, રૂવાણુવાફ, વહિયા

લપસ્કેવે, તસ્સ મિત્થામિ દુક્કમં ॥૧૭॥ इति॥

अर्थ - दशमू (दसावगासिक व्रत के०) देश-
 थकी दिशाउनो अवकाश करवो सक्केपवो तेमज सर्वे
 व्रतोना नियम सक्केपवा एटले प्रथम घणी ठूट राखी
 होय ते प्रतिदिवसे सक्केपीने थोमी ठूट राखवी ते
 संबंधी व्रत ते दिनप्रत्ये प्रज्ञातथकी प्रारब्धीने ठदिशें
 जेटली जूमिका मोकली राखी ठे एटले सवारमा
 उઠીને માન કશું ઠે કે આજ મ્હારે દરેક દિશાયે
 આટલા ગાઝ ઉપરાત જાવું નહીં ? તે ઉપરાંત (સ-
 ઇત્થાક કે०) પોતાની ઇચ્છાયે કરી કાયાયે જઈને જીવ
 હિંસાદિક પાંચ આશ્રવ, સેવવાના પંચસ્કાણ (જાવ
 અહોરત્ત કે०) યાવત્ દિવસ ને રાત્રિ સુધી, હુવિહ,
 તિવિહેણ, ન કરેમિ, ન કારવેમિ, મણસા, વયસા,
 કાયસા, કરત નાણુજાણિક્કા, વયસા કાયસા, એવી
 રીતે કરેલા ઠે તિહા જેટલી જૂમિકા મોકલી રાખી
 ઠે, તેમાહી જે ડ્રવ્યાદિકની મર્યાદા કીધી ઠે, કે
 આજ મ્હારે એટલા પદાર્થ ઉપજોગમાં લેવા તે ઉ-
 પરાંત ઉવજોગ પરિજોગ એહવાં વે પ્રકારે જોગયો-

ग्य वस्तुने जोगनिमित्तें जोगनी इच्छाएं जोगववाना
 पञ्चस्काण (जावअहोरत्तं के०) यावत् एक दिवसरात्रि
 सुधी (एगविह के०) एक करणे, अने (तिविहेणं
 के०) त्रण जोगें, करी नकरेमि नकारवेमि, मणसा,
 वयसा, कायसा, एवी रीतें पञ्चस्काण करथांठे एहवा
 दशमा देशावकाशिक व्रतना पंच अड्यारा, जाणि-
 यवा, न समायरियवा, तं जहा, ते आलोउ (आण-
 वणप्पउंगे के०) प्रमाण करेली जूमिथी वांहरिली
 जूमियें कोइ जनार माणसनी हस्तक कोइ पदार्थनु
 आनयन एटले मगाववुं ते प्रथम आनयन प्रयोग-
 नामा अतिचार जाणवो (पेसवणप्पउंगे के०) प्र-
 माण करेली जूमिथी उपरांत कोइ चाकर मोकलीने
 वस्तु मगाववी क्रयविक्रयनो आदेश देवो ते बीजो
 प्रेयवण प्रयोगातिचार (सदाणुवाइ के०) सादनो
 उपाय ते कोइ माणसने खुखारोकरीने हृद उपरांत-
 थी बोलाववो ते शब्दानुपाति अतिचार, (रुवाणु-
 वाइ के०) पोतानुं रूप देखामोने कोईने बोलावे,
 (वहियापुग्गलपस्केवे के०) निमेली जूमिकाथी

वाहिर रहेला पुढपने कांकरादिक नांखी बोलाये, ते पांचसो पुज्जवप्रक्षेपातिचार, ए पाच अतिचारमांहे कोइ अतिचार दोष लाग्यो होय तो (तस्त मिठामि डुक्कम के०) तेनु पाप मने निष्फळ थाजो ॥ १७ ॥ इति ॥

११ इग्यारमु पोषध व्रत, असणं, पाणं, खाश्मं, साश्मनुं पच्चस्काण, अवञ्जनु पच्चस्काण, अमुक मणिसुवर्णनु पच्चस्काण, मात्ता-वन्नग विक्षेपणनुं पच्चस्काण, सत्त मुसत्तादिक सावज्ज जोगनुं पच्चस्काण, जावअहोरत्तं पङ्कुवासामि डुविहं, तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, करंतं नाणुजाणइ, वयसा, कायसा, एहवी सदहणा, परूपणा करीयें, तेवारे फरसनायें करी शुद्ध, एहवा इग्यारमा पणिपुत्त पोषध व्रतना, पंच अइयारा, जाणियवा न समायरियवा, त जहा ते आलो-

(७३)

उं, अप्पन्निजेहिय डुप्पन्निजेहिय सिद्धासंथा-
रण, अप्पमड्डिय डुप्पमड्डिय सिद्धा संथा-
रण, अप्पन्निजेहिय, डुप्पन्निजेहिय उच्चारपास-
वणञ्जूमि, अप्पमड्डिय डुप्पमड्डिय उच्चार
पासवणञ्जूमि, पोसहस्स सम्मं अण्णुपालण-
या, तस्स मित्रामि दुक्कं ॥ १८ ॥ इति ॥

अर्थ - इग्यारमुं (पोषधव्रत के०) पाप रहित
थइ, संवरे करी आत्माने पोषवो ते संबंधि व्रत ते
चार प्रकारे ठे, (असण के०) अन्न, (पाणं के०)
पाणी, (खाइम के०) मेवानी जात, (साइमनुके०)
मुखवात्स सोपारी लविंग प्रमुख खावानु (पञ्चखा
ण के०) निषेधुं ते प्रथम चार प्रकारें आहार प-
रिहार पोसह तथा (अथज्जनुं पञ्चखाण के०) अ-
ब्रह्मचर्यनी बंधी, ते बीजु ब्रह्मचर्यपोससह (अमुक
के०) जे आन्नरण सुखें उतारयां न उतरे ते मूकीने
उपरांत, (मणि के०) हिरा प्रमुख, (सुवर्ण के०)
सुवर्ण प्रमुखना आन्नरण राखवानी (पञ्चखाण के०)

वधी तथा (मालावन्नग के०) गुलावनां फूल आ-
दिकनी मालानु अने वन्नग एटले वर्णक वस्तु ते
अवीर, गुलाल, अलतादिक जाणवा. (विलेपणनुं के०)
विलेपन करवानु पञ्चस्काण ते त्रीजो शरीर सत्कार
परिहार पोसह तथा (सद्य के०) शस्त्र, हथोयार
(मुसल्लादिक के०) आयुध, लाकनी, सांवेलांवगेरे,
सावळा जोगनु पञ्चस्वाण एटले पापिष्ठ काम कर-
वानी वधी, ते चोथो सर्व सावध्ययोग व्यापार परि-
हार पोसह एवु व्रत (जाव अहोरत्त के०) जाव
रात्रि दिवस सुधी, (पङ्कवातामि के०) हु पर्युपासुं
एटले सेवुं आचरु, दुविह, तिविहेण, न करेमि, न
कारुवेमि, मणसा, वयसा कायसा, करत नाणुजा-
णइ, वयसा, कायसा, एहवी, (सहहणा के०) ए
करवानी श्रद्धा धाय, (परूपणा करीयें के०) वात
करीयें ते वारे फरसनायें करी शुद्ध एटले ते वखत
शक्ति मुजव शुद्ध होजो, एहवा इग्यारमा (पक्कि-
पुण के०) प्रतिपूर्ण एटले आदिथी अत पर्यंत सम-
ताजावें सपूर्ण एवु (पोषधव्रतना के०) धर्मध्याने

तथा संवरें करी आत्माने पोषवानुं व्रत तेना, पंच
 अश्वारा, जाणियवा, न समायरियवा, तं जहा ते
 आलोउ (अप्पमिलेहियदुप्पमिलेहिय सिजा सथा-
 रए के०) पाट प्रमुख शय्या तथा पथारीने, ए सद्या
 सथाराने अप्रतिलेपित एटले वरावर प्रतिलेख्यां न
 होय अने प्रतिलेख्या तो कांश्क प्रतिलेख्यां एटले
 कांश् जोया कांश् न जोया ते प्रथम अप्रतिलेपित
 सद्यासथारातिचार (अप्पमज्जिय दुप्पमज्जिय सिजा
 सथारए के०) सद्या सथाराने प्रमाज्यो न होय
 अथवा प्रमाज्यो तो काश् पुज्या प्रमाज्यो काश् न
 प्रमाज्यो एम यद्वा तद्वा पुजे, ते वीजो अप्रमाज्जित
 दु.प्रमाज्जितसद्या सथार अतिचार (अप्पमिलेहिये
 दुप्पमिलेहिय उच्चारपासवण नूमि के०) एवी रीतेज
 वमीनीत, लघुनीत परठवानी नूमिका तेनो वीजो
 अतिचार जाणवो, तथा (अप्रतिलेपितदुप्रतिलेपित
 अप्पमज्जिय दुप्पमज्जिय उच्चार पासवणनूमि के०)
 वमीनीत लघुनीत परठवानी नूमिका, पुजी नही
 अथवा कांश् पुंजी कांश् नही पुजी ते चोथो अति-

चार तथा (पोसहस्स के०) पोसह कीधी ठे तेने
 (सम्मं के०) सम्यक् प्रकारें एटले रूमे प्रकारें
 (अण्णु पालण्या के०) अनुपालना कीधी न होय
 पोसहमां नोजनादिक चिंता कीधी होय, जे क्यारे
 पोसह पूर्ण थासे थने क्यारे हु नोजन करीश ?
 इत्यादिक पाचमो अतिचार जाणवो ए पांच अति-
 चार माहेलो जे कोइ अतिचार लाग्यो होय (तस्स
 मिद्धामिदुक्कम के०) तेनु कीधेलु पाप मने निष्फल
 थाजो ॥ जाता तीन वार आवस्सही न कीधी होय,
 आवता तीन वार नितही न कीधी होय, थोमी
 जायगा पुजी होय, धणी जायगा न पूजी होय का-
 जो परठिने तीनवार वोसिरे वोसिरे न कीधी होय,
 परठवता जूमिना धणीनी आझा न मागी होय, पो-
 सहमा निद्रा विकथादिक प्रमाद सेव्यो होय, तस्स
 मिद्धामि दुक्कम ॥ १७ ॥ इति ॥

१२ वारमं अतिथि सविज्जागव्रत, समणे नि-
 ग्गंथे, फासुअं एसणिज्जेणं, असण, पाणं, खा-

ફમં, સાફમેણં, વઢ, પન્નિગ્ગહ, કંબલ, પાયપુ-
 પુઢણેણં, પાહિદારિય, પીડ, ફલગ, સિફ્ફા-
 સંથારણં, ઝંસદ્દ જેસજ્જેણ, પન્નિલાજેમાણે, વિ-
 હરામિ, એદ્દવી સદ્દહણા, પરૂપણા, ફરસનાયે
 કરી શુદ્ધ, એદ્દવા વારમા અતિથિ સંવિજ્ઞાગ
 વતના, પંચ અફ્યારા જાણિયદ્દા, ન સમાયરિ-
 યદ્દા, તં જહા તે આલોઝ, સચિત્તનિસ્કેવણિ-
 યા, સચિત્તપિહણિયા, કાલાફ્ફમ, પરોવણેસે,
 મઢરિયાણ, તસ્સ મિઢામિ હુક્કમં ॥ ૧૯ ॥ ઇતિ ॥

અર્થ - વારમું (અતિથિ કે) જેને તિથિનું ત-
 હેવારનું કાફ મુકરર નથી જે અમુક તિથિયે અથવા
 અમુક તહેવારને દિવસે અહાર લેવા આવશે, પરંતુ
 અણચિંત્યા આવે એદ્દવા સાધને વાસ્તે, (સંવિજ્ઞાગ વ્રત
 કે) પોતાના માટે નીપજાવેલા આહારમાંથી સંવિજ્ઞાગ
 કરવો તેનુવ્રત એટલે આહાર કરતી વખત ચિંતવણા
 કરવી જે (સમણેનિગ્ગથે કે) સાધુ નિર્બ્રથને,
 (ફાસુઅં કે) પ્રાણુક એટલે અચિત્ત (એસણિજ્જેણં

के०) सूजतुं एटले दोष रहित साधुने कटपे एवं
 (असणं के०) अन्न, (पाणके०) पाणी, (खाइमं
 के०) मेवो सुखनी प्रमुख, (साइमेणं के०) स्वा-
 दिम ते मुखवास, ए चार प्रकारनो आहार तेमज
 बीजां पण साधुने खपवायोग्य वस्तुनां नाम कहेठे
 वच्च के०) वस्त्र, (पणिग्गह के०) पात्र, (कवल के०)
 कांवली, (पायपुष्ठणेण के०) पगने लूठवानु पोठणुं
 (पाणिहारिय के०) जे वस्तु साधुने आपीने पाठी
 लेवाय तेवी वस्तु ते कहे ठे, (पीड के०) वाजोठ
 (फलग के०) पाटीयु (सिज्जा के०) वस्ती, पाट,
 स्थानक (सथारएणं के०) तूण प्रमुखनी पथारी,
 (उसह के०) एक वस्तु ते औपध, (जेसङ्केणंके०)
 घणी वस्तु मलवार्थी थयेलां एवी गोली वगेर औ-
 पधो तेने (पमिलानेमाणे के०) प्रतिलाज्ज थकां,
 आपता थकां (विहरामि के०) विचरशु, (एहवी
 सहहणा के०) श्रद्धा (परूपणा के०) उपदेश फ-
 रसनाये करी शुद्ध एहवा चारमा अतिथिसंविज्ञाग
 व्रतना पच अइयारा, जाणियवा, न समायरियवा,

(७९)

तं जहा ते आलोउं, (सचित्तनिखेवणिया के०)
 साधुनी गोचरीनी बेलायें, आपवा योग्य सूजती
 वस्तु होय तेने बीजी सचित्त वस्तुनी उपर राखी
 होय (सचित्तपहणिया के०) आपवा योग्य अचित्त
 वस्तु होय, तेने सचित्त वस्तुयें करी ढांकी मूकी
 होय (कालाङ्कमे के०) कालातिक्रम ते साधुने
 बहोरवानो वखत टालीने पठी अन्नपाननी निमंत्र-
 णा करी होय (परोवएसे के०) दान देवा योग्य
 वस्तु पोतानी होय तेम ठतां तेने न देवानी बुद्धियें
 पारकी कही होय, (मधुरियाए के०) ईर्ष्याथी अ-
 नेरानु दान देखी तेनी स्पर्द्धाये दान दीधु होय
 (तस्स मिद्वामि डुक्कम के०) तेनु लागेलु पाप मने
 निष्फल थाजो ॥ १९ ॥ इति ॥

पीठें “ सलेपणा ” को पाठ कहीजे, ते कहे ठे:-
 अपह्निम मरणांतिय सलेहणा, कूसणा, आ-
 राहणा, पोषधशाला, पूजीने, उच्चार पासवण
 भूमिका, पम्हिलेहीने, गमणागमणे पम्हिकमि-
 ने, दर्जादिक संथारा संथारीने, दर्जादिक सं-

के०) सूजतुं एटले दोष रहित साधुने कट्ये एवं
 (अक्षणं के०) अन्न, (पाणं के०) पाणी, (खाश्म
 के०) मेवो सुखनी प्रमुख, (साश्मेण के०) स्वा-
 दिम ते मुखवास, ए चार प्रकारनो आहार तेमज
 बीजां पण साधुने खपवायोग्य वस्तुनां नाम कहेठे.
 वस्त्र के०) वस्त्र, (पणिग्गह के०) पात्र, (कवल के०)
 कांवली, (पायपुष्ठणेण के०) पगने लूठवानु पोठणु
 (पान्हिरिय के०) जे वस्तु साधुने आपीने पाठी
 लेवाय तेवी वस्तु ते कहे ठे, (पीड के०) बाजोठ
 (फलग के०) पाटीयु (सिज्ज के०) वस्ती, पाट,
 स्थानक (सथारणं के०) तूण प्रमुखनी पथारी,
 (उसह के०) एक वस्तु ते औपध, (नेसजेणं के०)
 घणी वस्तु मलवाथी थयेला एवी गोली वगेर औ-
 पधो तेने (पमिलानेमाणे के०) प्रतिलाज्ज थकां,
 आपतां थकां (विहरामि के०) विचरशु, (एहवी
 सद्वहणा के०) श्रद्धा (परूपणा के०) उपदेश फ-
 रसनायें करी शुद्ध एहवा वारमा अतिथिसविज्जाग
 व्रतना पच अश्यारा, जाणियवा, न समायरियवा,

(७ए)

त जहा ते आलोउ, (सचित्तनिस्केवणिया के०)
 साधुनी गोचरीनी वेलायें, आपवा योग्य सूजती
 वस्तु होय तेने वीजी सचित्त वस्तुनी उपर राखी
 होय (सचित्तापहणिया के०) आपवा योग्य अचित्त
 वस्तु होय, तेने सचित्त वस्तुयें करी ढांकी मूकी
 होय (कालाङ्कमे के०) कालातिक्रम ते साधुने
 वहोरवानो वखत टालीने पठी अन्नपाननी निमन्त्र-
 णा करी होय (परोवएसे के०) दान देवा योग्य
 वस्तु पोतानी होय तेम ठतां तेने न देवानी बुद्धियें
 पारकी कही होय, (मधुरियाए के०) ईर्ष्यायी अ-
 नेरानु दान देखी तेनी स्पर्द्धायें दान दीधु होय
 (तस्स मिठामि डुक्कम के०) तेनु लागेबु पाप मने
 निष्फल थाजो ॥ १ए ॥ इति ॥

पीठें “ सलेपणा ” को पाठ कहीजे, ते कहे ठे -
 अपन्निम मरणांतिय सलेहणा, छूसणा, आ-
 राहणा, पोषधशाला, पूंजीने, उच्चार पासवण
 जूमिका, पम्बिलेहीने, गमणागमणे पम्बिकमि-
 ने, दर्जादिक संथारा संथारीने, दर्जादिक सं-

के०) सूजतुं एटले दोष रहित साधुने कदपे एवं
 (अक्षयं के०) अन्न, (पाणके०) पाणी, (खाश्मं
 के०) मेवो सुखमी प्रमुख, (साश्मेणं के०) स्वा-
 दिम ते मुखवास, ए चार प्रकारनो आहार तेमज
 बीजा पण साधुने खपवायोग्य वस्तुना नाम कहेठे.
 वस्त्र के०) वस्त्र, (पणिगह के०) पात्र, (कवच के०)
 कावली, (पायपुष्पणेण के०) पगने लूठवानु पोठणुं
 (पाणिहारिय के०) जे वस्तु साधुने आपीने पाठी
 लेवाय तेवी वस्तु ते कहे ठे, (पीड के०) बाजोठ
 (फलग के०) पाटीयु (सिज्ज के०) वस्ती, पाट,
 स्थानक (संथारण के०) तूण प्रमुखनी पथारी,
 (उत्तह के०) एक वस्तु ते औपध, (जेसङ्केणके०)
 घणी वस्तु मलवार्थी थयेला एवी गोली वगेर औ-
 पधो तेने (पमिलानेमाणे के०) प्रतिलान्न थकां,
 आपता थकां (विहरामि के०) विचरशु, (एहवी
 सदहणा के०) श्रद्धा (परूपणा के०) उपदेश फ-
 रसनायें करी शुद्ध एहवा वारमा अतिथिसविज्ञाग
 व्रतना पंच अश्वारा, जाणियवा, न समायरियवा,

रेमि, न कारवेमि, करतंपि नाणुजाणामि, मण-
 सा, वयसा, कायसा. एम अदारे पाप स्थानक
 पच्चस्कीने, सव्वं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं,
 चउव्विदंपि आहारं, पच्चस्कामि, जावजीवाए.
 एम चारे आदार पच्चस्कीने, जपीय, इमं सरीर
 इठं, कंत, पियं, मणुलं, मणाम, धिज्जं, विसा-
 सियं, समयं, अणुमय, बहुमय, जंमकरंम-
 माणं, रयणकरंमगज्जूयं, माणसिय, माणं उन्हं,
 माणं खूहा, माणं पीवासा, माणं बाला, माणं
 चोरा, माण दंसा, माणं मसगा, माणं वाहियं,
 पित्तियं, कप्फियं संजीमं, सन्निवाहियं, विवहा-
 रोगायका, परिसदा, लवसग्गा, फासा फुसंति,
 एवं पीयण चरिमेहि, उस्सास निस्सामेहि, वो-
 सिरामि, त्ति कट्ठु. एम शरीर वोसिरावीने, कालं
 अणवकंखमाणे, विहरामि, एद्वी सद्वहणा प-
 णपणा करिये, तिवारे फरसनाये करी शुद्ध,

थारो डुरुहिने, पूर्व तथा उत्तरदिशि, पट्यंका-
 दिक आसणें वेसीने करयल संपरिगगहियं,
 सिरसावत्तं, मन्त्रए अंजली, ति कहु, एव वया-
 सी नमोऽर्चणं, अरिदंताणं, जगवंताणं, जाव-
 संपत्ताण, एम अनंता सिद्धजीने नमस्कार क-
 रीने, जयवंता वर्त्तमान तीर्थकरने नमस्कार क-
 रीने, पोताना धर्माचार्यने नमस्कार करीने, साधु
 प्रमुख चारे तीर्थ खमावीने, सर्व जीवराशि
 खमावीने, पूर्वे जे व्रत आदरचां वे, तेना जे
 अतिचार दोष लाग्या होय, ते सर्वने आलोइ
 पम्किमी, निंदी, निःशक्य थईने, सव्वं पाणाइ-
 वायं पच्चस्कामि, सव्वं मुसावायं पच्चस्कामि, सव्वं
 अदिज्ञादाणं पच्चस्कामि, सव्वं मेहुणं पच्चस्का-
 मि, सव्वं परिगगहं पच्चस्कामि, सव्वं कोहं माणं
 जाव मित्रा दंसण सद्धं, सव्वं अकरणिज्जं पच्च-
 स्कामि, जावजीवाए तिविदं, तिविहेणं, न क-

रेमि, न कारवेमि, करतंपि नाणुजाणामि, मण-
 सा, वयसा, कायसा एम अठारे पाप स्थानक
 पच्चस्कीने, सव्वं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं,
 चउद्विदंपि आहारं, पच्चस्कामि, जावजीवाए.
 एम चारे आहार पच्चस्कीने, जंपीय, इमं सरीर
 इठं, कंतं, पियं, मणुअं, मणामं, धिज्जा, विसा-
 सियं, समयं, अणुमय, बहुमय, जंरुकरंरुस-
 माणं, रयणकरंरुगज्जूयं, माणसियं, माणं उन्दं,
 माणं खूहा, माणं पीवासा, माणं वाढा, माणं
 चोरा, माणं दंसा, माणं मसगा, माण वाहियं,
 पित्तियं, कप्फियं संज्जीम, सन्निवाहियं, विवहा-
 रोगायका, परिसद्धा, उवसग्गा, फासा फुसंति,
 एवं पीयण चरिमेहिं, उस्सास निस्सामेहि, वो-
 सिरामि, त्ति कहु. एम शरीर वोसिरावीने, कालं
 अणवकंखमाणे, विहरामि, एद्वी सददणा प-
 णपणा करिये, तिवारे फरसनाये करी शुद्ध,

આરો ડુરુહિને, પૂર્વ તથા ઉત્તરદિશિ, પટ્યંકા-
 દિક આસણે વેસીને કરચલ સંપરિગ્ગહિયં,
 સિરસાવત્તં, મઢ્ઠા અંજલી, તિ કદ્દુ, એવ વયા-
 સી નમોહુણ, અરિહંતાણં, જગવંતાણં, જાવ-
 સંપત્તાણ, એમ અનંતા સિદ્ધજીને નમસ્કાર ક-
 રીને, જયવંતા વર્તમાન તીર્થકરને નમસ્કાર ક-
 રીને, પોતાના ધર્માચાર્યને નમસ્કાર કરીને, સાધુ
 પ્રમુખ ચારે તીર્થ સ્વમાવીને, સર્વ જીવરાશિ
 સ્વમાવીને, પૂર્વે જે વ્રત આદરયા છે, તેના જે
 અતિચાર દોષ લાગ્યા હોય, તે સર્વને આલોઈ
 પશ્ચિમી, નિદી, નિશ્વય થઈને, સઘં પાણાશ્-
 વાયં પચ્ચસ્કામિ, સઘં મુસાવાયં પચ્ચસ્કામિ, સઘં
 અદિન્નાદાણં પચ્ચસ્કામિ, સઘં મેહુણ પચ્ચસ્કા-
 મિ, સઘં પરિગ્ગહં પચ્ચસ્કામિ, સઘં કોહં માણં
 જાવ મિઠ્ઠા દંસણ સહ્ણં, સઘં અકરણિજ્ઞં પચ્ચ-
 સ્કામિ, જાવજીવાણ તિવિદં, તિવિદેણં, ન ક-

(९३)

मणे के०) जातां आवतां कोइ जीव चंपाणो होय
तेने, (पम्किमिने के०) पम्किमिने (दर्जादिक
संथारो के०) माज वगेरेनो संथारो, (संथारीनेके०)
संथारीने, (दर्जादिक संथारो के०) माजप्रमुखनी
पथारी उपर, (डुरुहिने के०) वेसीने, (पूर्व तथा
उत्तरदिशि के०) पूर्व अथवा उत्तर दिशा तरफ,
(पढ्यकादिक के०) पलोठी वगेरे जेवी पोतानी
शक्ति हुवे तेवा, (आसणेवेसीने के०) आसने वे-
सीने पठी (करयल के०) वे हाथ, (सपरिगगहि
थ के०) जोमीने, (सिरसावत्त के०) मस्तकें आ-
वर्त्तन करीने, (मठए अजली त्त कट्टु के०) माथा
उपर वे हाथ जोमेला राखी, (एव वयासी के०)
एम कहे जे, (नमुठुणं के०) नमस्कार हो, (अ-
रिहताण के०) श्री अरिहतने, (जगवताण के०)
जगवतने, (जावसपत्ताण के०) यावत् सपत्ताणं
एटले मुक्तिने पाम्या त्यां सुधिनो पाठ जे सामा-
यिकने अते ठे तेटलो कहेवो, एम अनता सिद्धजीने
नमस्कार करीने पठी पोताना वर्माचार्यने नमस्कार

एहवा अपठिम मरणांतिय, संखेहणा, फूसणा,
 आराहणाना पंच अइयारा, पयाला जाणियवा,
 न समायरियवा. तं जहा ते आलोउं, इहलोगा
 संसप्पन्गे, परलोगासंसप्पन्गे, जीवियासस-
 प्पन्गे, मरणाससप्पन्गे, काम जोगासंसप्पन्-
 गे, तस्स मित्रामि दुक्कमं ॥ २० ॥ इति ॥

अर्थ -(अपठिममरणांतिय के०) अपठिम
 मरणांतिक एटले पठी कांइ नथी करवुं, एवु जे
 मरण ते पन्तिमरण कहियें, ते पन्तिमरणनी अत्ते
 (संखेहणा के०) संखेपणा करवी अनरान करवुं
 आहारकपाय पातला करवा, (फूसणा के०) आ-
 त्माने फूसीने, (आराहणा के०) आराधना करीने,
 (पोषधसाला के०) सथारो करीये ते स्थानकने,
 (पुजीने के०) पुजी पन्तिहने, (उच्चार के०)
 वनीनीत, (पासवण के०) लघुनीतनी (जूमिका
 के०) जूमिका जे तेने (पन्तिहने के०) प्रति-
 लेखी एटले जंतुप्रमुखने नजरें जोइने, (गमणाग-

मणै के०) जातां आवता कोइ जीव चंपाणो होय
तेने, (पम्किमिने के०) पम्किमिने (दर्जादिक
संथारो के०) माज्न वगेरेनो संथारो, (सथारीनेके०)
संथारीने, (दर्जादिक संथारो के०) माज्नप्रमुखनी
पथारी उपर, (डुरुहिने के०) वेसीने, (पूर्व तथा
उत्तरदिशि के०) पूर्व अथवा उत्तर दिशा तरफ,
(पढ्यकादिक के०) पलौंठी वगेरे जेवी पोतानी
शक्ति हुवे तेवा, (आसणेवेसीने के०) आसने वे-
सीने पठी (करयल के०) वे हाथ, (संपरिगगहि
थ के०) जोकीने, (सिरसावत्त के०) मस्तके आ-
वर्त्तन करीने, (मद्यए अंजली त्त कट्टु के०) माथा
उपर वे हाथ जोकेला राखी, (एव वयासी के०)
एम कहे जे, (नमुटुणं के०) नमस्कार हो, (अ-
रिहताणं के०) श्री अरिहतने, (जगवताण के०)
जगवतने, (जावसपत्ताण के०) यावत् सपत्ताणं
एटले मुक्तिने पाम्या. त्यां सुधिनो पाठ जे सामा-
यिकने अतें ठे तेटलो कहेवो, एम अनता सिद्धजीने
नमस्कार करीने पठी पोताना धर्माचार्यने नमस्कार

करीने, साधु, साधवी, श्रावक, श्राविकारूप चारे
 तीर्थने खमावीने, सर्व जीवराजि खमावीने, पूर्वे जे
 व्रत आदरया ठे, तेनां जे अतिचार दोष लागा होय
 ते सर्व सज्जारी सज्जारीने गुर्वादिक पासे (आलोक्ष
 के०) प्रकाशी तेथी (पञ्चमि के०) निवृत्तिने
 (निदी के०) तेनी आत्मानी सारे निंदा करीने,
 (नि गह्वयश्ने के०) शब्द रहित थडने (सबपा
 णाश्वाय के०) सर्व प्रकारे जीव हिंसा करवाना,
 (पञ्चस्कामि के०) पञ्चस्काण करुं तु, (सब मुसा
 वायं पञ्चस्कामि के०) सर्व प्रकारनु जूतु बोलवाना
 पञ्चस्काणने, (सबं अदिनादाण पञ्चस्कामि के०)
 सर्व प्रकारनु अणदीधुं लेवाना पञ्चस्काणने करुं तु,
 (सब मेहुण पञ्चस्कामि के०) सर्व प्रकारें मैथुन,
 सेववानु पञ्चस्काण करुं तु, (सब परिग्रह पञ्चस्का-
 मि के०) सर्वथा नवप्रकारना परिग्रह राखवाने
 पञ्चकुं तु, (सब कोह के०) सर्व क्रोध (माण के०)
 सर्व मानथी मांडीने (जावमिठा दसण सल्ल के०)
 यावत् मिथ्या दरिसण शैव्य पर्यंत १७ पाप स्थान

(ए५)

क (सर्व अकरणिङ्ग के०) सर्व नहीं करवा योग्य
तेने, (पञ्चस्कामि के०) पञ्चकुंतुं, (जावजीवाएके०)
जाव जीव सुधी, (तिविहं के०) तीन करणें करी,
(तिविहेण के०) तीन जोगें करी, (न करेमिके०)
हुं करु नहीं (न कारवेमि के०) धीजा पासे करावु
नहीं, (करतपिनाणुजाणामि के०) कोइ पाप करे
तेने पण हुं रुमु जाणु नहीं, (मणसा के०) मनें
करी (वयसा के०) वचने करी (कायसा के०)
कायायें करी एम अढारे पाप स्थानक पञ्चस्कीने)
(सब के०) सर्व (असण के०) अन्न (पाणं के०)
पाणी (खाइम के०) मेवो (साइम के०) स्वादिम
सुखवास ए (चउविहपि आहार पञ्चस्कामि के०)
चार प्रकारना आहारने पञ्चस्कीने इहां निरागारी
एटले साधु अनशन करतो होय तो ए रीतें पाठ
कहे अने सागारी एटले श्रावक जो अनशन करतो
होय तो पोतानी मरजी माफक जेहवो करे, तेवो
आगार राखे (जावजीवाए के०) ज्यां सुधी एम
चारे (ज के०) जे (के०)

प्रिय, हतुं एतुं (इमं सरीरं के०) आ माहं शरीर,
 (इष्ट के०) बारबार बाँवतु हतुं माटें इष्टकारी,
 (कतं के०) कांतिवत, एटले विशिष्ट वर्णादिकें करी
 युक्त (पीयं के०) प्रीतिकारी एटले इन्द्रियने हर्षनु
 करणहार (मणुज के०) मनोहृ एटले मननें गमतुं
 (मणाम के०) मनने सदाइ अत्यंत वद्वज, लागे
 माटें मणामं ए पाच शब्दनो अर्थ एकार्थ जाणवो,
 (धिक्कं के०) धीरज देणार, (विसासियं के०) वि-
 श्वासनु उपजावनार, (समय के०) मानवा योग्य,
 (अणुमय के०) विशेषें मानवा योग्य, (ज्ञनकर-
 नसमाण के०) आनरणना कावला समान, व्हाखु
 (रयणकरनगञ्जुय के०) रतना करनीया समान,
 (माणसियं के०) रखे मने शीत लागे, एटले ढाढ
 वाय, एस मानतो (माण उन्ह के०) रखे मने ताप
 लागे, एस (मानतो (माण खूहा के०) रखे मने
 जूख लागे, एस मानतो (माण पिवासा के०) रखे
 मने तृषा लागे, (माण वाला के०) रखे मुजने
 व्याल एटले सर्पादिक करणे, एस मानतो (माण

(६५)

चौरा के०) रखे मने चारनो जय उपजे, (माणं
 दंसा के०) रखे मने कांस करके, (माणं मसगा
 के०) रखे मने मछर करके, (माण वाहियं के०)
 रखे मने व्याधि उपजे (प्रित्तियं के०) रखे मने पित्त
 जागे, (सन्नीमं कफियं के०) रखे मने जयंकर श्लेष्म
 कफ उपजे, (सन्नि वाश्यं के०) रखे मने सन्निपात
 ते त्रिदोष थाय, (त्रिवहारोगायका के०) रखे मने
 विविध प्रकारनो रोग उत्पन्न थाय, (परिसहा उव-
 सगा के०) रखे मने बावीश जातिना परिसह तथा
 देवतादिकना करेला उपसर्ग उपजे, (फासा फुसति
 के०) एवी रीतना पूर्वोक्त स्पर्गथी माहारा शरीरनी
 रक्षा करतो हतो (एवपियणं के०) एवु जे माहारुं
 प्रिय एटले वाहाबु, शरीर तेने (चरमेहि के०) ठेहला,
 (उस्तासनिस्तासेहि के०) श्वासोष्वास सुधि, जी-
 वना संबध आश्रयी (वोसिरामि के०) वोसिराबुं
 तुं, तजुं तुं (त्ति कहु के०) एम कहीने
 जरीर । शरीरनो संबध तजुं
 (कालं) एव जे

तथा मरणनो जय अण वाठतो थको (विहरामि के०)
 विचरीश एहवी सदहणा परूपणा करियें, तिवारें
 फरशनायें करी शुद्ध एहवा अपष्ठिम मरणातिय सं-
 लेहणा छूसणा आराहणाना पच अइयारा जाणियवा,
 न समाय रियवा, त जहा ते आलोउं (इहलोगा-
 ससप्पज्जे के०) इह लोक सवधि सुखनी वाठना
 करे के हु चक्रवर्त्यादिक राजा थाउ, (परलोगासं-
 सप्पज्जे के०) परलोक सवधि सुखनी इछा करे के
 हु देवता थाउ, इंद्र थाउ, (जीवियाससप्पज्जे के०)
 जीवितव्यनी इछा करे के लोको महारो घणो सत्कार
 करे वे, माटें जाजु जीवु तो सारुं, (मरणाससप्पज्जे
 के०) मरणनी इछा करे के हु ख पामुं बु, माटें तरत
 मरी जाउ तो दुःखमाथो बुद्ध (कामजोगाससप्प-
 ज्जे के०) काम जोगनी वाठना करे जे आ तपना
 प्रज्ञावें हु रूपा रसादि सांसारिक कामजोग पामुं !
 एही रीतनी जे आशंता एटले वाठारूप प्रयोग एटले
 जे मननो व्यापार तेने कामजोगाशंसप्रयोग अति-
 चार कहीयें (तस्स मिथामि झूकरुं के०) तेनु पाप

(६६)

मने निष्फल थाउं ॥ २० ॥ इति ॥

एम समकित पूर्वक वारव्रत संलेषणा सहित
एहने विषे जे कोइ अतिक्रम व्यतिक्रम अति-
चार अणुचार जाणता अजाणतां मन वचन
कायार्थे करी सेव्यो होय, मेवराव्यो होय, सेवता
प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते अनंता सिद्ध केव-
लीनो साखें मिळामि दुकंन ॥ २१ ॥

अर्थ — एना अर्थमा नियम लीधेली वस्तुने
फरी सेवनाना दोष चार प्रकारे ठे, ते कहे ठे १
अतिक्रम ते नियम लीधेली वस्तुने फरी जोगववानी
डठा करवी, २ व्यतिक्रम ते नियम लीधेली वस्तुने
लेवा माटे चालवु, ३ अतिचार ते नियम लीधेली
वस्तु जोगववा माटे हाथमा लेवी, अनाचार ते नि-
यम लीधेली वस्तुने जोगववी ॥ २१ ॥

एम कह्तीने पठी १७ पाप स्थानक कह्तीजें, तेनो
पाठ प्रथम लखायेलो ठे, माटे अर्ही अर्थज लखीये
ठेयें १ (प्राणातिपात के) जीवनी हिंसा, २ (म-
पावाद के) चोलवु, ३ (अदत्तादान के

करवी, ४ (मेषुन के०) मेषुन सैवबुं, ५ (परिग्रह के०) परिग्रहनी बांठा, ६ (क्रोध के०) रोप, ७ (मान के) अर्हकार ८ (माया के०) कपट, ९ (लोभ के०) लोभ, १० (राग के०) प्रीति, ११ (द्वेष के०) द्वेषभाव, १२ (कलह के०) क्लेश, १३ (अज्यारयान के०) खोटुं थाल देबु, १४ (पेशुन्य के०) पारकी चामी करवी, १५ (परपरिवाद के०) अने-राना अवगुण बोलवा, १६ (रतिअरति के०) हर्ष जोर, १७ (मायामोसो के०) कपट सहित जूठु बोलबु, १८ (मिथ्यादसण लब्ध के०) आनिग्रहिक अनानिग्रहिकादिक पांच प्रकारना जे मिथ्यात्व ठे तेने सेवनाना जे परिणाम ते एवं अडारे पाप स्थानक सेव्या होय, सेवराव्या होय, सेवता प्रत्ये अनुमोद्यां होय, ते अनता सिद्ध केवलीनी साखें मि-ठामि डुक्कं ॥ २१ ॥ इति ॥

विधि - पठो “ इठामि ठामि ” नी पाटी कहीजें, आर्हा सुधी जिमणो गोमो उच्चों राखीने बेसीजें, पठो उज्जो थइ हाथ जोनीने “ तस्स वम्मस्स ” नी पाटी कहीजें, ते कहे ठे —

तस्स धम्मस्स केवलपणत्तस्स अञ्जुठिउ-
मि, आराहणाए, विरउमि विराहणाए, तिवि-
हेणं पम्किंतो, वंदामि जिणे चउव्वीस ॥२२॥

अर्थ --(तस्स धम्मस्स केवलपणत्तस्स के०)
ते केवलज्जापित एवा श्रावक धर्मने, (आराहणाए
के०) आराधवाने माटें (अञ्जुठिउमि के०) हु सारी
रीते पालण करवाने उठयो तु, अने ते धर्मनी (वि-
राहणाए के०) विराधना करवाथकी (विरउमि के०)
हुं विरम्भो तु, एटले निविच्चो तु (तिविहेण के०)
त्रिविधे करी, एटले मन, वचन अने कायाये करी,
(पम्किंतो) प्रतिक्रांत थको एटले अतिचार पाप-
थकी निवर्त्त्यों थको (जिणेचउव्वीस के०) चोवीस
जिन प्रत्ये (वंदामि के०) हु वाउ तु ॥ २२ ॥

विधि -पढी "उमामि खमासणा"री पाटो दोय
चार विधि पूर्वक कहीजें, पढी आझा लहीने उक्कु
आसणे वेसो वेहु हाथ गोमानी बचाले राखी धर-
तोयें ॥१॥ "पाच पदारी वदणा"
रीयें, २

॥ इहां प्रथम नवकार कहेवो, पढी १ पहिले पदें
 श्री अरिहतजी ते जवन्मयी वीश तिर्थकरजी, उ-
 त्कृष्टा एकसो सित्तेर देवाधिदेवजी तेमाहि वर्त्तमान
 काले ॐवीग विहरमानजी माहाविदेह क्षेत्रमाही
 विचरे ठे, एक हजार आष्ट लक्षणना धरणहार, चो-
 त्रीश अतिनय, पेंतीस वाणीयें करी विराजमानठे, वार
 गुणेंकरी सहित, अठार दोपथकी रहित, चोसठ इन्द्रना
 वदिनिक पूजनिक, अनंतज्ञान, अनंतदर्शन अनंत
 चारित्र, अनंत बलवीर्य, अनंत सुख, दिव्यध्वनि, ज्ञा-
 संकल, स्फाटिक सिंहासन, अगोकवृक्ष, कुसुमवृष्टि,
 देवहुडुजि, ठत्र धराय, चामर विजाय, पुरुषाकार परा-
 क्रमना धरणहार, अष्टाष्टद्वीप पदर क्षेत्रमा विचरे तथा

-
- | | | |
|-------------------------|-------------------------|-----------------------|
| १ श्रीश्रीपद्मस्वामी | २ श्रीयुगमदस्वामी | ३ श्रीगुह्यस्वामी |
| ४ श्रीगुह्यस्वामी | ५ श्रीगुह्यस्वामी | ६ श्रीस्वयम्भस्वामी |
| ७ श्रीस्वयम्भस्वामी | ८ श्रीअनंतवीर्यस्वामी | ९ श्रीसुरप्रभस्वामी |
| १० श्रीविशालप्रभस्वामी | ११ श्रीवज्रधरस्वामी | १२ श्रीचंद्राननस्वामी |
| १३ श्रीचंद्रगुह्यस्वामी | १४ श्री भुजगस्वामी | १५ श्रीशिवस्वामी |
| १६ श्री नेमिप्रभस्वामी | १७ श्री वीरसेनस्वामी | १८ श्रीमहाभद्रस्वामी |
| १९ श्री देवजस्वामी | २० श्रीभक्तिरिप्यस्वामी | |

जघन्य तो दोय क्रोम केवली, उत्कृष्टा नव क्रोम के-
 वली, केवलज्ञान, केवलदर्शनना धरणहार, सर्व द्रव्य
 क्षेत्रकाल जावना जाणणहार ॥ सवैय्या ॥ नमुसिरि
 अरिहत, करमांको कियो अत, हुवा सो केवलवंत,
 करुणा जमारी हे ॥ अतिसे चोतीस धार, पेंतिस
 वाणी उच्चार, समजावे नर नार, पर उपगारी हे ॥
 शरीर सुंदराकार, सूरज सो जल्लुकार, गुण हे अनत
 सार, दोष पोरहारी हे ॥ केत हे तिलोकरिक्क, मन
 वच काय करी, लली लली वारवार, वदणा हमारी
 हे ॥ १ ॥ एसा अरिहत जगवत दीनदयाल महा-
 राजको दिवस सवधी अविनय, आगातना, कीधी
 होय तो हाथ जोमी, मान मोमी, काय संकोमी,
 वारवार खमावु लु, मन्त्रण वंदामि १००० वार नम-
 कार करुं “ तिरुक्त्तो आयाहिणं, पयाहिण वदामि
 नमंतामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाण, भगलं,
 देवयं, चेड्य, पज्जावातामि ’ आप मांगलिक ठो, उ-
 त्तम ठो, हे स्वामिनाथ ! आपको इणज्जवें परज्जवें
 ज्जवोज्जवें सदाकाल शरणो होजो ॥ १३ ॥ इति
 प्रथम पदं

१ बीजे पदे श्री सिद्धजगवत महाराज ते पन्नर
 जेदे अनता सिद्ध ठे, आठ कर्म खपावीने मोक्ष प-
 होता ठे, १ तीर्थ सिद्धा, २ अतीर्थ सिद्धा, ३ तीर्थकर
 सिद्धा, ४ अतीर्थकर सिद्धा, ५ स्वयंबुद्ध सिद्धा, ६ प्र-
 त्येक बुद्ध सिद्धा, ७ बुद्धबोधित सिद्धा, ८ स्त्रिलिंगसिद्धा,
 ९ पुरुषलिंग सिद्धा, १० नपुसकलिंग सिद्धा, ११ स्व-
 लिंग सिद्धा, १२ अन्यलिंग सिद्धा, १३ गृहस्थलिंग
 सिद्धा, १४ एक सिद्धा, १५ अनेक सिद्धा, जिहां जन्म
 नहीं, जरा नहीं, मरण नहि जय नहीं, रोग नहीं,
 सोग नही, दुःख नहीं, दारिद्र्य नहीं, कर्म नहीं,
 काया नहीं, मोह नहीं, माया नहीं, चाकर नहीं,
 ठाकर नहीं, झूठ नहीं, तृषा नहीं, ज्योतिमें ज्योति
 विराजमान, सकल कारज सिद्ध करीने चउदे प्रकारें
 पन्नरे जेदे अनता सिद्ध जगवत हुवा, अनत सुखमां
 लीन, अनत ज्ञान, अनत दर्शन, अनत चारित्र्य, क्षा-
 यिकसमकित, निराबाध, अटल अवगाहना, अमूर्ति
 अगुरुजबु, अनत वीर्य, आठ गुणेंरूरी सहित ॥सर्वैय्या॥
 सकल काम टाल, बस करलोयो काल, मुगतिमें रह्या

माख आत माका तारी हे ॥ देखत सकल जाव; हुवा हे
 जगत राव, सदाही खायिक जाव, जये अविकारी हे ॥
 अचल अटल रूप, आवे नवि नवकूप, अनुप सरूप
 ऊप, ऐसे सिद्धधारी हे ॥ केत हे तिलोकरिख, वतावो
 ए वास प्रजु, सदाही जगत सूर, वंदणा हमारी हे
 ॥१॥ एसा सिद्ध जगवंतजी माहाराज आपकी दिवस
 संबंधी अविनय आरातना कीधी होय तो हाथ जोनी
 मान मोनी काय सकोनी वारवार खमावुं तु, तिखु-
 त्ताना पाठसू मठएण वंदामि नमस्कार करुं तुं जा-
 वतु नवोनव शरणु होजो ॥ २५ ॥ इति ॥

३ त्रीजे पदे श्रीआचारजजी ठत्तीस गुणेंकरी विराज-
 मान, पांच महाव्रत पाले, पांच आचार पाले, पांच इं-
 द्रिय जीते, चार कपाय टाले, नव वाम शुद्ध ब्रह्मचर्यना
 पालणहार, पांच समितियें समित्ता, तीन गुप्तियें गुप्ता,
 आठ संपदा सहित ॥ सवैय्या ॥ गुण हे ठत्तीस पूर,
 धरत धरम ऊर, मारत करम क्रूर, सुमति विचारी
 हे ॥ शुद्धसों आचारवत, सुंदर हे रूप कंत, जणियो
 सवि सिद्धंत, वांचणी सुप्यारी हे ॥ अधिक

कोइ नही लोपे केण, मकल, जीवाका मेण, कीरत
 अपारी हे ॥ केत हे तिलोकरिख, हितकारी देत
 सीख, ऐसा आचारज ताकु, वंदणा हमारी हे ॥१॥
 ऐसा आचारज न्यायपक्षी, जडकपरिणामी, परमपू-
 ज्य, कदपनिक अचित्त वस्तुका ग्रहणहार, सचित्तका
 त्यागी, वैरागी, महागुणी, गुणका अनुरागी, सोजागी
 एहवा श्री आचारजजी महाराज आपकी दिवस
 सवधि अविनय आशातना कीधी होय तो हाथ
 जोकी मान मोकी काया सकोकी वारंवार खमावु तु
 १००० वार तिरुक्कताना पाठथी मन्त्रण वदामि एटले
 नमस्कार करु तु यावत् ज्ञोन्नव शरणु होजो ॥२॥
 ॥ इति त्रीजु पद सपूर्ण ॥

४ चोथे पटें श्री उपाध्यायजी महाराज पच्चीश
 गुणें करी सहित ठे, ते पच्चीश गुण कहे ठे ? इगि-
 यारा अगना जणणहार ते अगीयार अंग कहे ठे.
 श्री आचारजजी, सुयगनांगजी, ठाणांगजी, समवा-
 यागजी, जगवर्तीजी, ज्ञाताधर्मकथाजी, उपासकद-
 सागजी, अतगरुदसांगजी, अनुत्तरोववाईजी, प्रश्न-

व्याकरणजी, त्रिपाकसूत्रजी ॥ ए इग्यारा अगने
 अर्थ पाठ सपूर्ण जाणे (१२ उपाग ज्ञणे, ते) उव-
 वाइजी, रायप्पसेणीजी, जिवाजिगमजी, पन्नवणाजी
 जंबुद्वीपपण्णत्ती, चंदपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती, निरयाव-
 लिया, कप्पविमंसिया, पुप्फिया, पुप्फचूलिया, वन्हि-
 दिशा (४ मूल सूत्र) उत्तराध्ययन, दशवैकालिक,
 नंदीसूत्र, अनुयोगद्वार (४ ठेद अथ) दशाश्रुत
 स्कंध, बृहत्कल्प, व्यवहार, निगीथ अने वत्तीसमुं
 आवश्यक ॥ आदि देइ अनेक अथना जाणनार,
 चौद पूर्वना पाठी, सात नय, निश्चय व्यवहार, चार
 प्रमाणादिकें करी स्वमत तथा अन्यमतका जाण-
 मनुष्य अथवा देवता कोइ पण जेने विवादमां ठल-
 वाने समर्थ नही, जिन नही पण जिन सरिखा,
 केवली नही पण केवली सरिखा ॥ सवैय्या ॥ पढत
 इग्यारा अंग, करमासू करे जग, पाखमीको मान
 जंग, करण हुस्यारी हे ॥ चऊद पूरवधार, जानत
 आगमसार, जिविनके सुखकार, ब्रमता निवारी है ॥
 पढावे जविक जन, थिर करदेत मन, तप करी ताके

तन, समता निवारी है ॥ केत है तिखोरिख,
 ज्ञानज्ञानु परतिख, एसे उपाध्याय, ताकु बंदणा
 हमारी है ॥ १ ॥ एसा श्री उपाध्यायजी माहाराज
 मिथ्यात्वरूप अंधकारना भेटणहार, समकितरूप
 उद्योतना करणहार, धर्मयकी रगता प्राणीने धिर
 करे, सारण, वारण, धारण, इत्यादिक अनेक गुण स-
 हित ठे, एहवा जे श्री उपाध्यायजी माहाराज आ-
 पकी दिवस संधी अविनय आशातना कोधी होय
 तो हाथ जोकी मान मोकी, काया सकोकी, बारवार
 खमावु तु १००० वार तिगुत्ताना पाठयी मठणण
 चंदामि एटले नमस्कार कह तु यावत् जवोजव श-
 रणु होजो ॥ २६ ॥ इति चोथु पद संपूर्ण ॥ ४ ॥

(५) पाचमे पदे श्री साधुजी ते पोतारा धर्मा
 चार्यजी (आ ठेकाणे आप आपका गुरु माहाराजको
 नाम लेणो) आद देइने जघन्य तो दोय हजार
 कोरु साधु साधवी, उल्लूछा नव हजार कोरु साधु
 साधवी, अटार्ई द्वीप पन्नरे क्षेत्रमें जयवता विचरे ठे,
 ते साधुजी केहवा ठे ? पांच महाव्रतको पालणहार,

पांच इंद्रियोंका जितणहार, चार कषायका टालण-
 हार, ज्ञाव सच्चे, कर्ण सच्चे, जोग सच्चे, क्षमावंत,
 चैराग्यवंत, मन समाधारणीया, वयसमाधारणीया,
 कायसमाधारणीया, नाण सपन्ना, दंसणसंपन्ना, चा-
 रित्तसपन्ना, वेदणोसमा अहियासनिया, मरणाति-
 समा अहिया सनिया, एहवा सत्तावीश गुणे करी
 सहित, वारे जेदें तपका करणहार, सत्तरे जेदें सयमना
 पालणहार, तेत्तीस आशातनाका टालणहार, वेहे-
 तालीश दोष टालीने आहार पाणीका लेवणहार,
 ठेतालीस दोष टालीने जोगवणहार, वावन अना
 चीणके टालणहार, तेम्या आवे नही, नेथ्या जिमे
 नही, सचित्तका त्यागी, अचित्तका जोगी, वावीस परि-
 सहके जितणहार, अनेकलब्धिका धरणहार, लोचको
 करणो अणवाणेपगें चालणो, इत्यादिक काय क्लेशका
 करणहार, मोह ममता रहित ॥ सबैय्या ॥ आदरी
 संजम ज्ञार, करणि करे अपार, सुमति गुपतिधार,
 विक्रया निवारी हे ॥ जयणा करे ठ काय, सावद्य
 न बोले वाय, बुझई कषाय लाय, किरिया ..

हे ॥ ज्ञान जणे आगे जाम, लेवे जगवत नाम, ध-
रमको करे काम, ममताके मारी हे ॥ केत हे तिलोक
रिक्त, करमाको टाळे विख, ऐसा मुनिराज ताकुं
वदणा हमारी हे ॥ १ ॥ एहवा श्री मुनिराज महा-
राज आपकी दिवस सवधी अविनय आशातना कीवी
होय तो हाथ जोमी, मान मोमी, काया संकोमी,
चारवार खमावुं तु. १००० वार तिस्तुताना पाठसुं
मठएण वदामि एटले नमस्कार करु तु जावत स-
दाकाल शरणु होजो ॥२७॥ इति पाचमु पद सपूर्ण ॥

विधि-पठी उजा थइ आयरिय उवजाए क-
हीजें, ते कहे ठे.-

आयरिय उवजाए, सीसे साहम्मिए कुल-
गणे अ ॥ जे मे केइ कसाया, सवे तिविहेण
खामेमि ॥१॥ सबस्स समणसंघस्स, जगवजं
अजलिं करिय सीसे ॥ सबं खमावइत्ता, ख-
मामि सबस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सबस्स जीव
रासिस्स, जावजं धम्म निदिय नियचित्तो ॥
सबं समावइत्ता, खमामि सबस्स अहयंपि ॥३॥

प्रथम -पंचाचारसंपन्न अथवा उन्नीस गुणें विराज-
 , अर्थदानना दातार, तेने (आयसिके०) आचार्य
 यें. तथा समोप रक्षा अने आठ्या जे शिष्यादिक
 नूत्रना ज्ञानानार अथवा पच्चीस गुणेंकरी विरा-
 न तेने (उवजाए के०) उपाध्याय कह्यें, तथा
 शिक्षा अने आसेवना शिक्षाने योग्य होय,
 (सोसे के०) गिज्य कह्यें तथा श्रद्धा अने प्ररू-
 दिक गुणें करीने जे आपण सरिखा होय, एवा
 धर्मना पालनार, होय तेने (साहम्मिए के०)
 भिरु कह्यें, तथा जे एक आचार्यनो शिष्य
 न परिवार, तेने (कुल के०) कुल कह्यें. तथा
 आचार्यना शिष्य सतान परिवार, तेने (गणे
) गण एटले समुदाय कह्यें (अ के०) अ-
 ते वली वली कहेवाने अर्थ ठे, ए सर्वनी उपर
 (के०) महारे जीवें (जे के०) जे (के३ के०)
 पण (कत्ताया के०) क्रोधादिक कपाय कीधा
 , ए कारणें (सबे के०) सर्व, ते आचार्यादिक
 (त्रिविहेण के०) त्रिविधें करी एटले मत. व-

(११५)

चन श्यने कायार्ये करी (खामेमि के०) हुं खामुं तुं
 ॥१॥ (सवस्ससमणसघस्सजगवत्तं के०) सर्व श्रमण
 संघरूप जगवतना कीधा जे अपराध ते (थंजलीक
 रियसीमे के०) मस्तकनी उपर वे हाथ प्रत्ये करीने
 एटले स्थापीने नम्रीनुत थइने (सवस्समावडत्ता के०)
 ते सर्व अपराध प्रत्ये समागीने, वली एम कहे के
 (खमामि सवस्सअहयपि के०) ते सर्वना करेखा
 अपराध प्रत्ये हु पण समुं तु, एटले सम्यक्प्रकारे
 सहन करु तुं ॥ २ ॥ (सवस्सजीवरासिस्स के०)
 एकेंद्रियादिक सर्व जीवनों रागि एटले समूह तेनो
 कीयो जे में अपराध, ते (जावत्तं के०) जावथी
 (सवस्समावडत्ता के०) सर्व अपराध प्रत्ये खमावीने,
 वली एम कहे के ते सर्व जीवोंनी उपर समजाव ते
 रूप (धम्म के०) धर्म, तेने विपे (निहिय के०) नि-
 धित करयु ठे एटले स्थाप्युं ठे, जावथकी आरोपण
 करयु ठे, (नियचित्ता के०) निज चित्त एटले पो-
 तानु मन जेणे एह्वो (अहयंपि के०) हुं पण (स-
 वस्स के०) सर्व जीव राशिना कीधा जे अपराध,
 अपराध प्रत्ये (खमामि के०) खमुं तुं ॥३॥ इति २०॥

पठी अष्टाष्ट छीपनो पाठ कहीजें, ते कहे ठे.

अष्टाष्ट छीप तथा पन्नर खेत्र मांहि तथा
वाहेर, श्रावक श्राविका दान देवे, शील पाळे,
तपस्या करे, जावना जावे, संवर करे, सामा-
यिक करे, पोसह करे, पम्किमणा करे, तीन
मनोरथ, चउदे नियम चिंतवे, एक व्रतधारी,
जाव वारे व्रतधारी थका जे जगवंतकी आ-
ज्ञामांहि विचरे, अमाराथकी मोटाने हाथ
जोनी, पगें लागीने, खमावुं वुं, ठोटाने वारंवार
खमावुं वुं ॥ ३० ॥ इति जाषा ॥

विधि.—पठी ‘चोराशी लाख जीवा योनि’ ख-
माववानो पाठ कहीयें पठी “खामेमि सब जीवेनो”
पाठ कहीयें, ते लखीयें ठैयें.

अथ चोराशीलाख जीवायोनि प्रारभ ॥

॥ सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अकाय,
सात लाख तेजकाय, सात लाख वायुकाय, दश लाख
अत्येक वनस्पतिकाय, चउदे लाख साधारण वनस्प-
तिकाय, वे लाख वेद्रिय, वे लाख तेंद्रिय, वे लाख

(११२)

चन अने कायार्ये करी (खामेमि के०) हुं खामुं ठुं
 ॥१॥ (सबस्ससमणसघस्सज्जगवर्त्त के०) सर्व श्रमण
 सघरूप जगवर्तना कीधा जे अपराध ते (अजलीक
 रियसीसे के०) मस्तकनी उपर वे हाथ प्रत्ये करीने
 एटले स्थापीने नम्रीचुत थइने (सबखमावडत्ता के०)
 ते सर्व अपराध प्रत्ये खमावीने, वली एम कहे के
 (खमामि सबस्सअहयपि के०) ते सर्वना करेखा
 अपराध प्रत्ये हुं पण खमुं तु, एटले सम्यक्प्रकारे
 सहन करु तु ॥ २ ॥ (सबस्सजीवरासिस्स के०)
 एकेंद्रियादिक सर्व जीवनों राशि एटले समूह तेनो
 कीधो जे मे अपराध, ते (जावर्त्त के०) जावथी
 (सबंस्वमावडत्ता के०) सर्व अपराध प्रत्ये खमावीने,
 वली एम कहे के ते सर्व जीवोनी उपर समजाव ते
 रूप (धम्म के०) धर्म, तेने विपे (निहििय के०) नि-
 वित करयुं ठे एटले स्थाप्युं ठे, जावथकी आरोपण
 करयुं ठे, (नियचित्ता के०) निज चित्त एटले पो-
 तानु मन जेणे एहवो (अहयपि के०) हु पण (स-
 व्वस्स के०) सर्व जीव राशिना कीधा जे अपराध,
 ते अपराध प्रत्ये (खमामि के०) खमुं तु ॥३॥ इति १७॥

पढी अट्टाई छीपनो पाठ कहीजें, ते कहे ठे.

अट्टाई छीप तथा पन्नर खेत्र मांदि तथा
वाहेर, श्रावक श्राविका दान देवे, शील पाळे,
तपस्या करे, जावना जावे, संवर करे, सामा-
यिक करे, पोसह करे, पम्किमणा करे, तीन
मनोरथ, चउदे नियम चिंतवे, एक व्रतधारी,
जाव वारे व्रतधारी थका जे जगवंतकी आ-
झामांहि विचरे, अमाराथकी मोटाने हाथ
जोमी, पगें छांगीने, खमावुं ठुं, ठोटाने वारंवार
खमावुं ठुं ॥ ३० ॥ इति भाषा ॥

विधि - पढी 'चोराशी लाख जीवा योनि' ख-
माववानो पाठ कहीयें पढी "खामेमि सब जीवेनो"
पाठ कहीयें, ते लखीयें ठैयें.

अथ चोराशीलाख जीवायोनि प्रारम्भ ॥

॥ सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अकाय,
सात लाख तेजकाय, सात लाख वायुकाय, दश लाख
प्रत्येक वनस्पतिकाय, चउदे लाख साधारण वनस्प-
तिकाय, वे लाख वैज्रिय, वे लाख तेंद्रिय, वे लाख

चौरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी,
 चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय, चौद लाख मनुष्य, एवं
 चौराशी लाख जीवायोनिमांहे महारे जीवें जे क्रोड
 जीव हएयो होय, हणाव्यो होय, हणतां : प्रत्ये अ-
 नुसोयो होय, ते सबें मनें, वचनें, कायार्यें करी
 १७, १४, १२० आटारे लाख चोरीस हजार एकसो
 चीस प्रकारें तस्त मिश्रामि दुष्कर्म ॥ ३१ ॥ इति ॥
 एनो अर्थ सुगम ठे माटें खरयो नथी

अथ स्वामेमि सबजीवेनो पाठ प्रारब्धः ॥

॥ स्वामेमि सब जीवे, सबे जीवा खमत्तु मे ॥
 मित्ती मे सब झूएसु, वेरं मज्जं न केणइ ॥ १ ॥
 एवमह-आलोइअ, निंदिअ गुरहिअ दुगं-
 ठिअ सम्म ॥ तिबिहेण पमिक्कंतो, वंदामि
 जिणे चउवीस ॥ ३२ ॥

अर्थः- (स्वामेमि सबजीवे के०) सर्व जीवो
 प्रत्ये हु खमावु तुं एटले अनंता जवने विपे पण
 अज्ञान मोहावृत्तयें करीने जीवोने जे पीमा कीधी
 होय, ते खमावु तुं अने (सबेजीवा के०) ते सर्व
 जीवोपण (मं के०) महारा अपराध प्रत्ये, (खमंतु

के०) खमो, माफ करो, ए क्षमनक्षमापनसां कारण
 कहे ठे के (सब्बजुएसु के०) सर्व जूतोने विषे
 (मे के०) महारे (मित्ती के०) मैत्रिजाव ठे, (के-
 णइ के०) कोइ जीवनी साथें (मज्जं के०) महारे
 (वेर के०) वैरजाव (न के०) नथी ॥ १ ॥ (एकं
 के०) एमं (आलोइअ के०) पाप आलोच्युं प्रकाइ
 कीधुं (निदिअ के०) आत्म साखें निद्यु, (गरहिअ
 के०) गर्हुं (दुगठिअ के०) दुगठयुं अत्यत खोटुं
 जाण्युं, ते माटें (सम्मं के०) सम्यक् प्रकारें ए
 सम्यक् पद सर्व पदोनी साथें पूर्वमा योजवुं (ति-
 विहेण के०) त्रिविधें करी एटले मन वचन अने
 कायायें करीने (पन्निक्कतो के०) अतिचारादिक पाप
 थकी प्रतिक्रान्तथको, एटले पाठो फरतो थको, अ-
 र्थात् पापने पन्निक्कमतो थको, एगो जे (अह के०)
 हुं-ते (चउव्वीसज्जिणे के०) चोवीस जिनं प्रर्थि
 (वंदामि के०) चांछु तु ॥

विधि-पढी “अडारे पापस्थानक” कहौजें.
 इति सामायिक, चउविसठो, वंदणा, पन्निक्कमण, चार

हवे तिस्कुत्ताना पाठसेति पांचमा आवस्सग्गनी
आज्ञा लीजें

पढी “दैवसिकप्रायश्चित्त” कहिजें, ते कहें ठे -

दैवसिक प्रायश्चित्त विशुद्ध्यर्थ करेमि
काजस्सग्गं ॥ ३३ ॥

अर्थ -(दैवसिक के०) दिवस संवधि, (प्रा-
यश्चित्त के०) प्रायश्चित्त (विशुद्ध्यर्थ के०) शुद्ध
करवा माटें (काजस्सग्ग के०) कायोत्सर्ग एटले
कायानी । स्थिरता प्रत्ये (करेमि के०) हूं करुं ३३

विधि - पढी “नमोअरिहताणथी मांमी यावत्
नवकारनो संपूर्ण पाठ” कहिजें, पढी “करेमि जते
सामाज्यंथी मांमी (अप्पाण वोसिरामिनो पाठ क-
हीजें” “पढी इहामि छामि काजस्सग्गथी मांमीने
यावत् “तस्स मिहामि दुक्कम” पर्यंत पाठ कहिजें
“पढी तस्स उत्तरीकरणेण” थी मांमीने अप्पाणं
वोसिरामि” सुधीनो पाठ कहिने पढी- काजस्सग्ग
करवो, तेमां मनमा देवसि, राइसि (४ लोगस्स),
नुं ध्यान कीजें. पस्की पन्निकमणे (१२ लोगस्स)
नु ध्यान कीजें. चोमासी पन्निकमणे (२० लोगस्स)

नुं ध्यान कीजें, सवत्सरी पन्निकमणे (४० लोगस्स)
 नु ध्यान कीजें संवत्सरी संवंधि चालीश लोगस्सनो
 काउस्सग्ग लख्यो ठे, परंतु एमां केटलाएक ज्ञाश्यो
 न्यून काउस्सग्ग पण करे ठे, माटें जेमना धर्माचा-
 र्यना आदेश उपदेश मूजव जेटला लोगस्सना का-
 उस्सग्ग करवानी परंपरा चालती आवेली होय तेमणें
 तेटला लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो पठी नमो अ-
 रिहंताण कही काउस्सग्ग पारीजें पठी काउस्सग्ग
 मांहि आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान, ध्यायु होय, धर्मध्यान
 शुक्रध्यान न ध्यायुं होय तस्स मिच्छामि डुकमं,
 एम कहीजें पठी प्रगटपणे (एक लोगस्स) कहीजें
 पठी पूर्वली पेरे “इष्ठांमि खमासमणार्थी मांभीने अ-
 प्पाणं वोसिरामि” पर्यंतनो पाठ दोय वार कहीजें.
 इति सामायिक चोविसठो, वंदनक पन्निकमाणु अने
 काउस्सग्ग ए पांच आवश्यक पूरा थयां

हवे ठठा आवश्यकना कामी इम कही, पठी
 गुरु मुनिराज पासें तथा वनेरा पासे, इणारो योग
 न हुवे, तो आपणी मेळें पंचस्काण धारणा प्रमाणें
 करीयें, ते कहे ठे—

इवे तिस्कृत्ताना पाठसेति पांचमा आवस्सग्गनी
आज्ञा वीजे

पढी “दैवसिकप्रायश्चित्त” कहिजें, ते कहे ठे-

दैवसिक प्रायश्चित्त विशुद्धानार्थ करेमि
काजस्सग्ग ॥ ३३ ॥

अर्थ -(दैवसिक के०) दिवस संवधि, (प्रा-
यश्चित्त के०) प्रायश्चित्त (विशुद्धानार्थ के०) शुद्ध
करवा माटें (काजस्सग्ग के०) कायोत्सर्ग एटले
कायानी । स्थिरता प्रत्ये (करेमि के०) हुं करुहुं ३३

विधि -पढी “नमोअरिहत्ताणथी मांमी यावत्
नवकारनो संपूर्ण पाठ” कहिजें, पढी “करेमि जंतं
त्तामाइयंथी मांमी (अप्पाण वोसिरामिनो पाठ क-
हीजें” “पढी इहामि छामि काजस्सग्गथी मांमीने
यावत् “तस्स मिठामि दुक्कम” पर्यंत पाठ कहिजें
“पढी तस्स उत्तरीकरणेण” थी मांमीने अप्पाण
वोसिरामि” सुधीनो पाठ कहिजें पढी-काजस्सग्ग
करवो, तेमा मनमा देवसि, राइसि (४ लोगस्स)
नु ध्यान कीजें. परकी पन्निकमणे (१२ लोगस्स)
नु ध्यान कीजें. चोमासी पन्निकमणे (२० लोगस्स)

नुं ध्यान कीजें, संवत्सरी पन्निकमणे (४० खोगस्स)
 नुं ध्यान कीजें. संवत्सरी सवंधि चालीश खोगस्सनो
 काउस्सग्ग लख्यो ठे, परंतु एमां केटलाएक जाइयो
 न्यून काउस्सग्ग पण करे ठे, माटें जेमना धर्माचा-
 र्यना आदेश उपदेश मूजव जेटला खोगस्सना का-
 उस्सग्ग करवानी परपरा चालती आवेली होय तेमणें
 तेटला लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो पढी नमो अ-
 रिहंताणं कही काउस्सग्ग पारीजें पढी काउस्सग्ग
 मांहि आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान, ध्यायुं होय, धर्मध्यान
 शुरुध्यान न ध्यायुं होय तस्स मिच्छामि डुकमं,
 एम कहीजें पढी प्रगटपणे (एक लोगस्स) कहीजें
 पढी पूर्वली पेरे “इच्छामि खमासमणायी मांकीनं अ-
 प्पाणं वोसिरामि” पर्यंतनो पाठ दोय वार कहीजें.
 इति सामायिक चोविसठो, वंदनक पन्निकमणुं अने
 काउस्सग्ग ए पाच आवश्यक पूरां थयां

हवे ठठा आवश्यकता कामी इम कही, पढी
 गुरु मुनिराज पासें तथा वरेरा पासे, इणारो योग
 न हुवे, तो आपणी मेळें पच्चस्काण धारणा प्रमाणें
 करीयें, ते



ગંઠીસહિ, મુઠીસહિ, નવકારસી, પોરિસી,
સાઢ પોરિસી, આપ આપની ધારણા પ્રમાણે
તિવિહપિ, ચત્તવિહંપિ, આહારં, અસણં, પાણં,
સ્વાઈમં, સાઈમં, સાઈમં, અન્નચ્છેદ્ધાન્નોર્ગેણં,
સદસાગારેણ, મહત્તરાગારેણં, સદસમાદિવત્તિ-
આગારેણં વોસિરે ॥ ઇતિ ॥ ૩૪ ॥

વિધિ -સામાયિક, ચત્તવિસઠો, વંદનક, પન્નિ-
ક્કમણ, કાલસ્સગ્ગ અને ઠહુ પચ્ચસ્કાણ. એ ઠ આવ-
શ્યકમાદિ જાણતા અજાણતાં જે કાંઈ અતિચાર દોષ
લાગ્યો હોય, તથા પાઠ ઉચારતા કાનો, માત્રા, મીઠુ,
પદ, અક્ષર અધિકો ઊઠો ફલત્રો જારી આધો પાઠો
કહ્યો કહેવાણો હોય, તસ્સ મિઠ્ઠામિ હુક્કરુ ॥ મિ-
થ્યાત્વનુ પન્નિક્કમણ, અવતનું પન્નિક્કમણ, કપાયનું પ-
ન્નિક્કમણ, પ્રમાદનું પન્નિક્કમણ, અશુભ જોગનુ પન્નિ-
ક્કમણ, એ પાંચ પન્નિક્કમણામાંહેલુ પન્નિક્કમણ નહી
કોનુ હોય. તસ્સ મિઠ્ઠામિ હુક્કરુ ॥ ગયા કાલનું
પન્નિક્કમણ, વર્તમાન કાલના સવર, આવતા કાલનાં
પચ્ચસ્કાણ, તેને વિષે જે દોષ લાગો હોય, તસ્સ મિ-

छात्रिं दुक्कं ॥ ३५ ॥ अइ थुइ मंगल ॥ ३५ ॥

हवे तीचे वेसी कावो गोमो, उजो राखीने वे
वार नमोवुण कहिजे. पठी उजो अइने श्री सीमधर
स्वामीजी प्रत्ये पांचे अंग नमावीने तिस्कत्ताना पा-
ठथी १००० वार वंदना करुवु, एम कहिने नमस्कार
करवो पठी पोताना धर्माचार्यजीने तिस्कत्ताना पा-
ठथी वंदना करीने उपाश्रयना जो कोइ मुनिराज
होय तो तेमने पण तिस्कत्ताना पाठथी वंदना करीने
खमाववुं. पठी तिहांज रहेला साधर्मिजाइउं मांहेला
जे तपस्या करनार होय तेमने सुखगाता पूठीने ख-
मत खामणां करवां अने अन्य साधर्मिजाइउं सार्थे
पण अविनय आशातना सबधि खमत खामणां क-
रवां. देवसिपनिकमणामांहे मिठामि दुकरं आवे.
तिहां दिवस सबधि मिठामि दुकरं दीजे राइसीमें
राइसी सबधि, परकीमें देवसी परकी सबधि, चोमा-
सीमें, देवसी चोमासी सबधि, संवठरीमे सवत्सरी
संवधि, मिठामि दुकर इम कहिजे ॥ ए पस्किम-
विधि कह्यो, चीजो अंतर विधि चमेराथी जाणवो ॥
॥ इति प्रतिक्रमण अर्थविधि सपूर्ण ॥

॥ અથ અર્થ સહિત દશ પચ્ચસ્કાણ પ્રારંભઃ ॥

॥ તિહાં પ્રથમ નમુસ્કારસહિચ્ચનું પચ્ચસ્કાણ ॥

ઝગ્ગા સૂરે નમુસ્કારસહિચ્ચ પચ્ચસ્કામિ ચ-
ઠધિદંપિ આહારં અસણં પાણં શ્વાશ્મં સા-
શ્મં અન્નજ્ઞાનાજોગેણં સહસાગારેણં વોસિ-
રામિ ॥ ૧ ॥

અર્થ.- (ઝગ્ગાસૂરે કેળ) સૂર્યના ઉદયથી માં-
નીને ઘે ઘની પ્રમાણ ઇટલે રાત્રિજોજનનો દોષ
નિવારવાને અર્થે, ઘે ઘની પઠી (નમુસ્કારસહિચ્ચ કેળ)
નવકાર કહીને પારખું તિહાં સુધી (પચ્ચસ્કામિ કેળ)
પચ્ચસ્કાણ ઠે, ઇટલે નિયમ ઠે અર્હીયાં નવકાર ક-
હીને પચ્ચસ્કાણ પારખુ ઠે, માટેં ઇ પચ્ચસ્કાણનું નામ
નવકારસી કહેવાય ઠે અર્હીયાં ગુરુ, જે પચ્ચસ્કાણના
કરાવનાર હોય તે પચ્ચસ્કાશ્ કહે, તેવારેં શિષ્ય જે
પચ્ચસ્કાણનો કરનાર હોય તે પચ્ચસ્કામિ કહે એમ
સર્વ પચ્ચસ્કાણોને વિષે જાણી લેવું તથા સંપૂર્ણ પચ્ચ-
સ્કાણે ગુરુ, વોસિરશ્ કહે અને શિષ્ય જે પચ્ચસ્કાણ-
નો કરનાર હોય તે વોસિરામિ કહે. ઇ નવકારસીનું

पञ्चस्काण वे घनी प्रमाण काल पर्यंत चञ्चविहारोज
 होय, एवो आम्नाय ठे, एटले, रात्रिना चार पद्दोर
 जे रात्रिज्जोजननो नियम करयो हतो. तेना तीरण
 रूप एटले शिद्धारूप ए पञ्चस्काण ठे. ए पञ्चस्काणमां
 वे घनी सूधी चञ्चविहार होय, माटें वे घनी वीत्या
 पठी नवकार गणे, तो पद्दोंचे, पण वे घनी वीत्यानी
 अगाउ नवकार गणे, तो न पद्दोंचे.

हवे शेनुं पञ्चस्काण करे ? ते कहे ठे. (चञ्च-
 विहृपिआहारं के०) चारे प्रकारना जे आहार तेनुं
 पञ्चस्काण करे, ते आहारनां नाम कहे ठे

एक (अक्षणं के०) अक्षन एटले शालि, ज्वार,
 गोधूम, बटी प्रमुख तथा सर्व जातिना उदन एटले
 ज्ञात तथा मग, मठ अने तूवर प्रमुख सर्व कठोल
 तथा सायुआदिक सर्व जातिना लोट, तथा मोदका-
 दिक सर्व जातिनां कंद, तथा मांदा प्रमुख सर्व
 जातिनी केखवेली वस्तु, ए सर्वने अक्षन कहिये.
 तेमज वेशण, वरियाली, घाणा, सुआ, आर्दे देइने
 बीजी पण केटलीएक वस्तुउने अक्षनज कहिये.

अने काकनी प्रमुखनां धोयण तथा नर्दी प्रमुख सर्व
जलाशयना पाणी, ए सर्व पाणी कहीये. तथा शा-
करवाणी, आदवाणी, आंचिलवाणी अने शेलमीरस
प्रमुख ए सर्व, यद्यपि पाणीमाहे आवे ठे, तथापि
एने व्यवहारथी अरानज कहिये.

ग्रीष्म (साश्म के०) खादिम ते खारेक, बदाम
शिंशोना, खजूर, कोपरा, द्राक्ष, तथा अखोनादिक
सर्व जातिनो सेवो, तथा काकनी, आवा, फणस अने
नालियेर प्रमुख सर्व जातिना फल तथा शेकेलां धान्य
जेवां के धाणी, पहुआ प्रमुख तथा पापन प्रमुख ए
सर्वने खादिम कहिये

चोथु (साश्म के०) स्वादिम ते दतकाष्ट, शुठ,
हरने, पीपर, मरी, अजमो, जायफल, कसेलो, काथो,
खसखस, जेठीमध, तज, तमालपत्र, एलची, लाविं-
ग, जावंथ्री, सोपारी, पान, वीरु लवण, आजो, अ-
जमोद, कलिंजण, पिंपटीमूल, चिणिकवाव, कचूरो,
मोथ, काटासेलीयो, कपूर, संचल, वैहेमां, आसलां,
हिंगाष्टक, हिंग, त्रिविसो, पुष्करमूल, जवासामूल,
चावची, चावलबाल, धवठाल, खेरठाल, खिजनाठा-

खं, पान, पंचकूल, तुलसी, जीहं, ए जीराने
केटलाएक सूत्र सिद्धांतोमां स्वादिम कहुं ठे, अत्ते
केटलाएक सूत्र सिद्धांतोमां खादिम कहुं ठे, तथा
अजमाने पण केटलाक एक आचार्य खादिम कहे
ठे. तथा कोठवनी, आमलगठी, लिंबुइपत्र, आंवागो-
टली प्रमुखने स्वादिम कहियें. ए चार प्रकारना
आहार कहा एम् ए पूर्वोक्त चारे प्रकारना आह-
रना नियम लेवाय हवे नियमजग थवाना जयने
लीधे अर्हीयां नोकारसीना पञ्चस्काणने विषे वे आ-
गार मोकलां भूके ठे, ते कहे ठे

१ (अन्नवृणान्नोगेण के०) अन्यत्रानाजोगात्
एटले विसरवा थकी ते अर्हीयां पञ्चस्काणनो उप-
योग विसरवाथकी अजाणपणे अनुपयोगें कोइ वस्तु
मुखसा प्रक्षेप करवाथी पञ्चस्काण जंग न थाय, परतु
वचमां पञ्चस्काण सांजरे तेवारे तरत मुखथी त्याग
करे, थूकी नाखे तो पञ्चस्काण न जांगे, अथवा अ-
जाणपणे मुखथकी हेतुं उतरया पठी कालांतरें सां-
जखुं, अथवा तरत सांजखुं तो पञ्चस्काण न जांगे,
पण शुद्ध व्यवहार माटे फरी नि शक न थाय तेथी

अने ककनी प्रमुखनां धोयण तथा नर्दी प्रमुख सर्व
जंदाशयनां पाणी, ए सर्व पाणी कहिये. तथा शा-
करवाणी, द्राक्षवाणी, आंचिलवाणी अने शेलनीरस
प्रमुख ए सर्व, यद्यपि पाणीमांहे आवे ठे, तथापि
एने व्यवहारथी अज्ञानज कहिये.

ग्रीजु (साश्म के०) खादिम ते खारेक, वदाम
शिंशोनां, खजूर, कोपरा, द्राक्ष, तथा अखोमादिक
सर्व जातिनो मेवो, तथा काकनी, आंवां, फणस अने
नालियेर प्रमुख सर्व जातिनां फल तथा शेकेलां धान्य
जेवां के धाणी, पटुंआ प्रमुख तथा पापन प्रमुख ए
सर्वने खादिम कहिये.

चोथु (साश्म के०) स्वादिम ते दतकाष्ट, शुंठ,
हरके, पीपर, मरी, अजमो, जायफल, कसेलो, काथो,
खसखस, जेठीमध, तज, तमालपत्र, एलची, लविं-
ग, जावत्री, सोपारी, पान, वीरु लवण, आजो, अ-
जमोद, कलिजण, पिपलीमूल, चिणिकवाव, कचूरो,
मोथ, कांटासेलीयो, कपूर, संचल, वैहेना, आमलां,
हिंगाष्टक, हिंग, त्रिविसो, पुष्करमूल, जवासामूल,
चावची, चावलठाल, धवठाल, खेरठाल, खिजमाठा-

खं, पान, पंचकूल, तुलसी, जीहं, ए जीराने
 केटलाएक सूत्र सिद्धांतोमां स्वादिम कह्युं ठे, अत्ते
 केटलाएक सूत्र सिद्धांतोमां खादिम कह्युं ठे, तथा
 अजमाने पण केटलाक एक आचार्य खादिम कहे
 ठे तथा कोठवनी, आमलगंठी, लिबुइपत्र, आवागो-
 टली प्रमुखने स्वादिम कहियें, ए चार प्रकारना
 आहार कहा. एम् ए पूर्वोक्त चारे प्रकारना आहा-
 रना नियम लेवाय हवे नियमजंग थवाना जयने
 लीधे अर्हीयां नोकारसीना पच्चस्काणने विषे वे आ-
 गार मोकलां भूके ठे, ते कहे ठे

१ (अन्नवृणान्नोणेण केण) अन्यत्रानाज्जोगात्
 एटले विसरवा थकी ते अर्हीयां पच्चस्काणनो उप-
 योग विसरवाथकी अजाणपणे अनुपयोगें कोइ वस्तु
 मुखमां प्रक्षेप करवाथी पच्चस्काण जंग न थाय, परंतु
 वचमां पच्चस्काण साजरे तेवारें तरत मुखथी त्याग
 करे, थूकी नाखे तो पच्चस्काण न जागे, अथवा अ-
 जाणपणे मुखथकी हेतुं उतरया पठी कालांतरें सां-
 जखु, अथवा तरत सांजखुं तो पच्चस्काण न जागे,
 पण शुद्ध व्यवहार माटें फरी निशंक न थाय तेथी

यथा योग्य प्रायश्चित्त लेवुं, ए रीतें सर्व आगारोने
विषे जाणी लेवुं

१ (सहसागारेण के०) जे पञ्चस्काण करयु
ठे, तेनो उपयोग तो विसरयो नथी, पण कार्य कर-
वामां प्रवर्त्ततां योग्य लक्षण सहसात्कार एटले स्व-
जावेंज मुखम ये प्रवेश थाय, जेम दधि मयतां ठांटो
उनी मुखमां पने, अथवा गाय, जेंश प्रमुख दोहोतां
थकां तथा घृतादिकनो तोल करतां अचानक ठांटो
उनी मुखमा पने, अथवा चउन्विहार उपवासें वर्षा-
काले मेघना ठांटा मुखमां पने, तेथी पञ्चस्काण जग
न थाय, ए रीतें पूर्वोक्त वे प्रकारना आगारे करी
(वोसिरामि के०) वे घनी सुधी चारे आहारने
वोसिरावु तुं, एटले अपञ्चस्काणी आत्माने ठांरुवु
॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ बीजुं पोरिसि साहपोरिसिनुं पञ्चस्काण ॥

॥ जग्गए सूरें पोरिसिं पञ्चस्कामि चउविहंपि
आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नव-
णाजोगेणं सहसागारेणं पठन्नकालेणं दिसा-

मोहेणं साहुवयणेणं सबसमाहिंवत्तिआगारेणं
वोसिरामि ॥ ९ ॥

एवं साहुपोरिसिय पच्चस्कामि पण कहेवुं.

अर्थ.--(पोरिसिं के०) प्रहर दिवस सुधी अने
साहुपोरिसिनु पच्चस्काण लीये तो सार्द्ध पोरिसि एटले
अर्द्ध प्रहर सहित एक प्रहर अर्थात् दोढ प्रहर सुधी
(पच्चस्कामि के०) नियम करुं इहां पुरुष प्रमाण
शरीरनी ठाया ज्यां होय, पण अधिक न्यून न होय
तेनें पोरिसि कहियें, अथवा पुरुष जमणे काने सूर्यनुं
विंव राखीने, दक्षिणायनने प्रथम दिवसें ढींचणनी
ठाया जे वखतें वे पगळां होय, ते वखतें पोरिसि
थाय तिहांसुधी पच्चस्काण करे

(असणंपाणंखाश्मंसाश्म के०) अशन, पान,
खादिम अने स्वादिम, ए चार प्रकारना आहारनो
नियम करुं वुं.

हवे आहार कहे ठे, एक (अन्नवृणाजोगेणं
के०) अनाजोगे एटले अजाणते विसरवायकी, बीजो
(सहसागारेण के०) सहसात्कारें, बीजो (~~कावेण~~
कावेण) कालनी प्रवृत्तता ते भेदादि,

दिग्दाह, रजोवृष्टि तथा पर्वत अने चादल प्रमुख
 करी सूर्य ढकाइ जाय, तेणें करी वखतनी वरावर
 खवर न पके. एवा अजाणपणायें करी-अधूरी पोरि-
 सियें पण पोरिसि पूर्ण थइ, एवुं समजीने पखरकाण
 पाखामां आवे, तो तेथी जग नही, अने कदापि
 ए रीतें अधूरी पोरिसियें जमवा वेठा एटलामा तरुको
 जोयो, अने जाण्यु जे हजी सवार ठे, पोरिसिनो
 वखत पूर्ण थयो नथी, तेवारें जे मूखमा कोलीपो
 होय, ते राखमा परवोने वेसी रहे, अने यावत्
 पोरिसि पूर्ण थया पठी, जमवा वेसे, तो पखरकाण
 जंगे नही

चोथुं (दिसामोहेणं के०) दिशिने मूढपणे एटले
 दिशिविपर्यास थयाथी अजाणते पूर्वने पश्चिम, अने
 पश्चिमने पूर्व करी जाणे, एम अजाणतां वेहेहुं पला
 य तो पखरकाण जग नही, अने थोहुं जम्या पठी,
 कोइना कदाथी जाणवामां आवे, तो मुखमांनो को
 लीयो-थुंकी नाखे ए रीतें दिशिनो मोह टढ्या पठी,
 अर्द्ध जम्यो वेसी रहे तो जंग नही.

पाचमं (साह्रवयणेणं के०) उग्घाम पोरिसि एवा-

साधुना वचनें करी पोरिसि जणी, सांजलीने पाळे,
 तो पचस्काण जग नहीं, पठी ज्यारे जाणवामां आवे,
 के साधु तो ठ घनीनी पोरिसि जणे ठे, तेवारें पूर्व-
 ली रीतें तेमज वेसी रहे, तो पचस्काण जांगे नहीं.
 ए पाठला वे आंगार ब्रमंतानां ठे

उठु (सर्वसमाहितवृत्तिआगारेणं के०) सर्व प्रकारें
 शरीरमां असमाधि ते अस्वस्थता रहे, एटले पच-
 स्काण करथा पठी तीव्र शूलादिक रोग उपने थके
 अथवा सर्पादिके रुधो होय, ते वेदनाथी जीव
 आर्त्तिमा पमे, अथवा जेवारें अकस्मात् कष्ट थाय,
 तेवारें सर्व-इंद्रियोनी समाधिने अर्थ अपूर्ण पचस्का-
 णे पण पथ्य औषधादिक लेवां पमे, तो तेथी पच-
 स्काण जग न थाय, अने समाधि थया पठी तेमज
 पाठलो विधि करे, उहां पण पचस्काणनो आपनार,
 गुरु वोसिरह कहे, अने शिष्य पचस्काणनो करनार
 होय, ते वोसिरामि कहे.

॥ अर्थ त्रीजु पुरिमहंतुं पचस्काण ॥

जगए सूर पुरिमहंतं पचस्कामि, चउविहंपि-
 आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नठ-

ણાજોગેણં સહસંગારેણં પઞ્ચસ્કાલેણં દિસા-
મોદેણં સાહુવચણેણં મહત્તરાગારેણં વોસિ-
રામિ ॥ ૩ ॥

અર્થ.- (જગદ સૂરે કે) સૂર્યના ઉદયથી માં-
નીને નવકાર સહિત (પુરિમહ કે) પહેલાં વે પ્રહર
સુધિ પુરિમાર્થ કહિયેં એટલે વે પ્રહર સુધી અશના-
દિક ચારે આહારનું પચ્ચસ્કાળ છે એના અન્નઘણાજો-
ગેણં इत्यादि આગારોના અર્થ સર્વ પ્રથમ લખાઈ
ગયા છે અને મહત્તરાગારેણનો અર્થ પ્રથમ નથી લ-
ખાયો, તો તેનો અર્થ (મહત્તર કે) કોઈ મહોટા
કાર્યેં એટલે પચ્ચસ્કાળમાં જેટલો કર્મનિર્જરાનો
લાજ થાય છે, તે કરતાં પણ અત્યંત મહોટો નિર્જી-
રાનો લાજ જે કાર્યમાં થતો હોય, અર્થાત્ કોઈ
ગ્લાનાદિકના, વૈયાવચ્ચને અર્થે કોઈ વીજા પુરુષથી
તે કાર્ય ન થઈ શકતું હોય, ત્યારે ગુરુ તથા સંઘના
આદેશથી પુરિમહનો વચ્ચત પૂર્ણ થયા વિના જો પા-
લવામાં આવે, તો પચ્ચસ્કાળ જંગ ન થાય. અને તે
કાર્ય પૂર્ણ થયા પછી પાનલોજ વિધિ સમજવો ॥૩॥

॥ अथ चोथुं विगइ निविगइनुं पच्चस्काण ॥

विगइउ निविगइउ पच्चस्कामि अन्नवणा-
जोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहवसंस-
ठेणं उस्सित्त विवेगेणं पमुच्च मस्सिएणं पारि-
ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिव-
त्तियागारेणं वोसिरामि ॥ ४ ॥

अर्थ-जोजन करतां जेथको कामादिक उन्मा-
दरूप विकार थाय, तेने विगइ कह्यीयें, ते निवीनां
पच्चस्काण ग्रहीने विगयना प्रमाणनी संख्या करे ए-
टले दूध, दहि, घृत, तेल, गोख प्रमुख विगइमाथी
एक पण विगइनु जे पच्चस्काण करवु, तेने विगइनुं
पच्चस्काण कह्यीये, अने समस्त विगइनु जे पच्चस्का-
ण करवु, तेने (निविगइउ पच्चस्कामि के०) निविनुं
पच्चस्काण करुं तु

हवे पच्चस्काण जगना जयथी जे आगार मोक-
लां मूके ठे, ते कहे ठे. एक अन्नवणाजोगेणं, बीजु
सहसागारेणं ए वेना अर्थ लखाइ गया ठे.
(लेवालेवेणं के०) लेपालेप ते

के घृत प्रमुख जे विगद्यनो नियम साधुने होय तेवी
घृतादिक विगद्यी गृहस्थनो हाथ खरमायेलो होय,
पठी तेने लूठी नाख्यो होय, तेवा हाथयी अथवा
खरमायेला चाटुवाने लुठीने ते चाटुवायी बहोरावे
अथवा पीरसे, तो पञ्चस्काण जग न थाय

चोथ (गिहृष्ठसप्तष्टेण के०) गृहस्थनु जे वाट-
की प्रमुख जाजन ते विगद्य प्रमुखें खरमयु होय, ते-
वा जाजनयी जे गृहस्थ अन्न आपे, ते अन्न जमे,
तो पञ्चस्काण जागे नहीं.

पाचमु (उक्लिप्तविवेगेण के०) गाढी विगद्ये गो-
ल प्रमुख ठे तेना कटका रोटली उपर नाखी करी
पठी उपानी परहा करवा होय, तेनी रोटली प्रमुख
लेतां पण पञ्चस्काण जग न थाय

ठह (पमुच्चमस्त्रिपण्ये के०) रोटला प्रमुखने ल-
गारेक सुहाला राखवाने अर्थे मोण दीधु होय, अ-
थवा लगारेक हाथ चोपनी कीधी होय, तेरेचवाली
रोटली प्रमुख तथा पुम्लादिक लेतां पञ्चस्काण जग
न थाय

सातमं पारिष्ठावणियागारेण, आठमं महन्तरगा-

રેણં, અને નવમું સઘસમાહિવંતિયાગારેણ, એ વ્રણ
આગારનો અર્થ, વીજા પ્રથમ લખાઈ ગયેલાં પચ્ચ-
સ્કાણોથી જાણવો ॥ ૪ ॥

॥ અથ એજ ચોથુ નિવિગડનું એકાસણ સહિત
પચ્ચસ્કાણ ॥

॥ ઝગ્ગએ સૂરે નિવિગડ એકાસણં પચ્ચસ્કા-
મિ તિવિહં પિ આહાર, અસણં લાહમ સાહમં
અન્નઢણાન્નોગેણં સહસાગારેણ લેવાલેવણં ગિ-
હઢસંસઠેણં ઝચ્ચિત્ત વિવેગેણં પહુચ્ચમચ્ચિણં
પારિઠાવણિયાગારેણં મહત્તરાગારેણં સઘસમા-
હિવત્તિયાગારેણં વોસિરામિ ॥ ૪ ॥

અર્થ - એમાં કહેલા આગારાદિકોનો અર્થ સર્વ
આગલના પચ્ચસ્કાણોમાં લખાઈ ગયો છે. હાં નિવી-
ના પચ્ચસ્કાણમાં જો પિન વિગડ અને ડવ્વવિગડ, એ
વેહુ વિગડનું પચ્ચસ્કાણ કરે, તો તેણે એમાં કહેલા
નવે રેવાં, અને જે એકલો ડવ્વવિગડ મા-
ત્રનો તેણે ઝચ્ચિત્તવિવેગેણં
૧૦ આગાર કહેવા ॥ ૪

॥ અથ પાંચમું એકાસણાંવિયાસણાંનું પચ્ચસ્કાણ ॥

ઊગ્ગણ સૂરે એકાસણં વિયાસણ પચ્ચસ્કા-
મિ, હુવિહં તિવિહં પિ આહારં અસણં સ્વાદમં
સાદમં અન્નઘ્નણાન્નગેણ સદસાગારેણં સાગા-
રિઆગારેણં આઠટ્ટણ પસારેણં ગુરુઅપ્પુઠ્ઠાણે-
ણં પારિઠાવણિઆગારેણં મહત્તરાગારેણ સદ્ધ-
સમાહિવત્તિયાગારેણં વોસિરામિ ॥ ૫ ॥

અર્થ - ઊગ્ગણ સૂરે ઇત્યાદિકનો અર્થ પ્રથમના પચ્ચસ્કાણોમાં લખાઈ ગયો છે, જ્યાં એક વાર (અસણ કે ૦) નોજન કરવું તેને એકાસણું કહીયે અથવા જ્યાં એકજ આસન છે, તે એકાસણ કહેવાય છે, અને વેવાર નોજન કરવું તેને વિઆસણું કહીયે, તેનું (પચ્ચસ્કામિ કે ૦) પચ્ચસ્કાણ કરવું. એકાસણું અથવા વિયાસણું કર્યા પછી જો સ્વાદિમ અને પાણીયે બે આહાર લેવા હોય તો હુવિહપિ આહારં કહે એટલે અગ્ન અને સ્વાદિમ એ બે આહારનું પચ્ચસ્કાણ કરે. અને જો એકાસણું કરી રહ્યા પછી એકજ પાણી મોકલું રાખે, તો તિવિહપિ આહાર એટલે અગ્ન,

खादिम अने स्वादिम, ए त्रणे आहारनुं पचस्काणे
करे, अने जम्या पठी एक पाणी मोकळु राखे, तें वारें
असणें खाश्मं साश्मंनो पाठ कहियें हवे एनां आ-
गार कहे ठे त्यां एक अन्नवृणाजोगेण अने बीजो
सह सागारेण, एना अर्थ लखाइ गया ठे

त्रीजु (सागारिआगारेणं के०) साधु जमवा वेठा
पठी त्यां कोइ सागारिक जे गृहस्थ ते आव्यो, पठी
ते चाव्यो जतो होय तो दण एक सबूर करे, वेजी
रहे, अने जो तेने त्यां स्थिर रहे तो जाणे, अने गृ-
हस्थनी नजर पळे, तो साधु त्यांथी उठीने बीजे
स्थानकें जइ आहार लीये केम के गृहस्थनी देख-
तां जमे तो प्रवचनोपधातिक माहादोष सिद्धांतमां
कह्या ठे, ते लागे ए साधु आश्री कह्यु, अने गृहस्थ
आश्री तो गृहस्थ एकासणु करवा वेठा पठी जेनी
दृष्टि पकता अन्न पचे नहीं, एवा कोइ पुरुषनी दृष्टि
पळे, अथवा सर्प आवे, चोर आवे, बंदीवान आवी
उजो रहे, अकस्मात् अग्नि लागे, घर पकवा मांके,
तथा अकस्मात् पाणीनी रेल आवे, इत्यादिक का-
रणें ते स्थानकथी उठीने बीजे स्थानकें जइ एका-

॥ અથ પાંચમું એકાસણાંવિયાસણાંનું પચ્ચસ્કાણ ॥

ઝગ્ગાં સૂરે એગાસણં વિયાસણં પચ્ચસ્કા-
મિ, હુવિહં તિવિહં પિ આહારં અસણં સ્વાદમં
સાદમં અન્નઘ્ણાન્નોગેણં સદ્દસાગારેણં સાગા-
રિઆગારેણં આઉટ્ટણ પસારેણં ગુરુઅપ્પુઠાણે-
ણં પારિઠાવણિઆગારેણં મહત્તરાગારેણ સદ્ધ-
સમાહિવત્તિયાગારેણં વોસિરામિ ॥ ૬ ॥

અર્થ -ઝગ્ગાં સૂરે ઇત્યાદિકનો અર્થ પ્રથમના
પચ્ચસ્કાણોમાં લખાઈ ગયો છે, જ્યાં એક વાર (અસણ
કે०) ઝોજન કરવું, તેને એકાસણ કહીયેં અથવા
જ્યાં એકજ આસન છે, તે એકાસણ કહેવાય છે, અને
વેવાર ઝોજન કરવું તેને વિઆસણું કહીયેં, તેનું
(પચ્ચસ્કામિ કે०) પચ્ચસ્કાણ કરવું એકાસણ અથ-
વા વિયાસણું કરવા પઠી જો સ્વાદિમ અને પાણીયેં
વે આહાર લેવા હોય તો હુવિહંપિ આહાર કહે એ-
ટલે અગ્ન અને સ્વાદિમ એ વે આહારનું પચ્ચસ્કાણ
કરે અને જો એકાસણ કરી રહ્યા પઠી એકજ પાણી
મોકલું રાખે તો તિવિહંપિ આહારં એટલે અગ્ન,

खादिम अने स्वादिम, ए त्रणे आहारुनु पचस्काणे
करे, अने जम्या पठी एक पाणी मोकळु राखे, तेवारे
असणं खाइमं साइमनो पाठ कहियें हवे एनां आ-
गार कहे ठे त्यां एक अन्नवृणान्नोगेणं अने वीजो
सह सागारेण, एना अर्थ लखाइ गया ठे

त्रीजु (सागारिआगारेणं के०) साधु जमवा वेठा
पठी त्यां कोइ सागारिक जे गृहस्थ ते आव्यो, पठी
ते चाव्यो जतो होय तो द्वाण एक सबूर करे, वेगी
रहे, अने जो तेने त्या स्थिर रहे तो जाणे, अने गृ-
हस्थनी नजर पमे, तो साधु त्यांथी उठीने वीजे
स्थानकें जइ आहार लीये केम के गृहस्थनी देख-
तां जमे तो प्रवचनोपधातिक माहादोष सिद्धातमां
कह्या ठे, ते लागे ए साधु आश्री कळुं, अने गृहस्थ
आश्री तो गृहस्थ एकासणु करवा वेठा पठी जेनी
दृष्टि पकतां अन्न पचे नही, एवा कोइ पुरुषनी दृष्टि
पमे, अथवा सर्प आवे, चोर आवे, वदीवान आवी
उजो रहे, अकस्मात् अग्नि लागे, घर पकवा मांमे,
तथा अकस्मात् पाणीनी रेल आवे, इत्यादिक का-
१ उठीने व २ जइ एका-

सणुं करतां पञ्चस्काण ज्ञागे नही.

; चोथु (आउटणपसारेणं के०) जमवा वेठा पठी हाथ पंग जंघादिक अंगोपांग पसारतां तथा संकोचतां कांश्चासन चलायमान थाय तो पञ्चस्काण जंग न थाय. पांचमु (गुरुअप्पुठाणेण के०) पञ्चस्काणें जमवा वेठां ठतां गुरु जे आचार्य उपायाय तथा साधु आवे, तेमना विनय साचववाने अर्थे वे पगने ठामें राखी उठवुं पने, तो पञ्चस्काण जंग न थाय

ठहुं (पारिठावणिचागारेण के०) विधिये नि-
दोपपण ग्रहण करेलुं अने विधियें वेहेची आप्यु जे
अन्न तेने साधुये विधियें जुक्त करयां यकां कांद्दि
जगरयु एवुं पारिष्ठापनयोग्य जे अधिक अन्न ते स्नि-
ग्ध अन्नने परवत्रता जीव विराचनादि घणा दोष उ-
पजे ठे, एवु जाणीने तेवु अन्न तथा विगयादिकने
गुरुनी आज्ञायें एकाक्षणादिकथी मांमीने उपवास प-
र्यंत पञ्चस्काणवालाने वधेला आहारने जमता पञ्च-
स्काण जंग न थाय, ए आगार यतिने होय, पण
श्रावकने न होय, तथापि आलावो त्रूटे माटें गृह-
स्थने एकज पाठ सलस कहेंता दोष नथी.

(१३५)

सातमुं सहस्ररागारेण, अने आठमुं सवसमा-
हिवत्तियागारेणना अर्थ लखाइ गया ठे. (वोसिरामि
के०) वोसिरावुं बु ॥ ५ ॥

॥ अथ ठतु एकलठाणनुं पच्चस्काण ॥

उग्गए सूरे एगलठाणं पच्चस्कामि ॥ तिविहंपि
आहारं असणं खाइमं, साइमं, अन्नवणा-
जोगेणं सहस्रागारेणं सागारिआगारेणं गुरु-
अप्पुठाणेणं पारिठावणिआगारेणं महत्तरा-
गारेणं सवसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरामिदा।

अर्थ - एकलठाणानु पच्चस्काण पण एकासणा
प्रमाणेंज ठे, परंतु एमा हाथ पमादिकनो सकोच
विकोच थाय माटे सात आगार ठे, तेथी एक आ-
उट्टणपसारेणं ए आगार न कहेवु ॥ ६ ॥

॥ अथ सातमु आंविखनुं पच्चस्काण ॥

उग्गए सूरे आयंविखं पच्चस्कामि तिवि-
हंपि आहारं असण, खाइमं साइमं, अन्नव-
णाजोगेणं सहस्रागारेणं लेवालेवेणं गिहव-

संसठेणं उक्खित्तविवेगेणं पारिठावणिआगा-
रेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तिआगारेणं
पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अठेण वा
बहुलेवेण वा ससिठेण वा असिठेण वा वो-
सिरामि ॥ इति आयविल पच्चस्काण समाप्तं

अर्थ.- (आयंविल पच्चस्काइ के०) आंविलनुं
पच्चस्काण करुं तु तेना आठ आगार ठे, तेमांथी एक
अन्नठणान्नोगेण अने बीजु सहसागारेणं ए वे आ-
गारना अर्थ आगल लखाइ गया ठे

बीजुं (लेवालेवेणं के०) जे विगय तथा शा-
कादिकने सस्नेह लें आंगली तथा ज्ञाजनादिक ख-
रब्बा होय, तेने लेप कहियें, पठी तेनेज घणी सारी
रीतें लुठी नाखीने जेमा विगयादिकना अवयव कांइ
पण देखाय नहीँ एवु करयु होय तेने अलेप कहियें.
एवा लेपअलेपवाला ज्ञाजन होय, अथवा हाथ ले-
पालेपवालां होय, एना कांइ लेप अलेपवाला ज्ञाजनें
तथा हाथे पीरसवाथकी पच्चस्काण जग न थाय. एने
लेपालेप आगार कहियें

चोथुं (गिहठसंसष्टेणं के०) गृहस्थें पोताने अर्थे हाथ तथा चाटुआदिकने विगयें करी खरड्या होय, तेवा हाथे अथवा चाटुआदिकें अन्न आपे. ते अन्न जमता थकां आंविल जंग न थाय

पांचमूं (उस्किच्चविवेगेणं, के०) गाढी विगय जे गोल प्रमुख ठे तेने रोटली उपर मूकीने फरी पराहि करी होय, तेवी रोटली निवि आविलमां लेतां पच्चरकाण जंग न थाय

ठहूं (. पारिष्ठावणिआगारेणं के०) परठवतो आहार लेतां एटले कोइ साधुयें अधिक वहोरयुं होय, पठी ते तेने परठववानु होय, ते परठवता तेने घणीज अजयणा लागे, अने तेज विगय प्रमुखनुं पोताने पच्चरकाण पण होय, अथवा पोतें आयविल तप करयुं होय, तेम ठतां पण, गुरुनी आज्ञायें तेवा आहारने लेवा थकी पण पच्चरकाण जंग न थाय

सातमूं (महत्तरागारेण के०) सहोटी निर्झराने लाजे पच्चरकाण जागे नही आठमूं (सबसमा हिवत्तिआगारेण के०) सर्व प्रकारें शरीर असमाधियें पच्चरकाण जागे नही, वोसिरामि एतो अर्थ सुलज्ज

संसर्गेणं उक्खित्तविवेगेणं पारिठावणिआगा-
रेणं मद्दत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं
पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अठेण वा
बहुलेवेण वा ससिठेण वा असिठेण वा वो-
सिरामि ॥ इति आयंविअ पच्चस्काण समाप्तं

अर्थः—(आयविअ पच्चस्काइ के०) आंविअनुं
पच्चस्काण कहं तु तेनां आठ आगार ठे, तेमांथी एक
अन्नठणानोगेणं अने बीजुं मद्दसागारेणं ए वे आ-
गारना अर्थ आगल लखाइ गया ठे.

बीजुं (लेपालेणे के०) जे विगय तथा शा-
कादिकने सस्नेह लें आगली तथा ज्ञाजनादिक स-
रट्या होय, तेने लेप कहियें, पठी तेनेज घणी सारी
रीतें छुंठी नाखीने जेमा विगयादिकना अवयव कांड
पण देखाय नहीं एवुं करयुं होय तेने अलेप कहियें.
एवा लेपअलेपवालां ज्ञाजन होय, अथवा हाथ ले-
पालेपयाला होय, एवा कांड लेप अलेपवाला ज्ञाजनें
तथा हाथे पीरसवाथकी पच्चस्काण जग न आय. एने
लेपालेप आगार कहियें

चोथुं (गिह्वसंसष्ठेणं के०) गृहस्थे पोताने
अर्थे हाथ तथा चाटुआदिकने विगये करी खरड्या
होय, तेवा हाथे अथवा चाटुआदिके अन्न आपे.
ते अन्न जमतां थकां आंबिल जग न थाय.

पाचमूं (उरुक्त्तविवेगेणं, के०) गाढी विगय
जे गोल प्रमुख ठे तेने रोटली उपर मूकीने फरी
पराहिं करी होय, तेवी रोटली निवि आंबिलमां लेतां
पच्चस्काण जग न थाय

ठहुं (पारिष्ठावणिआगारेणं के०) परठवतो
आहार लेतां एटले कोइ साधुयें अधिक वहोरयुं
होय, पठी ते तेने परठववानु होय, ते परठवता तेने
घणीज अजयणा लागे, अने तेज विगय प्रमुखनुं
पोताने पच्चस्काण पण होय, अथवा पोते आयविल
तप करयु होय, तेम ठतां पण, गुरुनी आझायें तेवा
आहारने लेवा थकी पण पच्चस्काण जग न थाय

सातमूं (महत्तरागारेण के०) सहोटी निर्ज-
राने लाजे पच्चस्काण जागे नही आठमूं (सवसमा
हिवत्तिआगारेण के०) सर्व प्रकारें शरीर असमाधियें
पच्चस्काण जागे नहीं, वोसिरामि एनो अर्थ सुलज्ज

संसर्गेणं उक्खित्तविवेगेणं पारिठावणिआगा-
रेणं महत्तरागारेणं सवसमाद्विवत्तिआगारेणं
पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अत्तेण वा
बहुलेवेण वा ससित्तेण वा असित्तेण वा वो-
सिरामि ॥ इति आयविल पच्चस्काण समाप्तञ्च

अर्थ- (आयविल पच्चस्काइ के०) आविलनुं
पच्चस्काण करुं तु तेना आठ आगार ठे, तेमांथी एक
अन्नवणान्नोगेण अने बीजु सहसागारेण ए वे आ-
गारना अर्थ आगल लखाइ गया ठे

बीजु (लेवालेयेण के०) जे विगय तथा शा-
कादिकने सस्नेह लें आगली तथा ज्ञाजनादिक ख-
रब्ध्या होय, तेने लेप कहियें, पठी तेनेज घणी सारी
रीतें छुठी नाखीने जेमां विगयादिकना अवयव कांइ
पण देखाय नहीं एवुं करयु होय तेने अलेप कहियें.
एवा लेपअलेपवाला ज्ञाजन होय, अथवा हाथ ले-
पालेपवाला होय, एवा कांइ लेप अलेपवाला ज्ञाजनें
तथा हाथे पीरसवाथकी पच्चस्काण जग न थाय एने
लेपालेप आगार कहियें.

चोथुं (गिह्वसंसष्ठेण के०) गृहस्थे पोताने
अर्थे हाथ तथा चाटुआदिकने विगये करी खरड्या
होय, तेवा हाथे अथवा चाटुआदिकें अन्न आपे.
ते अन्न जमता थका आविल जंग न थाय

पांचमूं (उस्किन्नविवेगेण के०) गाढी विगय
जे गोल प्रमुख ठे तेने रोटली उपर मूकीने फरी
परहिं करी होय, तेवी रोटली निवि आंविळमां लेतां
पच्चस्काण जंग न थाय

ठहूं (पारिष्ठावणिआगारेण के०) परठवतो
आहार लेतां एटले कोइ साधुयें अधिक बहोरयुं
होय, पठी ते तेने परठववानुं होय, ते परठवता तेने
घणीज अजयणा लागे, अने तेज विगय प्रमुखनुं
पोताने पच्चस्काण पण होय, अथवा पोतें आयविल
तप करयुं होय, तेम ठतां पण, गुरुनी आझार्ये तेवा
आहारने लेवा थकी पण पच्चस्काण जंग न थाय.

सातमूं (महत्तरागारेण के०) महोटी निर्झ-
राने लाजे पच्चस्काण जागे नही आठमूं (सबसमा
द्विवत्तिआगारेण के०) सर्व प्रकारें शरीर असमाधियें
पच्चस्काण जागे नहीं, वोसिरामि एनो अर्थ सुखज

ठे, तथा उष्ण पाणी वावरवा मादें, पाणस्त एटले पाणीना लेप अलेपादिक ठ आगार कल्यां ठे, तेनो अर्थ आगल तिविहार उपवासना पच्चरकाणमां आवशे ॥ ७ ॥

॥ अथ आठमू चउविहार उपवासनुं पच्चरखाण ॥

उगए सूरें अन्नत्तठ पच्चरकामि चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नन्न-
णाजोगेण सहसागारेणं महत्तरागारेणं सब-
समाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ ८ ॥

अर्थ.—सूर्यना उदयथी मानीने (अन्नत्तठ के०) अन्नक्तार्थं एटले जात पाणी खावा नही तेने अर्थे. (चउविहंपिआहार के०) चारे आहारनो (पच्चर-
स्वामि के०) नियम करु तु. ते चार आहारना नाम कहे ठे एक अशन, बीजु पान, त्रीजु खादिम, अने चोथु स्वादिम, हवे एना आगार कहे ठे. एक अ-
न्नन्नणाजोगेणं, बीजु सहसागारेण, त्रीजु पारिछावणि आगारेण, चोथु महत्तरागारेणं, अने पावमुं सबल-
साहिवत्तिआगारेण, एनो अर्थ लखाइ गयो ठे.

तथापि पारिष्ठावणिआगारेणंनार्थमां, विशेष
 एटलुं ठे के, पाणी अने आहार ए वे वानां कोइ
 परठवतो होय तो गुरुनी आझायें आहार कीधो कटपे,
 पण एकलो आहारज कोइ परठवतो होय तो ते
 आहार कीधो कटपे नहीं, केम के ? चउव्वि-
 हारमां पाणीनो नियम ठे, अने पाणी विना मुख
 शुद्ध न थाय. माटें पाणी अने आहार ए वे वानां
 परठवतो होय तो चउव्विहार उपवासमां लीधा कटपे
 अने तिविहार उपवासमां तो पाणीमोकलुं ठे, माटें
 एकलो आहार कोइ परठवतो होय तो पण गुरुनी
 आझायें लीधो कटपे ॥ ८ ॥

॥ अथ नवमूं तिविहार उपवासनु पच्चख्खाण ॥

उग्गए सूरें अन्नत्तठं पच्चस्कामि तिविहंपि
 आहार असणं खाइमं साइमं अन्नत्तणानो-
 गेणं सहसागारेण पारिष्ठावणि आगारेणं म-
 हत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं पाणहा-
 र पोरिसिं पच्चस्कामि ॥ अन्नत्तणानोगेणं सह-
 सागारेणं पच्चन्नकाळेणं दिसामोहेणं साहुवर्य-

णेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं
पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अत्तेण वा,
बहुलेवेण वा, ससित्तेण वा, असित्तेण वा
वासिरामि ॥ १९ ॥

अर्थ -(सूरजगए के०) सूर्यना उदयथी आ-
रंजीने (अन्नत्तठ के०) अन्नकार्थ एटले उपवासनु
(पच्चस्काणि के०) पच्चस्काण करुं तुं, ए त्रिविहारमां
एक पाणीनो आहार मोरुलो राखीने बाकीना (अ-
सणं के०) अशन अने (खाश्म के०) खादिम, तथा
(साश्म के०) स्वादिम ए (त्रिविहपिआहारं के०)
त्रण आहार तेनो नियम करुं तुं हवे एनां आगार
कहे ठे

एक अन्नवणानोगेण, वीजु सहसागारेण, वीजु
पारिठावणि आगारेण, चोथुं महत्तरागारेणं, पांचमुं
सबसमाहिवत्तियागारेण, एना अर्थ सर्व प्रथमना
पच्चस्काणोमा लखाणा ठे

ए पच्चस्काणमां पोरिसी साढपोरिसी अथवा
पुरिमार्द्ध पठी (पाणहार के०) पाणीनो आहार मो-
रुलो ठे. तेनां आगार कहे ठे.

(पाणस्स के०) पाणी पीवानां ठ आगारठे, ते कहे ठे, (लेवेणवा के०) लेपजल ते खजूरनुं तथा आठण, बीजुं (अलेवेणवा के०) अलेपजल ते धो-यण प्रमुख, त्रीजुं (अद्येण वा के०) निर्मल उण्ण पाणी, चोथुं (बहुलेवेण वा के०) मोलु तांदुलनुं धो-यण प्रमुख, पांचमु (ससिद्येण वा के०) सीथ स-हित पीठनुं धोअण, ठनु (असिद्येण वा के०) सीथ रहित फासु जल, एटला टाली वाकीनां पाणीने (वो-सिरामि के०) वोसिरावुं वु.

॥ अथ दशमुं राते चउविहार करवो, तेनुं प-च्चरकाण तथा नवचरिमनुं ॥

दिवसचरिमं पच्चस्कामि चउविहपि आ-हारं असणं पाणं खाइमं साइम अन्नवणा-जोगेणं सहसागारेण महत्तरागारेणं सब स-माद्विवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ ए ॥

अर्थः—(दिवसचरिम के०) दिवसना ठेहेमाथी मांमीने एटले संध्या समयथी मांमीने ज्यां, लगे नवो सूर्य उगे नहीं त्यां सुधी पच्चरकाण जाणवुं अने जे

जावजीव पर्यंत सेंथारो करवानी बेलायें चार आहार-
 नुं पच्चस्काण करे, तेने जवचरिम एवो पाठ कहियें
 शेष “ चउविहंपि ” इत्यादिनो अर्थ सुलज्ज ठे ॥ १० ॥
 अथ गठसहियं मुठसहियादि अग्निग्रहोनुं पच्चस्काण ।

सूरे उग्गए गंठसहियं मुठसहियं पच्च-
 स्कामि चउविहंपि आहारं असणं पाणं खा-
 इम साडमं अन्नत्तणान्नोगेणं सहसागारेणं म-
 हत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसि-
 रामि ॥ इति ॥

अर्थ.—गांठ सहित पच्चस्काण ते कोइ दोरा
 प्रमुखनी गाठ बांधी राखे तिहा सुधी पच्चस्काण
 कहं तु, गांठ ठोक्या पठी मोकलो एमज मूठ बांधी
 राखे ते मुठसहिये तथा मुठवच्चे अंगुठो राखे, ते
 अंगुठ सहियं इत्यादि अग्निग्रह जाणवा. पाठलो
 अर्थ सुलज्ज ठे ॥ ११ ॥

॥ अथ चउद नियम धारनारने देसावगासिक
 अग्निग्रहनुं पच्चस्काण ॥

देसावगासिअं उवन्नोगं परिन्नोगं पच्चस्का-

जावजीव पर्यंत संधारो करवानी वेलायें चार आहा-
रनु पच्चरकाण करे, तेने जवचरिम एवो पाठ कहीयें
शेष “ चउविहपि ” इत्यादिनो अर्थ सुखज ठे ॥१०॥
।अथगठसहियं मुठसहियादि अजिग्रहोनुं पच्चरकाण।

सूरे उगए गंठसहियं मुठसहियं पच्च-
रकामि चउविहं पि आहारं असणं पाणं खा-
इमं साइमं अन्नतणानोगेणं सहसागारेणं म-
हत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसि-
रामि ॥ इति ॥

अर्थः—गांठ सहित पच्चरकाण ते कोइ दोरा
प्रमुखनी गांठ बांधी राखे तिहा सुधी पच्चरकाण
करु तु, गांठ ठोरुया पठी मोकळो एमज मूठ बांधी
राखे ते मुठसहिय तथा मुठवच्चें अंगुठो राखे, ते
अंगुठ सहियं इत्यादि अजिग्रह जाणवा. पाठलो
अर्थ सुखज ठे ॥ ११ ॥

॥ अथ चउद नियम धारनारने देसावगासिक
अजिग्रहनुं पच्चरकाण ॥

देसावगासिअं उवजोगें परिजोगें पच्चरका-

॥ अथ श्री चतारी मंगलं ॥

चतारी मंगल, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
 साहु मंगलं, केवळी पन्नतो धम्मो मंगलं ॥ १ ॥ च
 तारी लोयुत्तमा, अरिहंता लोयुत्तमा, सिद्धा लोयुत्तमा,
 साहु लोयुत्तमा, केवळी पन्नतो धम्मो लोयुत्तमा ॥ २ ॥
 चतारी सरणं पवज्जामि अरिहंता सरणं पवज्जामि,
 सिद्धा सरणं पवज्जामि, केवळी पन्नता धम्मो सरणं
 सरणं पवज्जामि ॥ ३ ॥ श्री अरिहंतजीनु शरणं सि
 ऋजीनु शरणं, साधुजीनु शरणं, केवळी प्ररुण्या धर्म
 नुं शरणं ॥ ४ ॥ दोहा ॥ ए चार शरणां करे नर जेह,
 जवसायरमां न चूरे तेह ॥ सकळ कर्मनो आणे अंत,
 मोक्षतणां सुख लहे अनंत ॥ १ ॥ जाव धरीने जे गुण
 गाय, ते जीव तरीने मुगति जाय ॥ ससारमा शरणां
 चार, अवर शरणु नही होय ॥ जे नरनारी आदरे,
 तेने अक्षय अविचळ पद होय ॥ अंगुठे अमृत वसे,
 लब्धितणो जंमार ॥ जयगुरु गौतम समरिये, मनवां
 षित फळदातार ॥ ३ ॥

॥ अथ श्री चार शरणां प्रारंभ ॥

प्रह उठीने समस्ये, हो जवियण मगळिक शरणां चार ॥ आपदा मटी सपदा हुवे हो, जवियण दोलतना दातार ॥ हृदयमां राखीये, हो जवियण मगळिक शरणां चार ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अरिह सिद्ध साधुतणां हो० केवळी जापित धर्म ॥ ए शरणां नितयावतां हो० दुटे आठे कर्म ॥ ह० ॥ हो ॥ ॥ २ ॥ वाटे घाटे चालतां, हो० रात दिवस मोजा ॥ गाम नगर पुर विचरता हो० विघ्न निवारण हा ॥ ह० ॥ हो० ॥ ३ ॥ ए चारे सुख कारिया, हो० ए चारे जग सार ॥ ए चारे उत्तम कहां, हो० चारे हितकार ॥ ह० ॥ हो० ॥ ४ ॥ दायण सायण जूतमां, हो० सिंह चित्राने शूर ॥ वैरी झुडमन चोरटा, हो० रहे ते सघळा पुर ॥ ह० ॥ हो० ॥ ५ ॥ राखो शरणांनी आसता, हो० नेमो नहि आवे रोग ॥ आणद वर्ने ण नामथी, हो० वहाला तणो संयोग ॥ ह० ॥ हो० ॥ ६ ॥ सुख शांता वर्त्ते घणी, हो० जे ध्यावे नेरनार ॥ परजव जातां ण जीवने, हो०

एह तणो आधार ॥ ह० हो० ॥ ७ ॥ मन चितित
 मनोरथ फले, हो० वर्ते कोम कल्याण ॥ शुद्धे मने
 ध्यावता, हो० निश्चे पद निरवाण ॥ ह० ॥ हो० ॥ ७ ॥
 इण सरिखो गरणो नहि, हो० इण सरिखो नहि नाम
 ॥ इण सरिखो मित्र नही, हो० गाम नगरपुर ठाम
 ॥ ७ ॥ हो० ॥ ८ ॥ दान दियल तप जावना, हो०
 जगमे तत्तम सार ॥ करो आराधो जावगु हो० पामो
 मोक्ष दुवार ॥ ७ ॥ हो० ॥ ९ ॥ जोम कीधी ठે जुगनि
 शु, हो० पाली गेखाकाल ॥ रुपि चोथमलजी उम जणे,
 हो० सुणजो बाल गोपाल ॥ ७ ॥ हो० ॥ १० ॥ इति ॥
 ॥ अथ શ્રાવક નિચે લેખેલા ત્રણ મનોરથને
 ચિતવતો થકો મહા મોટી નિર્જરા કરે,

સંસારનો અત કરે, તે લેખિયે ઠેણ.

॥ ૧ ॥ તિહા પહેલો મનોરથ કહીએ ઠીએ શ્રમ
 ણોપાસક શ્રાવક એમ ચિંતવે જે કેવારે હુ, યાહ્ય તથા
 અન્યતર એવો આજ્ઞ અને પરિગ્રહ થોમો ને ઘણો,
 ન્હાનો અને મ્હોટો, સચિત્ત, અચિત્ત અને મિશ્ર, હલવો
 ને જારી, જે મહા પાપનું મૂલ, દુર્ગતિને વધારનારો,

મહા કામ, ક્રોધ, માન, માયા, લોજ્ઞ, વિષય અને
 કપાયનો સ્વામી, મહા દુઃખનુ કારણ, મહા અનર્થ
 કારી, મહાદૂર્ગતિની શિલા, માઠી લેશ્યાના અધ્યવ
 સાયનો પરિણામી મહા અજ્ઞાન, મોહ, મત્સર, રાગ
 અને દેષનુ મૂલ, દશવિધ યતિધર્મરૂપ કલ્પવૃક્ષ તરૂ
 પવનનો દાવાનલ, જ્ઞાન ક્રિયા, દામા, દયા, સત્ય,
 સતોપનો નાશ કરનારો, તથા વોધ વીજરૂપ સમકિ-
 તનો નાશ કરનારો, સયમવ્રત અને વ્રહ્મચર્યનો ધાત
 કરનારો, મહા કુમતિ તથા કુવુદ્ધિરૂપ દુઃખ દારિદ્રનો
 દેવાવાલો, સુમતિ અને સુવુદ્ધિરૂપ સૂઝ સૌજાગ્યનો
 નાશ કરનારો, મહાતપ સયમરૂપ ધનને લૂંટનારો,
 મહા લોજ્ઞ ક્લેશરૂપ સમુદ્રનો વધારનારો, મહા જન્મ,
 જરા અને મરણના જ્ઞયનો દેવાવાલો, મહા માયા એ
 ટલે કપટનો ઝંઝાર, મિથ્યાત્વ ધર્ગનરૂપ શબ્દે ઝરે
 લો, મહા મોહ માર્ગનો વિઘ્નકારી, મહા કર્મવાં કર્મ
 વિપાક ફલનો દેવાવાલો, અનત સસારનો વધારનારો,
 મહા પાપી, પાંચ ઇન્દ્રિયના વિષયરૂપ વેરીની પુષ્ટિનો
 કરનારો, મહોટી ચિંતા શોક, ગારવ અને લેદનો ક-

ઇહ તણો આધાર ॥ હ૦ હો૦ ॥ ૭ ॥ મન ચિંતિત
 મનોરથ ફલે, હો૦ વર્તે કોમ કલ્યાણ ॥ શુદ્ધે મને
 ધ્યાવતા, હો૦ નિશ્ચે પદ નિરવાણ ॥ હ૦ ॥ હો૦ ॥૭॥
 ઇણ સરિલો શરણો નહિ, હો૦ ઇણ સરિલો નહિ નામ
 ॥ ઇણ સરિલો મિત્ર નહીં, હો૦ ગામ નગરપુર ઠામ
 ॥હ૦॥ હો૦ ॥ ૯ ॥ દાન શિયલ તપ જાવના, હો૦
 જગમે તત્તય સાર ॥ કરો આરાધો જાવશુ હો૦ પામો
 મોક્ષ દુવાર ॥હ૦॥ હો૦ ॥૧૦॥ જોમ કીધી ઠે જુગતિ
 શુ, હો૦ પાલી રોલાકાલ ॥ સુપિ ચોથમલજી શ્મ જાણે,
 હો૦ સુણજો વાલ ગોપાલ ॥ હ૦ ॥ હો૦ ॥૧૧॥ ઇતિ॥
 ॥ અથ શ્રાવક નિચે લલેલા ત્રણ મનોરથને
 ચિતવતો થકો મહા મોટી નિર્જરા કરે,

સંસારનો અત કરે, તે લલિયે ટૈય.

॥ ૧ ॥ તિહા પહેલો મનોરથ કહીય ઠીય. શ્રમ
 ણોપાસક શ્રાવક એમ ચિંતવે જે કેગારે હુ, વાહ્ય તથા
 અગ્યતર એવો આજ્ઞ અને પરિગ્રહ થોમો ને ઘણો,
 ન્હાનો અને મ્હોટો, સચિત્ત, અચિત્ત અને મિથ્ર, હલવો
 ને જારી, જે મહા પાપનુ મૂલ, દુર્ગતિને વધારનારો,

મહા કામ, ક્રોધ, માન, માયા, લોજ, વિષય અને
 કપાયનો સ્વામી, મહા દુઃખનુ કારણ, મહા અનર્થ
 કારી, મહાદૂર્ગતિની શિલા, માઠી લેગ્યાના અધ્યવ
 સાયનો પરિણામી મહા અજ્ઞાન, મોહ, મત્સર, રાગ
 અને દેવનુ મૂલ, દશવિધ યતિધર્મરૂપ કલ્પવૃક્ષ તંત્ર
 પવનનો દાવાનલ, જ્ઞાન ક્રિયા, ક્ષમા, દયા, સત્ય,
 સતોપનો નાશ કરનારો, તથા વોધ વીજરૂપ સમકિ-
 તનો નાશ કરનારો, સયમવ્રત અને વ્રહ્મચર્યનો ઘાત
 કરનારો, મહા કુમતિ તથા કુવુદ્ધિરૂપ દુઃખ દારિદ્રનો
 દેવાવાલો, સુમતિ અને સુવુદ્ધિરૂપ સૂચ સૌજાગ્યનો
 નાશ કરનારો, મહાતપ સયમરૂપ ધનને લૂંટનારો,
 મહા લોજ ક્લેશરૂપ સમુદ્રનો વધારનારો, મહા જન્મ-
 જરા અને મરણના જયનો દેવાવાલો, મહા માયા એ
 ટલે કપટનો જંઘાર, મિથ્યાત્વ દર્શનરૂપ શબ્દે જરે
 લો, મહા મોહ માર્ગનો વિઘ્નકારી, મહા કર્મવાં કર્મ
 વિપાક ફલનો દેવાવાલો, અનત સંસારનો વધારનારો,
 મહા પાપી, પાંચ ઇન્દ્રિયના વિષયરૂપ વૈરીની પુષ્ટિનો
 કરનારો, મહોટી ચિંતા શોક, ગારવ અને ને—ક-

રનારો, મહા સંસારરુપ અગાધવદ્ધિનો સિંચવાગ્રાહો,
 મહા કુલ કપટનો આગાર, મહા વધ પરમ ક્લેશનો
 આગાર, મહોટા છેદનો કરાવનારો, મહા મંદબુદ્ધિનો
 આદર્યો, ઉત્તમ પુરુષ સાધુ નિમિત્તમાયે જેને નિંચો ઠે
 અને સર્વ લોકમા સર્વ જીવોને એના સરિસો વીજો
 કોઈ વિપત્તિ નથી, મોહરુપ પારાનો પ્રતિવંધક, ઇહ
 લોક તથા પરલોકના સુખનો નાશ કરનાર, મહા
 પાપી, પાંચ આશ્રવનો આગાર, મહા અનંત દારુણ
 કર્કશ કઠોર અઠતાં એવાં હુ લે અને જીતનો દેવા-
 વાલો, મહોટા સામ્રાજ્ય વ્યાપાર, કુવાણિજ્ય કુકર્મા-
 દાનનો કરાવનારો, મહા અધ્રુવ, અનિત્ય, અશાશ્વતો,
 અસાર, અત્રાણ, અશરણ, એવો જે આરંભ અને પરિ-
 ગ્રહ તેને હું કેવારે ઠાલીશ ! જે દિવસ ઠાલીજ, તે
 દિવસ મહારો ધન્ય ઠે । એવી રીતે પ્રથમ મનોરથ
 શ્રાવક કરે ॥ ૧ ॥

૨ હવે હુજા મનોરથમાં શ્રમણોપાસક શ્રાવક
 એમ ચિત્તવે જે કેવારે હું મૂંઝુ થઈને દશ પ્રકારે ચતિધ-
 મ ધારી, નવવાને વિશુદ્ધિ વ્રહ્મચારી, સર્વ સામંત પરિ-

હારી, અણગારના સત્તાવીશ ગુણધારી, પાચ સમિતિ
ત્રણ ગુણિયે વિશુદ્ધ વિહારી, મહોટા અન્નિગ્રહનો
ધારી, વેહેતાલીશ દોષ રહિત વિશુદ્ધ આહારી, સત્તર
જેદે સયમ ધારી, વાર જેદે તપશ્યાકારી, અત આ-
હારી, પ્રાંત આહારી, અરસ આહારી, વિરસ આહારી,
લુલ્લ આહારી, તુલ આહારી, અંતજીવી, પ્રાંતજીવી,
અરસ જીવી, વિરસ જીવી, લુલ્લજીવી, તુલ જીવી,
સર્વરસ ત્યાગી, ઠકાયનો દયાલ, નિલોંજી, નિ સ્વા-
દો, કુક્કો સંવલ, પલ્લી તુલ્ય, વાયરાની પેરે અપ્રતિ-
વંધ વિહારી, વીતરાગની આજ્ઞાસહિત, એહવા ગુણો-
નો ધારક, જે અણગાર તે હુ કેવારે થઈશ ! જે દિ-
વસ હુ પુર્વોક્ત ગુણવાન થઈશ તે દિવસ ધન્ય છે !
એ રીતે વીજો મનોરથ શ્રાવક કરે ॥ ૧ ॥

૩ હવે વીજા મનોરથમાં શ્રમણોપાસક શ્રાવક
એમ ચિત્તવે જે કેવારે હું સર્વ પાપસ્થાનક આલોશ,
નિંદી, નિશલ્ય થઈ સર્વ જીવરાજિ સ્વમાવોને, સર્વ
વાત સન્નારીને, અઢાર પાપસ્થાનકથી ત્રિવિધે ત્રિવિધે
કરી વે ૧ ૧ ચારે આહાર પચ્ચરખોને આઈઠ, કંતં,

पीयं, माणं, मणाणं, धिक्कं, विस्तसियं, समयं, अणु
 मय, बहुमय, जंरुकरंरुगसमाण, रयण करंरुगज्जूयं,
 माणसिया, माणउन्हा, माणखुआ, माणपीवासा,
 माणवाला, माणचोरा, माणदसमसगा, माणवाइय,
 पित्तिय, सब सनिवाइय, विविहा रोगायंका, परिसहो
 वसगा, फासा फुसति, एहवुं महारु शरीर ठे तेने
 ठेहे श्वासोश्वासें वोसिरावीने, त्रण आराधना आरा-
 धतो थको चार भगलिरुप चार गरण मुखे उचर-
 तो थको, सर्व संसारने पूठ देतो थको, एरु अरिहत,
 बीजा सिद्ध, त्रीजा साधु अने चोथा केवल्लि प्ररूपित
 ठ्याधर्म, तेना ध्यानने ध्यावतो थको, शरीरनी मम-
 ता रहित थयो थको, पादोगमन सधारा सहित, प-
 न्नि मरणना पाच अतिचार टाळतो थको, मरणने
 अणवाठतो थको एहवुं पन्नि मरण अतकाळे मुजने
 होजो ए रीते त्रीजो मनोरथ श्रावक करे ॥ ३ ॥

ए त्रण मनोरथने श्रमणोपासक श्रावक, मन-
 वचन अने कायाए करी मुखपणे ध्यावतो थको पन्नि
 जागरण माणे करतो थको, सर्व कर्मनी निर्झरा क-

रीने संसारनो अत करे मोक्षरूप शाश्वत स्थानक
प्रत्ये पामे

॥ इति त्रण मनोरथ सपूर्णम् ॥

प्रतिक्रमणनी सज्जाय.

करो पम्किसणुं ज्ञावशु, दोय घमी शुज्ज ध्यान
लाल रे ॥ परज्जव जातां जीवने, सबल साचु जाण
लाल रे ॥ कर० १ ॥ श्री मुनिवर समुचरे, श्रेणीक
राय प्रतिबोध लालरे ॥ लाख खांमी सोनातणी, दिये
दिन प्रतिदान लालरे ॥ कर० २ ॥ लाख वरस लयें
ते वळी, एम दीए ड्रव्य अपार लालरे ॥ एक सामा
यिकनी तोले, नावे तेह लगार लालरे ॥ कर० ३ ॥
सामायिक चउवीसंथो, जलु वंदन होय बार लालरे
॥ वृत्त सज्जाळोरे आपणां, ते ज्जव कर्मे निवार लाल
रे ॥ कर० ४ ॥ कर काउसग शुज्ज ध्यानथी, पचस्का-
ण सुधुं विचार लालरे ॥ दो संध्याये ते वळी, टाळो
टाळो अतिचार लालरे ॥ कर० ५ ॥ सामायिक प्रसा-

(१५३)

दयी, लहीए अमर विमान लाखरे ॥ धरमसिंह मुनी
वर कहे, मुक्तितणु एह निधान लाखरे ॥ कर० ॥६॥

सामायिक प्रतिक्रमण सूत्रार्थ समाप्तम्.

॥ अथ जीवराशिनी सज्जाय. ॥

हवे राणी पद्मावती, जीवराशि खमावे ॥ जा-
णपणु जग ते जडु, एणी वेळाये आवे ॥ ते मुज मि-
छामिडुकरु ॥ १ ॥ अरिहतनी साख ॥ जे में जीव
विराधिया, चोराशी लाख ॥ ते मुज० ॥ २ ॥ सात
लाख पृथ्वीतणा, साते अपकाय ॥ सातलाख तेजका-
यना, साते वळी वाय ते मुज० ॥ ३ ॥ दशलाख प्र-
येक वनस्पति, चउदह साधार ॥ वी ति चोरेद्रिय
वीवना, वे वे लाख विचार ॥ ते मुज० ॥ ४ ॥ देवता
तेर्येच नारकी, चार चार प्रकाशी ॥ चउदह लाख
मुज्यना, ए लाख चोराशी ॥ ते मुज० ॥ ५ ॥ इण
वे परजवे सेवियां, जे पाप अढार ॥ त्रिविधे त्रिविधे

(१५३)

करी परिहरुं, दुर्गतिनां दातार ॥ ते मुज० ॥ ६ ॥ हिं-
सा कीधी जीवनी, बोल्या मृषावाद ॥ दोष अदत्ता-
दानना, मेथुन उनमाद ॥ ते मुज० ॥ ७ ॥ परियह
मेढ्यो कारमो, कीधो क्रोध विशेष ॥ मान माया
खोज में कियां, बलि रागने छेप ॥ ते मुज० ॥ ८ ॥
कळह करी जीव दूहण्या, दीधां कूमां कलंक ॥ निदा
कीधी पारकी, रति अरति निसंक ॥ ते मुज० ॥ ९ ॥
चामी कीधी पारकी, कीधो थापणमोसो ॥ कुगुरु
देव कुधर्मनो, जलो आयो जरोंसो ॥ ते मुज० ॥ १० ॥
खाटकीने जेवे में किया, जीवना वध घात ॥ चमी
मार जेवे चरकलां, मारथां दिनरात ॥ ते मुज० ॥
११ ॥ काजी सुह्यांने जेवे, पढी मत्र कठोर ॥ जीव
अनेक जन्ने किया, कीधां पाप अघोर ॥ ते मुज० ॥
१२ ॥ माठीने जेवे माठलां, जाढ्यां जळवास ॥ धी-
वर जील कोळी जेवे, मृग पारुथा पास ॥ ते मुज०
॥ १३ ॥ कोटवालने जेवे मे किया, आकरा कर दम ॥
बंभीवान मराबिया, कोरना ठकी दंर ॥ ते मुज०
॥ १४ ॥ परमाधामीने जेवे, दीधां नारकी दुःख ॥

दयी, लहरी, अमर विमान लाखरे ॥ धरमसिंह मुनी
वर कहे, मुक्तितण एह निधान लाखरे ॥ कर० ॥६॥

ॐ
सामायिक प्रतिक्रमण सूत्रार्थ समाप्तम्.
ॐ

॥ अथ जीवराशिनी सङ्कायः ॥

हवे राणी पद्मावती, जीवराशि खमावे ॥ जा-
णपणु जग ते जहुं, एणी वेळाये आवे ॥ ते मुज मि-
छामिडुकमं ॥ १ ॥ अरिहतनी साख ॥ जे में जीव
विराधिया, चोराशी लाख ॥ ते मुज० ॥ ७ ॥ सात
लाख पृथ्वीतणा, साते अपकाय ॥ सातलाख तेजका-
यना, साते वळी वाय ते मुज० ॥ ३ ॥ दणलाख प्र-
त्येक वनस्पति, चणदह साधार ॥ वी ति चौरेंद्रिय
जीवना, वे वे लाख विचार ॥ ते मुज० ॥ ४ ॥ देवता
तिर्यंच नारकी, चार चार प्रकारी ॥ चणदह लाख
मनुष्यना, ए लाख चोराशी ॥ ते मुज० ॥ ५ ॥ इण
जवे परजवे सेवियां, जे पाप अढार ॥ त्रिविधे त्रिविधे

करी परिहरुं, दुर्गतिनां दातार ॥ ते मुज० ॥ ६ ॥ हिं-
 सा कीधी जीवनी, बोढ्या मृपावाद ॥ दोष अदत्ता-
 दानना, मैथुन उनमाद ॥ ते मुज० ॥ ७ ॥ परिग्रह
 मेढ्यो कारमो, कीधो क्रोध विशेष ॥ मान माया
 खोज में कियां, बलि रागने छेप ॥ ते मुज० ॥ ८ ॥
 कलह करी जीव दूहव्या, दीधां कूमां कलंक ॥ निदा
 कीधी पारकी, रति अरति निसंक ॥ ते मुज० ॥ ९ ॥
 चामी कीधी पारकी, कीधो थापणमोसो ॥ कुगुरु
 देव कुधर्मनो, जलो आण्यो जरोसो ॥ ते मुज० ॥ १० ॥
 खाटकीने जवे में किया, जीवना वध घात ॥ चमी
 मार जवे चरकलां, मारया दिनरात ॥ ते मुज० ॥
 ११ ॥ काजी मुह्तांने जवे, पढी मत्र कठोर ॥ जीव
 अनेक जन्ने किया, कीधां पाप अधोर ॥ ते मुज० ॥
 १२ ॥ माठीने जवे माठलां, जाढ्या जळवास ॥ धी-
 वर जील कोळी जवे, मृग पारुयां पास ॥ ते मुज०
 ॥ १३ ॥ कोटवालने जवे मे किया, आकरा कर दम ॥
 वधीवान मराविया, कोरमा ठमी दम ॥ ते मुज०
 ॥ १४ ॥ परमाधामीने जवे, दीधां नारकी दुःख ॥

दधी, लहीए अमर विमान लालरे ॥ धरमसिंह मुनी
वर कहे, मुक्तितणुं एह निधान लालरे ॥ कर० ॥६॥

सामायिक प्रतिक्रमण सूत्रार्थ समाप्तम्

॥ अथ जीवराशिनी सङ्काय ॥

हवे राणी पदमावती, जीवराशि खमावे ॥ जा-
णपणु जग ते जलुं, एणी वेळाये आवे ॥ ते मुज मि-
ठामिडुकमं ॥ १ ॥ अरिहतनी साख ॥ जे में जीव
विराधिया, चोराशी लाख ॥ ते मुज० ॥ २ ॥ सात
लाख पृथ्वीतणा, साते अपकाय ॥ सातलाख तेउका-
यना, साते वळी वाय ते मुज० ॥ ३ ॥ दशलाख प्र-
त्येक वनस्पति, चउदह साधार ॥ वी ति चोरेद्रिय
जीवना, वे वे लाख विचार ॥ ते मुज० ॥ ४ ॥ देवता
तिर्यच नारकी, चार चार प्रकागी ॥ चउदह लाख
मनुष्यना, ए लाख चोराशी ॥ ते मुज० ॥ ५ ॥ इण
जवे परजवे सेवियां, जे पाप अढार ॥ त्रिविधे त्रिविधे

(१५५)

विद्धी जेवे उंदर गढ्या, गिरोळी हत्यारी ॥ मूढगमा
 रतणे जेवे, मे जू लीख सारी ॥ ते मुज० ॥ १४ ॥
 ज्ञारुजुजातणे जेवे, एकेंद्रिय जीव ॥ जार चणा घड
 शेकिया, पामता रीव ॥ ते मुज० ॥ १५ ॥ खांरुण
 पोसण गारना, आरंज अनेक ॥ राधण इधण अग्निनां,
 कीधां पाप उद्वेग ॥ ते मुज० ॥ १६ ॥ विकथा चार
 कीधी वली, सेव्या पच प्रमाद ॥ इष्ट वियोग परा-
 विया, रुदन विपवाद ॥ ते मुज० ॥ १७ ॥ साधु अने
 आवकतणा, व्रत लेहने ज्ञाग्या ॥ मूल अने उचरतणां,
 मुज दूषण लाग्या ॥ ते मुज० ॥ १८ ॥ साप बीठी
 सिंह चीतरा, शकराने समळी ॥ हिसक जीवतणे
 जेवे, हिसा कीधी सवळी ॥ ते मुज० ॥ १९ ॥ सूवा-
 वरी दूषण घणां, वळीगर्ज गळाव्या ॥ जीवाणी ढो-
 ल्यां घणा, शील व्रत ज्ञाव्या ॥ ते मुज० ॥ २० ॥
 जव अनत जमतां थकां कीधो देह सवध ॥ त्रिविधे
 त्रिविधे करी वोसिरुं, करु जन्म पवित्र ॥ ते मुज० ॥
 २१ ॥ जव अनत जमतां थकां, कीधा परिग्रह सवध
 ॥ त्रिविधे त्रिविधे करी वोसिरुं, तिणशु प्रतिवध ॥

ठेदन जेदन वेदना, तारुन अति तिस्क ॥ ते मुज० ॥
 १५ ॥ कुज्जारने जेवे में किया, नीजाद पचाव्या ॥
 तैली जेवे तल पीलिया, पापे पिरु जराव्या ॥ ते मु-
 ज० ॥ १६ ॥ हाळी जेवे दळ खेमीयां, फोम्यां पृ-
 थ्वीनां पेट ॥ सूरु निदान किधां घणां, दीधां वळद
 चपेट ॥ ते मुज० ॥ १७ ॥ माळी जेवे रोप रोपिया,
 नानाविध वृक्ष ॥ मूळ पत्र फळ फूलना, लाग्या पाप
 अलक्ष ॥ ते मुज० ॥ १८ ॥ अधोवाश्याने जेवे, जरया
 अधिका जार ॥ पोठी जट कीका पन्था, दया नाणी
 लगार ॥ ते मुज० ॥ १९ ॥ ठीपाने जेवे ठेतया, की-
 धा रंगण पास ॥ अग्नि आरज कीधा घणा, धातुवांद
 अज्यास ॥ ते मुज० ॥ २० ॥ शूरपणे रण जूजतां,
 मारया माणस वृद्ध ॥ मदिरा भास मागण जरया,
 खाधा मूळ ने कद ॥ ते मुज० ॥ २१ ॥ खाण रणावी
 धातुनी, पाणी जलेच्यां ॥ आरंज कीधा अति घणा,
 पोते पाप ज सच्यां ॥ ते मुज० ॥ २२ ॥ अगारकर्म
 किया वळी, धरमे दव ज दीधा ॥ सम खाधा वीत-
 रायना, कुना कोस ज कीधा ॥ ते मुज० ॥ २३ ॥

विह्वी जेवे उंदर गढ्या, गिरोळी हत्यारी ॥ मूढगमा
 रतणे जेवे, में जू लीख मारी ॥ ते मुज० ॥ २४ ॥
 ज्ञानभुजातणे जेवे, एकेंद्रिय जीव ॥ जार चणा घड
 शेकिया, पारुंता रीव ॥ ते मुज० ॥ २५ ॥ खारुण
 पोसण गारना, आरज्ज अनेक ॥ रांधण इधण अग्निनां,
 कीधां पाप उद्वेग ॥ ते मुज० ॥ २६ ॥ विकथा चार
 कीधी वली, सेव्या पच प्रमाद ॥ इष्ट वियोग परा-
 विया, रुदन विपवाद ॥ ते मुज० ॥ २७ ॥ साधु अने
 श्रावकतणां, व्रत लेइने जाग्या ॥ मूल अने उचरतणां,
 मुज दूषण लाग्यां ॥ ते मुज० ॥ २८ ॥ साप वीठी
 सिंह चीतरा, शकराने समळी ॥ हिसक जीवतणे
 जेवे, हिसा कीधी सवळी ॥ ते मुज० ॥ २९ ॥ सूवा-
 वनी दूषण घणां, वळी गर्ज गळाव्या ॥ जीवाणी ढो-
 व्यां घणा, शीळ व्रत जजाव्या ॥ ते मुज० ॥ ३० ॥
 जेव अनत जमतां थकां कीधो देह सवध ॥ त्रिविधे
 त्रिविधे करी वोसिरु, करु जन्म पवित्र ॥ ते मुज० ॥
 ३१ ॥ जेव अनत जमता थकां, कीधा परिग्रह सवध
 ॥ त्रिविधे त्रिविधे करी वोसिरु, तिणशु प्रतिवध ॥

ते मुज० ॥ ३२ ॥ जव अनंत जमतां थकां, कीधा
 कुटुंब सवंध ॥ त्रिविधे त्रिविधे करी वोसिरुं, तिणशुं
 प्रतिवध ॥ ते मुज० ॥ ३३ ॥ इणिपरे इहजव परजवे,
 कीधा पाप अखत्र ॥ त्रिविधे त्रिविधे करी वोसिरुं,
 करु जन्म पवित्र ॥ ते मुज० ॥ ३४ ॥ एणि विध ए
 आराधना, जावे करशे जेह ॥ समयसुंदर कहे पाप
 श्री, वळी तुटशे तेह ॥ ते मुज० ॥ ३५ ॥ रागवैरानी
 जे सुणे, एह त्रीजी ढाळ ॥ समयसुंदर कहे पापश्री,
 नूटे ततकाळ ॥ ते मुज० ॥ ३६ ॥ इति ॥

॥ उपदेशक पद. ॥

जक्ति एहवीरे जाइ एहवी, जेम तरस्याने पाणी
 जेहवी-ए टेक एक जुवति जल जरवा जाए, सामि
 वातो तेहवी थाय, माथे वेरुने लिए हाथ तालि, चा-
 लि मारग घुघट वालि, घर वार पोतानु समखु, ए-
 हवु गुरु चरणे चित्त धरवु जक्ति १

एक माठलि जलमां रहे ठे, निशदिन रगमे रहे
 ठे, काइ पापीण पाणी बाहिर कानी, तरफनीने अंग

पठामी, जीव जाय तो जलने समरबुं-एहबुं जक्ति २

एक जमरो कमलमे रहे ठे, निशदिन सुगंध लहे ठे, साज पकि ने कमल बीभाणुं, थयो व्याकुल कांशए न जवाणु, एने कमलनी प्रीते मरबु-एहबुं जक्ति ३

एक गुणका ते गायन करे ठे, सोल सणगार अगे धरेठे, लेइ दरपणने मुख नीहाले, नख खिख शरिर संजाळे, एहने पारकु मनज हरबु-एहबु जक्ति. ४

एक मुढमति नर जेह, तेने परनारिसु खेह हैने अधम अधम पग जरतो, परनारिनी केने फरतो, एहने सुलिना सुखेज ठरबु-एहबुं जक्ति ५

एक चोर ते चोरि करे ठे, पर मदिर फेरा फरेठे; मलि माऊम रात अधारि, मरतो नथी धिरज धारि; एहने पारकु धन पोतानु करबुं-एहबु. जक्ति. ६

एक राजमा आनद माने, एहना मदिर जोइ वखाणे, राजपाट अने हथीयार, हाथी घोडा ने रथ अपार, एहने राज जोइने ठरबु-एहबु जक्ति ७

एक नादनो मोह्यो मृग आवे, एहने यत्रनो शब्द सोहावे, वेगो आसन वालि मोले, महा मग्न अइने

તે મુજબ ॥ ૩૨ ॥ જવ અનત જમતાં થકાં, કીધા
 કુટુંબ સંબંધ ॥ ત્રિવિધે ત્રિવિધે કરી વોસિરું, તિણશું
 પ્રતિવધ ॥ તે મુજબ ॥ ૩૩ ॥ ઇણિપરે ફહજવ પરજવે,
 કીધા પાપ અલત્ર ॥ ત્રિવિધે ત્રિવિધે કરી વોસિરું,
 કરું જન્મ પવિત્ર ॥ તે મુજબ ॥ ૩૪ ॥ એણિ વિધ એ
 આરાધના, જાવે કરશે જેહ ॥ સમયસુંદર કહે પાપ
 થી, વઢી તુટશે તેહ ॥ તે મુજબ ॥ ૩૫ ॥ રાગવૈરાની
 જે સુણે, એહ ત્રીજી ઢાઢ ॥ સમયસુંદર કહે પાપથી,
 તૂટે તતકાઢ ॥ તે મુજબ ॥ ૩૬ ॥ ઇતિ ॥

॥ ઉપદેશક પદ ॥

જક્તિ એહવીરે જાણ એહવી, જેમ તરસ્યાને પાણી
 જેહવી-એ ટેક એક જુવતિ જલ જરવા જાણ, સામિ
 વાતો તેહવી આય, માયે વેચુને લિણ હાથ તાલિ, ચા-
 લિ મારગ ઘુઘટ વાલિ, ઘર વાર પોતાનું સમરબુ, એ-
 હવું ગુરુ ચરણે ચિત્ત વરબુ જક્તિ ?

એક માઠલિ જલમાં રહે ઠે, નિશદિન રંગમે રહે
 ઠે, કાંઈ પાપીણ પાણી વાહિર કાઠી, તરફનીને અગ

(१५६)

॥ अथ श्री महावीर स्वामीनु चोढाढोयुं ॥

॥ ढाल १ ली ॥

सिद्धारथ कूले तु उपन्यो, त्रिगलादे थारीमात
जी ॥ वरशी दान देइ करी, सयम लीधो जगनाथ
जी ॥ थे मन मोह्यु महावीर जी ॥ १ ॥ कचन वर
णी ठे काय जी ॥ नयण न ध्रापे जी निरखता, दि-
ठमे आवे ठे दायजी ॥ थे मन० ॥ २ ॥ आप एक
ला सयम आदर्यो, उपन्यो चोथो रे ज्ञान जी ॥ उ-
त्कृष्ट तप थे आदर्यो, धरता निर्मळ ध्यान जी ॥ थे-
मन० ॥ ३ ॥ उग्र विहार थे आदरथो, केइ वास रह्या
वनवास जी ॥ केइ वासा वस्तिये रह्या, न रह्या एक ठामे
चोमास जी ॥ थे मन० ॥ ४ ॥ प्रभु पहेला चोमासो थे
कियो, अछी गाम मोऊर जी ॥ दूजो वाणीज गाम
में, पच चपा सुखकार जी ॥ थे मन० ॥ ५ ॥ पच
शृष्ट चंपा करयां, विशाला नगरीमां तीन जी ॥ राज
गृहीमां चौदे करया, नालदे पामे लयलीन जी ॥ थे
मन० ॥ ६ ॥ ठ चोमासां मिथिला करयां, जझिका
नगरीमा दोय जी ॥ एक करयोरे आलजिया, सा-

चोखे, एहने नादनी वातेज मखुं-एहवुं जक्ति. ८
 वपेइयाने वरसाद बहालो, एहवो मोक्षनो मारग
 जालो, काया माया कारमी जाणो, रुखो ज्ञान हृदयमां
 आणो, कहे कदयाण एणीपरे तरबु-एहवु जक्ति. ९

॥ उपदेसी पद बीजुं ॥

जैया कैसे गमाते उत्तम जन्म ४ जैया कैसे ४
 गमाने उत्तम जन्म ॥ ए टेरु ॥ पीर जवानी पथर
 पुजे, करते हिंसा अजाण ॥ सत ज्ञानी धर्मि देखी,
 करते मान गुमान ॥ जैया. १ ॥ कदमुल अजहको
 खानो, पीनो अणगल पानी ॥ खोटा धधा गुणिकि
 निंद्या, परनारि चित ठानी ॥ जैया. २ ॥ नाटक जु-
 वाव कुसगे, जमके रात गमाते ॥ दया सामाझक
 मुनी दर्शन, गुण करतां दीज सरमाते ॥ जैया ३ ॥
 गाली गावे खावे, खेले फाग गधे अस्वार ॥ मात तात
 गुरु जात लजावे, लाजे नही गमार ॥ जैया ४ ॥
 धन जोवन मदमे ठकके, साधु सीख नही माने ॥
 फीर रूखे ओर गिर फुटे, पहेलां समजाउ थाने.
 ॥ जैया ॥ ५ ॥

(१५९)

॥ अथ श्री महावीर स्वामीनु चोढालोयुं ॥

॥ ढाल १ ली ॥

सिद्धारथ कूले तु उपन्यो, त्रिशलादे थारीमात
जी ॥ वरशी दान देइ करी, सयम लीधो जगनाथ
जी ॥ थे मन मोह्यु महावीर जी ॥ १ ॥ कचन वर
णी ठे काय जो ॥ नयण न ध्रापे जी निरखतां, दि-
ठमे आवे ठे दायजी ॥ थे मन० ॥ २ ॥ आप एक
ला संयम आदर्यो, उपन्यो चोथो रे ज्ञान जी ॥ उ-
त्कृष्ट तप थे आदर्यो, धरता निर्मल ध्यान जी ॥ थे-
मन० ॥ ३ ॥ उग्र विहार थे आदरयो, केइ वास रह्या
चनवास जी ॥ केइ वासा वस्तिये रह्या, न रह्या एक ठामे
चोमास जी ॥ थे मन० ॥ ४ ॥ प्रभु पहेला चोमासो थे
कियो, अछी गाम मोजार जी ॥ दूजो वाणीज गाम
में, पच चपा सुखकार जी ॥ थे मन० ॥ ५ ॥ पच
पृष्ठ चंपा करयां, विशाला नगरीमां तीन जी ॥ राज
गृहीमां चौदे करया, नालदे पामे लयलीन जी ॥ थे
मन० ॥ ६ ॥ ठ चोमासां मिथिला करयां, जडिका
नगरीमां दोय जी ॥ एक करयोरे आलजिया, सा-

वर्थि नगरी एक होय जी ॥ थें मन० ॥ ७ ॥ एक अ-
 नारज देशमां, अपापा नगरी एक जाण जी ॥ एक
 करयो पावापुरि में, जठे पहोल्या निरवाण जी ॥ थें
 मन० ॥ ८ ॥ हस्तिपाल राजा इस वीनवे, हु तुम च-
 रणारा दास जी, एक शाळा म्हारे सूजती, आप क-
 रोने चोमास जी ॥ थें मन० ॥ ९ ॥ चाळीश चोमां-
 सां शहेरमां, दास्यां देश नगरना नाम जी ॥ एक
 अनारज देशमां, एक चोमासुं वळि गाम जी ॥ थें
 मन० ॥ १० ॥ प्रभु गाम नगर पुर विचरिया, जव्य
 जीवारां जाग्य जी ॥ मारग वतायो मोक्षनो, कियो
 उपगार अथाग जी ॥ थें मन० ॥ ११ ॥ सामावार
 वरसा लगे, उपर आधो रे मास जी ॥ उद मस्थ
 रह्या प्रभु एटलु, पठी कयों केवलज्ञान प्रकाश जी
 ॥ थें मन० ॥ १२ ॥ वर्ष वयाळीश पाळियो, सयम
 साहस धीर जी ॥ त्रीश वरस घरमां रह्या, मोक्ष
 दायक महावीर जी ॥ थें मन० ॥ १३ ॥ पावापुरिमां
 पधारिया, नर नारी हूआ उल्लास जी ॥ ऋषि राय
 चंदजी इस वीनवे, हु आयो प्रभुजीने पास जी ॥

ये मन० ॥ १४ ॥ संवत अठार गुणचालीशमे, नां
गोर शहेर चोमास जी ॥ पूज्य जेमलजी प्रसादथी,
एह करी अरदास जी ॥ थे मन० ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ ढाल २ जी ॥

शासन नायक वीर जिणद, तीरथनाथ जाणे
पूनम चंद ॥ चरणे लागे ज्यारे चोशठ इन्द्र, सेवा
करे ज्यारी सुर नर वृंद ॥ थे अवको चोमासो स्वा
मिजी अछेकरो जी, थे पावापुरिसे पग आधो मति
धरो जी, अछे करो, अछे करो, अछे करो, जी, थे
चरम चोमासो स्वामिजी अछे करो जी ॥ १ ॥ ए
आंकणी ॥ हस्तिपाल राजा विनवे कर जोरु, पूरो
प्रभुजी म्हारा मनरा हो कोरु ॥ शीश नमाय
उजो जोमी हाथ, कहणा सागर वाजो कृपाजी नाथ
॥ थे अवको ॥ २ ॥ रायनी राणी विनवे राजलोक,
पुण्य जोग मढ्यो सेवानो संजोग ॥ मन वाञ्छित
सहु मळियां जी काज, थे मया करी मुज सामु जु-
ल-जिनराज ॥ थे अवको ॥ ३ ॥ आवक आविका
कइ नर नार, मळी मळी विनैती करे वारवार ॥
पावापुरिमां पधारथा वीतराग, प्रगटी पुण्याइ म्हारां

म्होटां जी जाग्य ॥ थें अवको० ॥ ४ ॥ वळि हस्ति
 पाळ राजा विनवे जूपाळ, प्रजु जी थें ठो दीन द
 याळ ॥ सूज्जती एक म्हारे म्होटी ठे शाळ, हवे लागी
 गयो ठे वरपा जी काळ ॥ थें अवको० ॥ ५ ॥ मानी
 विनती प्रजु रक्षा चोमास, पावा पुरिमां हुठ ह्रख
 उह्वास ॥ गौतम गणधर गुरांजीने पास, निशि दिन
 ज्ञानतो करेजी अज्यास ॥ थें अवको० ॥ ६ ॥ साधु
 थनेक रक्षा करजोम, सेवा करे सदा होमाजी होम ॥
 चौद हजार चेला रत्नारी माळ, दीक्षा लीधी ठोमी
 माया जजाळ ॥ थें अवको० ॥ ७ ॥ वरि चेली चंद
 नवाळा जी जाण, हुइ कुमारि महा सति चतुर सु
 जाण ॥ मोतीनी माळा ठत्रीश हजार ॥ सघळी में
 वकी साधवी ए शिरदार ॥ थें अवको० ॥ ८ ॥ चारुइ
 सघ सेवा नित्य करे, प्रजुजीने देखी देखी अखोयां
 ठरे ॥ नव महिने नव खट्टी जी राय, ज्यारा दर्शन
 करी चित्तमें चाय ॥ थें अवको० ॥ ९ ॥ सघ सघळा
 रे हुइ मन रग रळी, पुण्य योगे प्रजुजीनी सेवा मळी
 ॥ ऋषि रायचंदजी विनवे जोमी हाथ, थे करुणासा
 गर वाजो कृपाजीनाथ ॥ थें अवको० ॥ १० ॥ शहर

नागोरमे कियोजी चोमास, प्रजुजी देज्यो मुने मुग-
तिना वास ॥ हुं सेवक तुमे साहिव स्वाम, म्हारे अ-
वर देवाशुं नहि कोइ काम ॥ थें अबकां० ॥११॥ इति-

॥ ढाल ३ जी ॥

शासन नायक श्री महावीर, तीरथनाथ त्रिभुवन
धणी ॥ पावापुरिमे कियो चरम चोमास, हुइ मोक्षदा-
य करी महिमा घणी ॥ गौतमने मेल दियो महावीर,
देवशर्माने प्रतिबोधवा ॥ १ ॥ उत्तराध्ययननां अध्ययन
ठत्रिश, कारतक वदि अमावास्ये कक्षां ॥ एकशोने
वलि दश अध्ययन, सूत्र विपाक तणां लह्या ॥ गौत-
मने० ॥ २ ॥ पोसा क्रिधा श्री वीरजीनी पास, देश
अढारना राजीया ॥ नव मल्लिने नव लछीजी राय,
वीरना जगता वाजीया ॥ गौतमने० ॥ ३ ॥ प्रजु शा-
सनना शिरदार, सर्व संघने सतोपने ॥ सोळ पद्दोर
खगे देशना दीध, पठी वीर वीराज्या मोक्षमे ॥ गौ-
तमने० ॥ ४ ॥ तिन वरसने साक्षा आठ मास, चोथा
आराना वाकी रह्या ॥ दिन दोय तणा सथार, ॐ मौन
रही मुगते गया ॥ गौतमने० ॥ ५ ॥ इंद्र आठ्याजी
। चत्त उदास, देव देवीना साथमे ॥ जाणे नग

रही ज्योत, श्यामावड्यानी रात में ॥ गौतमने० ॥ ६ ॥
 मुगति पद्मोत्था एका एक, सातमे हुवा ज्यारे केवळी
 ॥ चौदसें साधवियां हुइ सिद्ध, हुं सद्गुने बांधु मनरळी
 ॥ गौतमने० ॥ ७ ॥ रत्ना वीश वरस घर मांय, वर्ष
 चयाळि संयम पाळियो ॥ प्रभु जग तारण जगदीश,
 दया मार्ग अजुनासियो ॥ गौतमने० ॥ ८ ॥ होजी
 देव देवीने वळि इंद्र, निर्वाण तणो महोत्तव कीयो ॥
 अरिहतनो पणियो बीजोग, सुर नरनो जरियो हीयो
 ॥ गौतमने० ॥ ९ ॥ साधु साधवी करता शोक, आ
 वक आविका पण घणो ॥ जरत क्षेत्रमां पणियो बी
 जांग, आज पठी अरहत तणो ॥ गौतमने० ॥ १० ॥
 पठी वेठा सुधर्म स्वामी पाट, चारुइ सध चरण सेव
 ता ॥ ज्यारी पाळता अखरित आण, सेवा करे देवी
 ने देवता ॥ गौतमने० ॥ ११ ॥ मुगते पद्मोत्था श्री म
 हावीर, प्रभु सुख पाम्या ठे शाश्वता ॥ ऋषि रायचं
 दजी कहे एम, महारे अरिहत वचननी आसता ॥
 गौतमने० ॥ १२ ॥ इति

॥ ढाल ४ थी ॥

श्री महावीर पद्मोत्था निर्वाण, गौतमस्वामीये

वातज जाणी ॥ गुरांजी थें मने गोमेन राख्यो ॥१॥
 ए आंकणी ॥ सुगति जावणरो नाम न दाख्यो ॥
 गुरांजी० ॥ २ ॥ हुं सघळा पहेलो हुवो थारो चेलो,
 इण अवसर आघो किम मेढ्यो ॥ गुराजी० ॥ ३ ॥
 प्रभु तुम चरणे महारो चित्त लाग्यो, पण थें मुने
 मेल दियो आगो ॥ गुरांजी० ॥ ४ ॥ मुने दरशन
 आपरो लागतो प्यारो, आप पद्दोत्या निर्वाण मुने
 मेल न्यारो ॥ गुरांजी० ॥ ५ ॥ आपे तो मुजशुं
 अंतर राख्यो, पिण मे महारो मनरो दरद न दाख्यो
 ॥ गुरांजी० ॥ ६ ॥ हुं आमो मांमोने न जालत पद्दो,
 पण साहिव काम कियो तुमे जद्दो ॥ गुराजी०
 ॥ ७ ॥ हु तुमने अतराय न देतो, सुगतिमे जग्या
 वहेंची न लेतो ॥ गुराजी० ॥ ८ ॥ हु सकमाइ न क-
 रतो कांइ, आप साथे हु मोक्षमे आइ ॥ गुरांजी०
 ॥ ९ ॥ अव हु पुठा करशुं किण आगे, प्रभु, महारो
 मन एक थाराशुज लागे ॥ गुरांजी० ॥ १० ॥ महारो
 सांसो कहो कुण टाळे, आप विना पाखंमीना मद
 कुण गाळे ॥ गुरांजी० ॥ ११ ॥ हुतो चौद पूरवने चौ
 नाणी, पिण मोहनी कमें लपेटयो आणी

(१६६)

॥ १२ ॥ इसा गौतमस्वामीये किया बिलपात, ए मो
हनी कर्मनी अचरिज वात ॥ गूरांजी ॥ १३ ॥ हवे
मोहनी कर्म दूरे टाळी, गौतमस्वामीये सुरति संजा
ळी ॥ वीतराग राग छेपशु जीत्या ॥ १४ ॥ ए आक
णी ॥ महारा चित्तमां आइ गइ चिंता ॥ वीतराग०
॥ १५ ॥ तिणि वेळा निर्मळ ध्यानज ध्यायो, केवळ
ज्ञान गौतमस्वामिये पायो ॥ वीतराग० ॥ १६ ॥ वार
वरस रह्या केवळज्ञानी, वान जाशु कांइ नवि रहो
ठानी ॥ वीतराग० ॥ १७ ॥ गौतमे पण क्रियो मुग
तमे वासो, ससारनो सर्व देखे तमासो ॥ वीतराग०
॥ १८ ॥ जेणि राते मुगति गया वर्द्धमान, इंद्रभूतिने
उपन्युं केवळज्ञान ॥ वीतराग० ॥ १९ ॥ तिण दिन
थी ए वाजी दीवाली, महोरो दि गंगळ माळी
॥ वीतराग० ॥ २० ॥ रात दीवाली पाळो, वली रात्रिजो
॥ २१ ॥ ऋषि राय
रूप दीवाली थे ले
॥ कलश. ॥
दया मारग

इति गामी, कियो चित्त वद्धन चोढालियो ॥ २३ ॥
 सवत अठारे गुणचालीशे, नागोर चोमासो निर्मल
 मने ॥ पूज्य जेमलजी प्रसादे, सपूर्ण कियो दीवाली
 दिने ॥ २४ ॥ इति समाप्तम् ॥

अथ श्री गौतम स्वामीनो ठंड.

वीरजिणेशरं केरो शिष्य, गौतम नाम जपो नि
 शदिश ॥ जो कीजे गौतमनु ध्यान, तो घर विलशे
 नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामे गिरिवर चमे, मनवं
 ठित हेला संपने ॥ गौतम नामे नावे रोग, गौतम
 नामे सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरु आ वक्रा, तसे
 नामे नावे दुफरा ॥ चूत प्रेत नवि भरे प्राण, ते गौत
 मना करुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामे निर्मल काय,
 गौतम नामे वाधे आय ॥ गौतम जिन सासन शण
 गार, गौतम नामे जय जयकार ॥ ४ ॥ शाळि दाळ
 सुरहा घूत गोळ, मनवठित कापरु तबोल ॥ घर सु
 घरणी निर्मल चित्त, गौतम नामे पुत्र विनीत ॥ ५ ॥
 गौतम उग्यो अविचल जाण, गौतम नाम जपो जग
 जाण ॥ म्होटां सदिर मेरु समान, गौतम नामे सफल
 विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोमानी जोरु, वारु पडोचे

॥ १२ ॥ इसा गौतमस्वामीये किया विखेपात, ए मो
 हनी कर्मनी अचरिज वात ॥ गुरांजी ॥ १३ ॥ ह्वे
 सोहनी कर्म दूरे टाळी, गौतमस्वामीये सुरति सजा
 ली ॥ वीतराग राग छेपथुं जीत्या ॥ १४ ॥ ए आंक
 णी ॥ महारा चित्तमां आइ गइ चिंता ॥ वीतराग०
 ॥ १५ ॥ तिणि वेळा निर्मळ ध्यानज ध्यायो, केवळ
 ज्ञान गौतमस्वामिये पायो ॥ वीतराग० ॥ १६ ॥ वार
 वरस रखा केवळज्ञानी, वात जाशु काइ नवि रही
 ठानी ॥ वीतराग० ॥ १७ ॥ गौतमे पण क्रियो मुग
 तमे वासो, ससारनो सर्व देखे तमासो ॥ वीतराग०
 ॥ १८ ॥ जेणि राते मुगति गया वर्द्धमान, इंद्रभूतिने
 उपन्थुं केवळज्ञान ॥ वीतराग० ॥ १९ ॥ तिण दिन
 थी ए वाजी दीवाली, महोंदो दिन ए मगळ माळी
 ॥ वीतराग० ॥ २० ॥ रात दीवालीनो शियल थे
 पाळो, वली रात्रिजो जन करवो टालो ॥ वीतराग
 ॥ २१ ॥ ऋषि रायचंद कहे सुणो हो सुज्ञानी, दया
 रूप दीवाली थे लेज्यो मानी ॥ वीतराग० ॥ २२ ॥
 ॥ कलश ॥ श्री शासन नायक, मुगति दायक,
 दया मारग अजुआखियो ॥ श्री गौतमस्वामी, मुग

ઈતિ ગામી, કિયો ચિત્ત વહ્નજી ચોઢાલિયો ॥ ૨૩ ॥
 સંવત અઠારે ગુણવાલીશે, નાગોર ચોમાસો નિર્મલ
 મને ॥ પૂજ્ય જેમલજી પ્રસાદે, સપૂર્ણ કિયો દીવાલી
 દિને ॥ ૨૪ ॥ ઇતિ સમાપ્તમ્ ॥

અથ શ્રી ગૌતમ સ્વામીનો ઠઠ.

વીરજિણેશર કેરો શિષ્ય, ગૌતમ નામ જપો નિ
 શદિશ ॥ જો કીજે ગૌતમનું ધ્યાન, તો ઘર વિલશે
 નવે નિધાન ॥ ૧ ॥ ગૌતમ નામે ગિરિવર ચમે, મનવં
 ઠિત દેલા સપમે ॥ ગૌતમ નામે નાવે રોગ, ગૌતમ
 નામે સર્વ સંજોગ ॥ ૨ ॥ જે વૈરી વિરુ આ વકના, તસ
 નામે નાવે હુફના ॥ મૃત પ્રેત નવિ મરે પ્રાણ, તે ગૌત
 મના કરું વખાણ ॥ ૩ ॥ ગૌતમ નામે નિર્મલ કાય,
 ગૌતમ નામે વાધે આય ॥ ગૌતમ જિન સાસન શણ
 ગાર, ગૌતમ નામે જય જયકાર ॥ ૪ ॥ શાલિ દાલ
 સુરહા ઘૃત ગોંઠ, મનવઠિત કાપરુ તંબોલ ॥ ઘર સુ
 ઘરણી નિર્મલ ચિત્ત, ગૌતમ નામે પુત્ર વિનીત ॥ ૫ ॥
 ગૌતમ ડગ્યો અવિચલ જાણ, ગૌતમ નામ જપો જગ
 જાણ ॥ મ્હોટાં મદિર મેરુ સમાન, ગૌતમ નામે
 વિદ્યાણ ॥ ૬ ॥ પંગલ ઘોઠાની જોરુ,

वठित कोरु ॥ महियल माने म्होटा राय, जो तुवे
 गौतमना पाय ॥७॥ गौतम प्रणम्या पातक टले, ज-
 त्तम नरनी संगत मले ॥ गौतम नामे निर्मल ज्ञान,
 गौतम नामे वाधे वान ॥८॥ पुण्यवंत अवधारो सहु,
 गुरु गौतमना गुण ठे वहु ॥ कहे लावण्य समय क-
 रजोरु, गौतम तूवे संपत्ति कोरु ॥ ए ॥ इति ॥

अथ श्री महावीर स्वामीनो वंद

श्री सिद्धारथ कुळ गणगार, त्रिशला देवी सुत
 जग आधार ॥ गोप्ते सुदर सोवन वान, शरण तमारुं
 श्री वर्द्धमान ॥ १ ॥ तुम नामे लहिये सपदा, तुम
 नामे मन वठित मुदा ॥ तुम नामे लहिये सनमान
 शरण ॥२॥ दुर्जन दुष्ट वैरी विकराल, तुम नामे नासे
 ततकाल ॥ तुम नामे दिन दिन कढ्याण, शरण ॥३॥
 तुम नामे नावे आपदा, जूत प्रेत व्यतर नहि कदा ॥
 रोग शोग चिता नवि जाण, शरण ॥४॥ ग्रहादिक
 पीना नवि करे, नाम तमारु जे अनुसरें ॥ धर्मसिंह
 मुनी जाव प्रधान, शरण ॥ ५ ॥ इति ॥



